विक्रम संवत् 2083 ▪ आषाढ़/ श्रावण मास (05) ▪ 01 जुलाई 2026 ▪ मूल्य: 23 रु.

# चरैवेति

आर. एन. आई. पंजीयन क्र.017261/69,डाक पंजीयन क्र. म.प्र./भोपाल/297/2024-26,पृष्ठ संख्या-44, प्रकाशन दिनांक प्रत्येक माह की 10 तारीख, पोस्टिंग प्रत्येक माह की 15 एवं 20 तारीख

## 140 करोड़ भारतीयों का भरोसा हमारी सबसे बड़ी ताकत और जिम्मेदारी

▪ प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने G7 शिखर सम्मेलन-2026 के दौरान अमेरिका के राष्ट्रपति श्री डोनाल्ड ट्रंप के साथ द्विपक्षीय बैठक की।

▪ भाजपा अध्यक्ष श्री नितिन नवीन जी ने डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी जी के बलिदान दिवस पर उन्हें पुष्पांजलि अर्पित की।

▪ प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने प्रधानमंत्री विकसित भारत रोजगार योजना (पीएम-वीवीआरवाई) के लाभार्थियों के साथ बातचीत की।

▪ प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने विश्व पर्यावरण दिवस के मौके पर 'एक पेड़ माँ के नाम' पहल के तहत पौधा लगाया।

▪ प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी को स्लोवाकिया के सर्वोच्च नागरिक सम्मान, ''द ऑर्डर ऑफ द व्हाइट डबल क्रॉस (फर्स्ट क्लास)'' से सम्मानित किया गया।

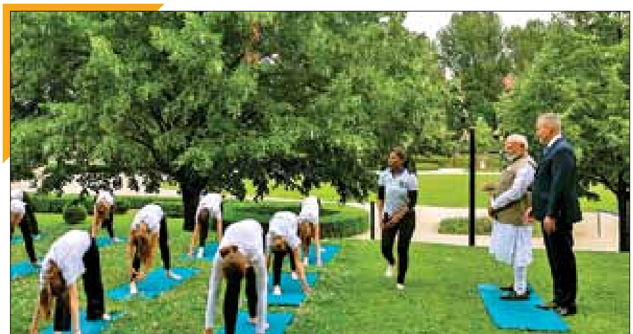

▪ प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने स्लोवाकिया के राष्ट्रपति श्री पीटर पेलेग्रिनी और स्लोवाक बच्चों द्वारा किए गए योग सत्र को देखा।

▪ प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के सबसे लंबे समय तक लगातार निर्वाचित प्रधानमंत्री रहने के अवसर पर भाजपा अध्यक्ष श्री नितिन नवीन जी ने मंदिर में प्रार्थना की।

▪ भाजपा अध्यक्ष श्री नितिन नवीन जी ने NDA सरकार के 12 वर्षों पर आधारित एक विशेष प्रदर्शनी का उद्घाटन किया।

# अनुक्रमणिका


» **संपादकीय ▪ संजय गोविन्द खोचे** 04

▪ मोदी जी ने भरोसा जीत लिया

» **कवर स्टोरी ▪** 05

▪ 140 करोड़ भारतीयों का भरोसा हमारी सबसे बड़ी ताकत और जिम्मेदारी - नरेंद्र मोदी


09

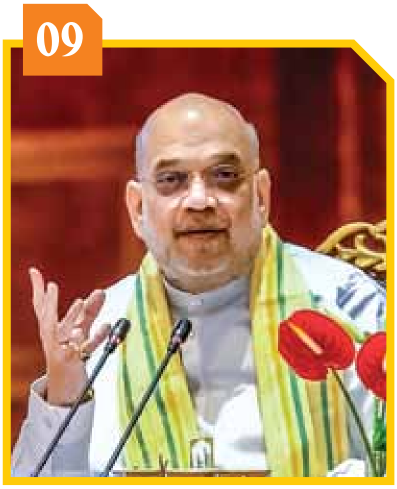

28

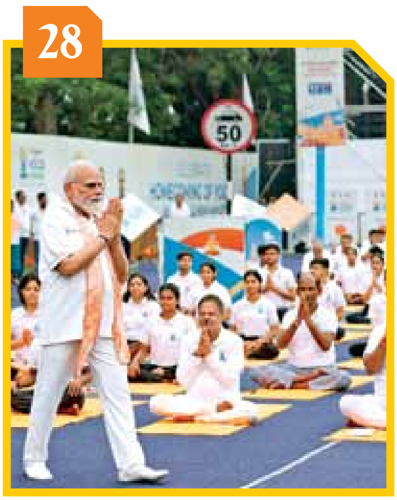



▪ **कवर स्टोरी** 09

» मोदी जी के नेतृत्व में स्वर्णिम कालखंड - अमित शाह

» भारत विश्व की चौथी और सबसे तेज बढ़ती अर्थव्यवस्था - जगत प्रकाश नड्डा

▪ **आलेख** 14

» मोदी जी ने लिखा नये भारत के निर्माण का स्वर्णिम अध्याय - डॉ. मोहन यादव

▪ **कविता** 15

» मन का संतोष

▪ **प्रधान सेवक के 12 वर्ष** 16

» प्रधानमंत्री जी ने गरीबों की जिंदगी बदली - हेमंत खण्डेलवाल

» देश का लक्ष्य-विकसित भारत - डॉ. महेन्द्र सिंह

▪ **आलेख** 18

» मोदी जी विश्व के सर्वमान्य नेता हैं - सीए अखिलेश जैन

▪ **एनडीए बैठक में पारित प्रस्ताव** 19

» जनकेंद्रित विकास, सहभागी लोकतंत्र और कार्य प्रदर्शन -उन्मुख शासन

▪ **संविधान हत्या दिवस** 23

» लोकतंत्र में मीसाबंदियों की भूमिका अहम् - डॉ. मोहन यादव

» आपातकाल में लोकतंत्र का गला घोंटा - डॉ. महेन्द्र सिंह

» भाजपा में लोकतंत्र सेनानियों को सम्मान मिला - प्रो. कप्तान सिंह सोलंकी

» आपातकाल में लोकतांत्रिक व्यवस्थाएं ध्वस्त थीं - कैलाश सोनी

» भाजपा ने लोकतंत्र सेनानियों का सम्मान किया - तपन भौमिक

▪ **समीक्षा बैठक** 25

» प्रशिक्षण कार्यक्रम विजय अभियान का आधार - डॉ. मोहन यादव

» शत-प्रतिशत प्रशिक्षण वर्ग संपन्न - हेमंत खण्डेलवाल

» प्रशिक्षण का भाव परिलक्षित होना चाहिए - डॉ. महेन्द्र सिंह

▪ **G7 समिट** 27

» भारत की ग्रोथ स्टोरी पूरी मानवता के लिए - पीएम मोदी

▪ **अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस** 28

» जुड़ाव व एकता योग का मूल भाव है - पीएम मोदी

» योग से मानव कल्याण - डॉ. मोहन यादव

» भारतीय योग को पहचान मिली - नितिन नवीन

» अधिकांश देशों ने योग अपनाया - हेमंत खण्डेलवाल

▪ **'एक पेड़ माँ के नाम' अभियान** 32

» अभियान से भावी पीढ़ियों को सुरक्षा - नितिन नवीन

▪ **मन की बात** 33

» समुद्र से आसमान तक सुरक्षित और आत्मनिर्भर बन रहा भारत

» डॉ. मुखर्जी के कारण पश्चिम बंगाल भारत का हिस्सा - डॉ. मोहन यादव

» डॉ. मुखर्जी ने राष्ट्रहित सर्वोपरि रखा - हेमंत खण्डेलवाल

▪ **डॉ. श्यामाप्रसाद मुखर्जी बलिदान दिवस** 37

» डॉ. श्यामाप्रसाद मुखर्जी महान राष्ट्रनायक - डॉ. मोहन यादव

» डॉ. मुखर्जी का त्याग, समर्पण और राष्ट्रभक्ति प्रेरणीय - हेमंत खण्डेलवाल

▪ **रानी दुर्गावती बलिदान दिवस** 38

» विरासत से विकास अभियान शुरू - डॉ. मोहन यादव

» रानी दुर्गावती का त्याग और राष्ट्र भक्ति प्रेरणादायक - हेमंत खण्डेलवाल

▪ **जन्म दिवस** 39

» अमर शहीद चन्द्रशेखर आजाद

» सांस्कृतिक राष्ट्रवाद के प्रणेता तिलकजी

▪ **विचार प्रवाह** 41

» क्या है सेक्यूलरिज्म ?


## • मुख्य व्रत-त्यौहार

3. गणेश चतुर्थी व्रत, 8. शीतलाष्टमी, बसोरा, 10. योगिनी एकादशी व्रत, 12. रोहिणी व्रत, प्रदोष व्रत, शिव चतुर्थी व्रत 14. हलहारिणी, स्ना. दा. श्री. अमावस, 15. चन्द्रदर्शन, गुप्त नवरात्रारम्भ, 16. भ. जगदीश रथयात्रा, 17. विनायकी चतुर्थी व्रत, 21. वैवस्वत पूजा, 22 से 29 तक अष्टान्हिका व्रत, 23. भड़ली नवमी, नवरात्रा समा., 24. आशा दशमी, 25. देवशयनी/ हरिशयनी ग्यारस, 26. वासुदेव द्वादशी, प्रदोष व्रत, रवि व्रत, 27. मंगला तेरस, विजया पार्वती व्रत, 29. स्नानदान व्रत, गुरू पूर्णिमा, 30. वीर शासन जयंती

## • मुख्य जयंती-दिवस

1. डॉक्टर्स एवं सी.ए. दिवस, 6. पं. श्यामा प्रसाद मुखर्जी जयंती, 11. विश्व जनसंख्या दिवस, 12. संत नामदेव पुण्यतिथि 19. डॉ. खूबचंद बघेल जयंती, 23. लोकमान्य तिलक जयंती, 25. विट्ठलवारी महोत्सव, 27. डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम पु.ति., 31. मुंशी प्रेमचंद जयंती, उधमसिंह शहीद दिवस,

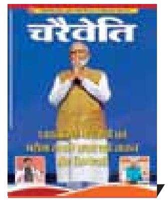



वर्ष-58, अंक : 05, भोपाल, जुलाई 2026

**हमारे प्रेरणास्रोत**

पं. दीनदयाल उपाध्याय

## ध्येय बोध

"एकात्म मानववाद का अर्थ है कि मानव को केवल भौतिक सुख-सुविधाओं तक सीमित न रखकर, उसके शारीरिक, मानसिक, बुद्धिगत और आध्यात्मिक विकास को भी महत्व दिया जाए।"

**- पं. दीनदयाल उपाध्याय**


•

**सम्पादक**

मुद्रक एवं प्रकाशक

**संजय गोविंद खोचे***

•

सहायक सम्पादक

**पं. सलिल मालवीय**

•

व्यवस्थापक

**योगेन्द्र नरेन्द्र नाथ बरतरिया**

•

पं. दीनदयाल विचार प्रकाशन म.प्र. के लिये मुद्रक एवं प्रकाशक संजय गोविंद खोचे द्वारा पं. दीनदयाल परिसर, ई-2, अरेरा कालोनी, भोपाल-462016 से प्रकाशित

एवं एम. पी. प्रिंटर्स, बी-220, फेस-II, गौतमबुद्ध नगर, नोएडा - 201 305 से मुद्रित.

•

संपादकीय पता

पं. दीनदयाल परिसर,

ई-2, अरेरा कालोनी, भोपाल- 462016

e-mail:charevetibpl@gmail.com

web site:www.charaiveti.org

मूल्य- तेईस रुपये

*समाचार चयन के लिए पी.आर.बी.एक्ट के तहत जिम्मेदार

# मोदी जी ने भरोसा जीत लिया

**प्रधानमंत्री** श्री नरेंद्र मोदी जी निर्वाचित प्रधानमंत्री के रूप में राष्ट्र सेवा करने वाले ''प्रधान सेवक'' के रूप में, सभी बाधाओं को पार करते हुए, सर्वाधिक समय तक राष्ट्र का नेतृत्व करने वाले प्रधानमंत्री बन चुके हैं। निश्चित ही यह अवसर भारतीय जनता पार्टी, एनडीए गठबंधन एवं मोदी जी के समर्थकों के लिए उत्साह तथा मन को भाव विभोर करने का है। पर मोदी जी के सर्वाधिक समय तक निर्वाचित प्रधानमंत्री बना रहना, इस अवसर के महत्व का एक हिस्सा मात्र है। पूरा विश्लेषण शासन काल का करना होगा। शासन किन परिस्थितिओं में मिला था और आज भारत, विश्व की जनता को 12 वर्षों में क्या हासिल हो पाया? तभी इस अवसर का सही विश्लेषण संभव है। ऐतिहासिक सत्य है- मोदी जी ने जब बागडोर संभाली थी तब भारत विश्व की 11वीं अर्थव्यवस्था था। भ्रष्टाचार नभ-जल-थल में सभी संभव स्थानों पर चरम पर था। आतंकवाद डराता था। सेना पत्थर खाती थी, पर सेना के हाथ बंधे हुए थे। अमीर और अमीर हो रहा था। गरीब और गरीब हो रहा था। मध्यम वर्ग की स्थिति तो बहुत ही विचित्र थी, अपनी साख बचाए रखने के लिए संघर्षरत थे, युवाओं का भविष्य अंधकार में था,रोजगार, शिक्षा, कौशल प्रशिक्षण का नितांत अभाव था, किसान अपनी खेती से लागत निकालने के चक्कर में कर्ज के,साहूकारों के चंगुल में फंस रहा था। महिला अधिकार, महिला सम्मान भाषणों का विषय था। धरातल पर नहीं था। कुल मिलाकर समय निराशा के दौर से गुजर रहा था। भविष्य डरावना लग रहा था।

2014 का चुनाव देश के भविष्य निर्माण में बेहद सार्थक एवं महत्वपूर्ण सिद्ध हुआ। निराशा से परेशान जनता ने कांग्रेस गठबंधन को उखाड़ फेंका और श्री नरेंद्र मोदी जी को स्पष्ट बहुमत के साथ सरकार बनाने का अवसर प्रदान किया।

12 वर्षों के शासनकाल में मोदी जी ने जनता की अपेक्षाओं व आकांक्षाओं को समझा और जनता-जनार्दन को देवता मानकर एवं स्वयं को ''प्रधान सेवक'' मानकर जनता के दर्द, तकलीफ को कम करने का सघन प्रयास किया। भ्रष्टाचार, भाई-भतीजा वाद, परिवारवाद, तुष्टीकरण से मुक्त शासन का वादा किया और अपने वादों को पूरा करने का सघन प्रयास किया। जब सच्चे मन से प्रयास किए गए, 140 करोड़ लोगों को यात्रा का सहभागी बनाया गया, छल-कपट को पास फटकने तक नहीं दिया गया,तो वांछित परिणाम आने की आशा जागृत हुई। धीरे-धीरे परिणाम आने लगे। जनता को एहसास होने लगा कि जनता का निर्णय सही था। जनता को अपने वोट की ताकत का अनुभव हो गया। 140 करोड़ लोगों के देश में मोदी जी ने आशा का संचार किया। फिर जनता का मोदी जी पर विश्वास गहराता चला गया। आतंकवाद, नक्सलवाद जैसी समस्याओं का समाधान मोदी जी की ही देन है। विभिन्न राज्यों में फैली अशांति का शांतिपूर्ण हल निकाला गया। वैश्विक समस्याओं का समाधान किया गया। संकट में मोदी जी 56 इंच का सीना तानकर नेतृत्व करते नजर आए। भीषण संकटों के बावजूद देश की जनता का पूर्ण ख्याल रखना मोदी जी की पहचान बन गया। मतदाता मानने लगा मोदी जी जैसा नेतृत्व संभव नहीं है या मोदी जी का कोई विकल्प नहीं है। मोदी जी के कठोर अनुशासन, आत्म संयम, पराक्रम व दूरदर्शिता का ही परिणाम है आज देश के 80 प्रतिशत हिस्से में भाजपा या एनडीए गठबंधन की सरकारें है। गठबंधन में शामिल दल मोदी जी के चमत्कारिक नेतृत्व की सराहना करते हैं। वैश्विक भीषण संकटों में नेतृत्व देकर मोदी जी ने विश्व को दांतों तले उंगली दबाने के लिए मजबूर कर दिया।

32 देशों के सर्वोच्च नागरिक सम्मान से सम्मानित हो चुके मोदी जी ने अपने विचारों, पराक्रम,सर्मपण एवं दूरदर्शिता से भारत ही नहीं विश्व को नेता की परिभाषा बदलने के लिए मजबूर कर दिया।

25 जून 1975 से 21 मार्च 1977 तक देश ने आपातकाल जैसी असंवैधानिक, गैर लोकतांत्रिक, गैर जिम्मेदार एवं अहंकार की त्रासदी को झेला है। देश विपक्ष विहीन हो गया था और कांग्रेस की सरकार अपने अत्याचारों से विपक्ष का गला घोंट रही थी। ना जाने कितने परिवार उजड़ गए। कितनी माता-बहनों को जीवन भर की त्रासदी झेलने को मजबूर कर दिया गया। संविधान हत्या दिवस नई पीढ़ी व भविष्य की पीढ़ी को कांग्रेस के इस कृत्य से परिचय करवाने व लोकतंत्र की रक्षा के लिए अपना सर्वोच्च अर्पित करने वाले परिवारों का स्मरण कर भविष्य में लोकतंत्र को और मजबूत करने का संकल्प दिवस है। जिससे भविष्य की कोई भी सरकार इस प्रकार लोकतंत्र का गला ना घोंट सके। स्वतंत्रता सेनानियों ने अंग्रेजों से देश को आजाद करवाया, लोकतंत्र सेनानियों ने लोकतंत्र को देश में पुनर्स्थापित किया। जिस प्रकार स्वतंत्रता संग्राम सेनानी देश के लिए आदरणीय हैं, उसी प्रकार लोकतंत्र सेनानी भी देश के लिए आदरणीय हैं, लोकतंत्र सेनानियों के त्याग, तपस्या व बलिदान के कारण देश में लोकतंत्र स्थापित हुआ और आजादी देश को गैर लोकतांत्रिक सरकार से मिली।

2014 में प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने संयुक्त राष्ट्र महासभा में विश्व योग दिवस का प्रस्ताव 175 देशों के समर्थन से पारित करवाया। मोदी जी ने भारत के ज्ञान, विचार, परंपरा को संपूर्ण विश्व के कल्याण के लिए विश्व पटल पर साझा किया। इसी का परिणाम है पूरा विश्व भारत के ज्ञान, विचार व परंपरा से लाभांवित हुआ। आज पूरा विश्व 21 जून को विश्व योग दिवस मना कर विश्व कल्याण के मोदी जी के प्रयासों में सहभागी बन रहा है। विश्व योग दिवस, एक दिन का कार्यक्रम नहीं 365 दिन चलने वाली आदत बन गया है।

23 जून 1953 को जम्मू कश्मीर को विशेष दर्जा व परमिट व्यवस्था के खिलाफ लोकतांत्रिक तरीके से संघर्ष करने वाले डॉक्टर श्यामा प्रसाद मुखर्जी की रहस्यमय मृत्यु, डॉक्टर श्यामा प्रसाद मुखर्जी का सर्वोच्च बलिदान, समस्त कार्यकर्ताओं के लिए प्रेरणा स्रोत है। भाजपा कार्यकर्ताओं नें हर बूथ पर डॉक्टर श्यामा प्रसाद मुखर्जी को श्रद्धा सुमन अर्पित कर अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की। प्रधानमंत्री जी ने धारा 370 को हटाकर संपूर्ण देश को एक करने का ऐतिहासिक कार्य किया। राष्ट्रवाद, सुशासन और विकास की जिस विचारधारा को डॉक्टर मुखर्जी ने स्थापित किया था, उसी विचारधारा पर भाजपा सरकार चल रही है। ■

**(संजय गोविन्द खोचे)**
सम्पादक

# 140 करोड़ भारतीयों का भरोसा हमारी सबसे बड़ी ताकत और जिम्मेदारी - नरेंद्र मोदी

- **'फ्रैजाइल फाइव' से दुनिया की सबसे तेजी से बढ़ती बड़ी अर्थव्यवस्थाओं में से एक बनने तक का सफर।**
- **युवाओं, महिलाओं, किसानों और मध्यम वर्ग की उम्मीदें देश के विकास को आगे बढ़ा रही हैं।**
- **पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी के नेतृत्व वाली NDA सरकार के दौरान भारत की आर्थिक रफ्तार तेज हुई।**

निर्वाचित प्रधानमंत्री के रूप में निरंतर सबसे लंबी अवधि तक सेवा करने का अवसर, इतने लंबे समय तक मां भारती की सेवा का सौभाग्य मिलना, ये ईश्वर की विशेष कृपा से ही संभव हो सकता है। और मेरे लिए तो जनता-जनार्दन ही ईश्वर का रूप है। और इसलिए मैंने इस सेवा कार्य को हमेशा एक साधना के रूप में ही देखा है। और ये साधना भी एकाकी नहीं रही है। ये एक सामूहिक यज्ञ है, जिसमें अनेकों साथियों ने कर्तव्य भाव से अपना योगदान दिया है।

एनडीए परिवार के सदस्यों ने एक resolution भी पेश किया है। मैं इस यात्रा को अपनी व्यक्तिगत उपलब्धि नहीं मानता हूँ। ये हर दृष्टिकोण से, सबकी सामूहिक उपलब्धि है। ये NDA के हर घटक दल की एक समान उपलब्धि है।

भारत की जनता का नीर-क्षीर विवेक हमेशा अद्‌भुत रहा है। देश की जनता ने राष्ट्रीय स्तर पर राजनीतिक स्थिरता का महत्व समझा है।

ये जनता-जनार्दन की परिपक्वता ही है...कि उसने लंबे समय तक मुझे इस तरह जनता की सेवा का अवसर दिया। 2014 के पहले के कई दशक...बहुत अस्थिरता और उथल-पुथल से भरे हुए थे। इसका देश को बहुत नुकसान भी उठाना पड़ा। लेकिन अब देश की जनता...एक स्थिर सरकार का काम भी देख रही है और उसकी निर्णायक क्षमताओं की प्रशंसक भी है।

साल 2014 में जब NDA की जीत हुई थी... तब मैंने कहा था कि आज देश के सामान्य मानवी में एक नई आशा का उदय हुआ है। इस आशा का, इस उम्मीद का संरक्षण...हम सभी का बहुत बड़ा दायित्व था। देश के लोगों ने कांग्रेस के विश्वासघात के बाद...अपना भरोसा हमें सौपा था। मुझे आज संतोष है...गर्व है...की एनडीए परिवार के तौर पर हमने देश के विश्वास को हमेशा और मजबूत किया है। 2014 में आशा का उदय होता सूरज..आज नए आत्मविश्वास के प्रकाशपुंज में बदल गया

है। भारत के लोगों ने पहली बार ये देखा है कि जब सही नीयत से सरकार चलती है...तो तेज गति से विकास भी होता है। एनडीए सरकार के इन 12 वर्षों में 25 करोड़ से ज्यादा लोगों का गरीबी से बाहर निकलना...ये दिखाता है कि हमारी नीतियां सही हैं, हमारी दिशा सही है। ये सफलता आज देश के हर उस व्यक्ति को एक भरोसा देती है... कि एक दिन उसका संघर्ष भी खत्म होगा...एक दिन उसके सपने भी पूरे होंगे। और मैं मानता हूं...कल जो गरीब था...आज जो नियो मिडिल क्लास बना है...उसे अब हमें पीछे नहीं होने देना है। इसलिए सरकार के नाते जनप्रतिनिधि के नाते...हमें दिन रात काम करना है, परिश्रम की पराकाष्ठा करनी है। इस संकल्प के साथ...कि 140 करोड़ का ये देश हमसे जो उम्मीदें लगाए बैठा है...वो जरूर पूरी हों। भारत का युवा...भारत की नारी शक्ति...भारत का मध्यम वर्ग...भारत के किसान...सबकी आकांक्षाएं...उनकी Aspirations हमें पूरी करनी हैं। आज देश का हर नागरिक विकसित भारत के सपने से भरा हुआ है। विकसित भारत का सपना अब किसी एक व्यक्ति का नहीं रहा। किसी सरकार का नहीं रहा। किसी दल का नहीं रहा। देश के जन-जन का सपना बन चुका है। संकल्प बन चुका है। और इस सपने की पूर्ति के लिए हमें अपना हर पल समर्पित करना है।

NDA के 12 वर्षों की एक बड़ी सफलता ये भी है कि देश काँग्रेस के कुचक्र से आजाद हुआ है। काँग्रेस ने देश को लाचारगी, बेचारगी और हीन भावना के गर्त में गिरा दिया था। देश को यही एहसास कराया जाता था कि भारत में विकास धीरे-धीरे ही होता है...भारत में तेज विकास संभव ही नहीं है। और बड़ी ही चतुराई से, इस धीमी विकास को एक नाम दिया था- हिंदू ग्रोथ रेट! यानी, कार्यशैली काँग्रेस की... दायित्व कांग्रेस का, विफलता कांग्रेस की... लेकिन, कलंक देश की बड़ी हिंदू आबादी के नाम लगाया गया। जबकि, असल में इस कुसंस्कृति का नाम होना चाहिए था- कांग्रेस ग्रोथ रेट! इस कांग्रेस ग्रोथ रेट में ना गवर्नेंस थी...ना नीति...ना नीयत और ना ही निर्णय!

जब पहली बार अटल जी के नेतृत्व में एनडीए सरकार आई...तब जाकर हमें एक झलक दिखी कि विकास में गति कैसे आती है...लेकिन, दुर्भाग्य से 2004 में देश फिर से अस्थिरता के बवंडर में...और कांग्रेस के शिकंजे में फंस गया। विकास तो दूर की बात है...देश को कांग्रेस ने एक के बाद एक हजारों

करोड़ रुपए के घोटालों में घसीट दिया।

देश का भाग्य फिर तब बदला...जब 2014 में NDA की सरकार बनी। देश ने देखा कि... जब नीयत, नीति और निर्णय तीनों एक साथ काम करते हैं...तो विकास की गति कैसी होती है। देश ने देखा कि जो काम दशकों में होते थे, वो काम महीनों में होने लगे हैं। 2014 में 74 एयरपोर्ट थे... 2026 में 160 से अधिक एयरपोर्ट तक...2014 में एक हजार किलोमीटर एक्सप्रेस वे से...2026 में छह हजार सात सौ किलोमीटर एक्सप्रेस वे तक...2014 में सिर्फ 5 शहरों में मेट्रो से...2026 में 20 से ज्यादा शहरों में मेट्रो तक। 2014 में 700 करोड़ रुपये डिफेंस एक्सपोर्ट से...2026 में 23 हजार करोड़ रुपये के डिफेंस एक्सपोर्ट तक...देश ने बहुत लंबी यात्रा तय की है।

2014 में देश में केवल 25 करोड़ इंटरनेट यूजर थे। आज 100 करोड़ से अधिक यूजर इंटरनेट से जुड़े हैं। 2014 में डिजिटल पेमेंट्स ना के बराबर थे। आज भारत डिजिटल ट्रांजैक्शन में नंबर 1 देश है। 2014 में भारत अपनी जरूरत का ज्यादातर मोबाइल बाहर से मंगाता था। आज भारत 33 करोड़ से अधिक मोबाइल हैंडसेट खुद बनाता है। 2014 में सोलर क्षमता केवल ढाई गीगावॉट थी। आज यह 150 गीगावॉट से अधिक है। 2014 में एथेनॉल ब्लेंडिंग केवल डेढ़ प्रतिशत थी। आज यह 20 प्रतिशत तक पहुंच चुकी है। 2014 में देश में एक भी सेमीकंडक्टर यूनिट नहीं थी। आज देश में बन रही 10 से ज्यादा सेमीकंडक्टर यूनिट्स...भारत को आधुनिकता की तरफ ले जा रही हैं।

हमने देश की जरूरतों को अपनी नीतियों और निर्णयों का आधार बनाया। नई सोच से नए फैसले लिए। हमने युवाओं के लिए skill development ministry बनाई। सहकारी क्षेत्र को मजबूती देने के लिए अलग cooperative ministry बनाई। हमारे मछुवारे भाई-बहनों के लिए अलग फिशरीज मिनिस्ट्री बनाई... हमारा फोकस क्लियर था- विकास की इस दौड़ में कोई पीछे ना छूटे..।

हमने दिव्यांगजनों के लिए कानून बनाया। आदिवासियों के लिए जनमन जैसी योजनाएं शुरू कीं। पशुपालकों और मछुवारों को पहले किसान क्रेडिट कार्ड का लाभ नहीं मिलता था। हमने उन्हें भी इस सुविधा से जोड़ा। और इतना ही नहीं....हमारी सरकार ने रेहड़ी-पटरी वालों को भी स्वनिधि क्रेडिट कार्ड की सुविधा दी।

सवाल यह है कि अगर 12 साल में इतना कुछ हो सकता है, तो फिर दशकों तक क्यों नहीं हुआ? ये कांग्रेस ग्रोथ रेट और NDA ग्रोथ रेट का अंतर है। एक व्यवस्था लोगों को इंतजार कराती थी। आज की व्यवस्था परिणाम दिखाती है। एक व्यवस्था काम अटकाती-भटकाती थी।

आज की व्यवस्था कहती है, काम अभी होगा... समय पर होगा, और बड़े पैमाने पर होगा।

2014 से 2026 की कहानी केवल आंकड़ों की कहानी नहीं है। यह उस भारत की कहानी है जिसने पहली बार अपनी पूरी क्षमता के साथ दौड़ना शुरू किया है। वो भारत...जो अब बड़े लक्ष्य तय कर रहा है... और उन लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए जी-तोड़ मेहनत कर रहा है।

NDA के 12 वर्षों की उपलब्धियां की एक और विशेषता है। हमें ये उपलब्धियां...वैश्विक अस्थिरता और अशांति के दौर में हासिल हुई हैं। एक स्थिर सरकार होने का लाभ क्या होता है ये बार-बार इस दौर ने साबित किया है। कोरोना के समय को हम कभी नहीं भूल सकते...जब हर तरफ हाहाकार मचा था। लेकिन भारत उस हालात का मुकाबला करते हुए भी सफलता से आगे बढ़ा।

आज दुनिया के बड़े-बड़े देशों की अर्थव्यवस्थाएं संघर्ष कर रही हैं। तब भी, 2025-26 में भारत ने ''सेवन प्वाइंट सेवन परसेंट'' की ग्रोथ रेट हासिल की है। और 31 मार्च 2026 को समाप्त तिमाही में भारत की ग्रोथ ''सेवन प्वाइंट एट परसेंट'' रही है। ये सफलता इतनी आसान नहीं है। हम फ्रैजाइल फाइव के कठघरे के बाहर निकलकर...आज दुनिया की तेजी से आगे बढ़ने वाली अर्थव्यवस्था बन चुके हैं।

कल के विकसित भारत की गारंटी है- आज का आकांक्षी भारत! आकांक्षी भारत के गर्भ में विकसित भारत पल रहा है। आज के भारत की आकांक्षाएँ बड़ी हैं, सपने बड़े हैं। इसीलिए, उसके संकल्प और लक्ष्य भी उतने ही बड़े हैं। देश की इन आकांक्षाओं का वाहक हमारा मिडिल क्लास है...नियो मिडिल क्लास है। इसीलिए, हमारी सरकार मध्यम वर्ग की aspirations को पूरा करने में लगी है। मिडिल क्लास की ease of living...उसकी quality of life... उसके लिए नए अवसर, और नई संभावनाएं...हमने हर फ्रंट पर काम किया है।

2014 से पहले, मिडिल क्लास कानून की उलझनों का सबसे बड़ा शिकार था। जटिल टैक्स सिस्टम...आमदनी के सीमित स्रोत और टैक्स का बड़ा बोझ... खराब गवर्नेंस की मार....ये सब सामान्य मानवी के लिए डेली लाइफ की चुनौतियाँ होती थीं। लेकिन, हमने मिडिल क्लास की परेशानियों को समझा...हमने मिडिल क्लास की आकांक्षाओं को समझा। और इसलिए...आज 12 लाख रुपए तक की आमदनी पूरी तरह से टैक्स फ्री है। आज देश में सरल और फेसलेस टैक्स सिस्टम है। अच्छे इनफ्रास्ट्रक्चर से उनका जीवन आसान हुआ है।

बीते 12 वर्षों में मिडिल क्लास परिवार के बच्चों के लिए हर क्षेत्र में नए अवसर बने हैं। मध्यम वर्ग के घर का सपना पूरा हो सके, सरकार इसमें भी मदद कर रही है। घर में इलाज के खर्च का बोझ कम हो... इसके लिए आयुष्मान भारत योजना में, बिना आय सीमा के, बुजुर्गों को भी शामिल किया गया है। GST reform का भी बहुत बड़ा लाभ देश के मध्यम वर्ग को हुआ है। उसके लिए हेल्थ insurance सस्ता हुआ है। उसके सपनों से जुड़ी चीजें सस्ती हुई हैं। इन प्रयासों का परिणाम है कि आज देश का मिडिल क्लास अनिश्चितताओं से मुक्त हो रहा है। वो भरपूर आत्म विश्वास के साथ देश की विकास यात्रा को गति दे रहा है।

हमारे लिए दल से हमेशा, अगर बड़ा कुछ है तो हमारा देश है। दल से बड़ा देश है। और जब नेशन फर्स्ट, देश प्रथम की भावना से काम होता है...तो कोई भी निर्णय कठिन नहीं होता। इसलिए, ऐसे फैसले जिन्हें पहले असंभव समझा जाता था...जो देश के सुरक्षित भविष्य के लिए अनिवार्य थे...हमने बहुत ही सधे हुए तरीके से उन फैसलों को भी लिया। पहले सरकारें आर्टिकल 370 की बात तक करने से डरती थीं। हमने उसे खत्म करके पूरे देश में एक संविधान लागू किया। पहले नॉर्थ ईस्ट से बम-बंदूक और ब्लॉकेड जाने का नाम नहीं लेते थे। हमने नॉर्थ ईस्ट में शांति भी लौटाई, और स्थिरता भी लेकर आए। पहले भारत आतंकी हमलों के बाद चुपचाप दर्द सहता रहता था। हमने आतंकवादियों पर सर्जिकल स्ट्राइक की...एयर स्ट्राइक की। ऑपरेशन सिंदूर में दुनिया ने भारत का सामर्थ्य देखा।

पहले ये मान लिया गया था कि नक्सलवाद-माओवाद अब कभी नहीं खत्म होने वाले। कभी खत्म हो ही नहीं सकते। हमने देश को नक्सलवाद-माओवाद के उस जहर से मुक्त करके दिखाया है।

महिलाओं को आरक्षण...तीन तलाक के खिलाफ कानून...CAA का कानून...भारतीय न्याय संहिता...सैनिकों को वन रैंक वन पेंशन... NDA सरकार राष्ट्र हित में कोई भी काम करने से पीछे नहीं रही। और हम सभी को इस बात पर गर्व है। मैं देश को फिर आश्वस्त करूंगा... देश हित के बड़े फैसलों का ये सिलसिला और भी तेज होगा। तेज गति से आगे बढ़ेगा।

बीते 12 वर्षों में देश ने जो कुछ हासिल किया, वो दुनिया देख रही है। लेकिन अब हमें अपनी दृष्टि आगे की ओर रखनी है। हमें 2047 के लक्ष्य को देखते हुए, उस लक्ष्य को पूरा करने

के लिए अपनी स्पीड को और बढ़ानी होगी। हमारा बेंचमार्क अब ये होना चाहिए...कि बीते 12 वर्षों में जो स्पीड और स्केल हमारी रही है...उसको हम और अधिक बड़ा और व्यापक कैसे बना सकते हैं। आज ग्लोबल ग्रोथ में भारत की हिस्सेदारी लगातार बढ़ रही है। इसलिए, भारत को अब ग्लोबल पैरामीटर्स, ग्लोबल कंपीटिशन और ग्लोबल परस्पेक्टिव देखना है। दुनिया भारत से सोल्यूशन चाहती है...दुनिया, भारत में वैश्विक सप्लाई चेन का एक भरोसेमंद पार्टनर देख रही है। और हमें दुनिया की इन अपेक्षाओं पर खरा उतरकर दिखाना है। हमें ये समय गंवाना नहीं है। और मैं बार-बार कहता हूं, यही समय है-सही समय है।

हमें फ्यूचरिस्टिक टेक्नॉलॉजी में खुद को श्रेष्ठ रखना है। हमें सिर्फ दुनिया जैसा नहीं करना, हमें दुनिया से एक कदम आगे रहना है। अब जैसे एनर्जी सिक्योरिटी है...बीते 12 वर्षों में हमने ऊर्जा में आत्म निर्भरता के लिए अभूतपूर्व काम किया। मैंने लाल किले से समुद्र मंथन अभियान की घोषणा की थी। ये बहुत ही महत्वकांक्षी मिशन है। बीते दिनों में ऑयल एंड गैस के एक्सप्लोरेशन को लेकर काफी पॉजिटिव खबरें आ रही हैं। यानि आने वाला समय अनेक संभावनाओं से भरा हुआ है। और हमें हर संभावना का पूरा फायदा उठाना है।

अब हमें 500 गीगावॉट, रीन्युएबल एनर्जी के टारगेट को जल्द से जल्द पूरा करना है। सोलर एनर्जी को लेकर तो काम तेजी से चल रहा है...लेकिन अब हमें...न्यूक्लियर एनर्जी के लक्ष्यों को भी तेजी से हासिल करना है। अभी हमने दुनिया को दिखाया है...कि भारत फास्ट ब्रीडर रिएक्टर टेक्नॉलॉजी में कितना आगे पहुंच गया है। ये टेक्नॉलॉजी, हमें न्यूक्लियर एनर्जी में आत्म निर्भरता की तरफ ले जाएगी। इसी तरह...ग्रीन हाइड्रोजन और ग्रीन अमोनिया के मामले में, भारत बहुत तेजी से काम कर रहा है। आने वाले समय में ये टेक्नॉलॉजी...भारत को ग्लोबल ग्रीन एनर्जी मैप में सबसे प्रमुख नाम बना पाएगी। और ये नाम बनना पक्का है।

आज बड़े-बड़े एक्सपर्ट्स का अनुभव है...कि जिन देशों ने मैन्युफेक्चरिंग के पूरे इकोसिस्टम पर 80-90 के दशक में काम किया...उन्हें उसका फायदा, इस सदी में मिलना शुरु हुआ। भारत ने 10-12 वर्ष पहले जिस इकोसिस्टम पर काम करना शुरु किया...उसका लाभ अब देश को मिलना शुरू हो गया है। 2014-15-16 के कालखंड में जो बात नींव डाली गई थी, उसके फल अब दिखाई देने लगे हैं। भारत तेजी से दुनिया का मैन्युफेक्चरिंग पावर हाउस बनने की ओर आगे बढ़ रहा है।

एनर्जी, मिनरल्स, चिप, बैटरी स्टोरेज, स्पेस...ड्रोन...डेटा सेंटर्स, क्वांटम कंप्यूटिंग, आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस...ऐसे हर सेक्टर, हर टेक्नॉलॉजी एक दूसरे से जुड़ी हुई है... ये एक दूसरे की पूरक हैं। भारत इनके लिए विदेशों पर निर्भर नहीं रह सकता। क्योंकि ये भारत की आर्थिक और स्ट्रीटिजिक, हर प्रकार की सिक्योरिटी से जुड़े विषय हैं। तभी भारत, सेमीकंडक्टर इकोसिस्ट्म पर इतना फोकस कर रहा है। तभी, क्रिटिकल मिनरल्स को लेकर मिशन मोड पर काम चल रहा है...

शिपिंग सेक्टर में भारत आत्म निर्भरता के नए लक्ष्यों के साथ आगे बढ़ा है। हम एक ऐसे फ्यूचर की तरफ बढ़ रहे हैं...जहां हम मेड इन इंडिया शिप्स पर ट्रेड करेंगे...और कंटेनर भी मेड इन इंडिया होंगे...शिप मैंटेनेस और रिपेयर से लेकर स्क्रैपिंग तक की सर्विसेज भी भारत देगा। यही विजन हमारा एविएशन सेक्टर के लिए है। आज हम मेड इन इंडिया ट्रांसपोर्ट एयरक्राफ्ट बना रहे हैं...वो दिन दूर नहीं...जब भारत मेड इन इंडिया सिविल एयरक्राफ्ट भी बनाएगा। देशवासी मेड इन इंडिया विमान में ही यात्रा करेंगे। वो दिन में देख रहा हूं।

ये सदी, टेक्नॉलॉजी की है, डेटा की है। आज विश्व के सबसे बड़े और आधुनिक डेटा सेंटर्स में एक सेंटर्स भारत में बन रहे हैं। यही भारत को ग्लोबल सप्लाई और वैल्यू चेन का मजबूत पिलर बनाएगी। हमने UPI के माध्यम से दुनिया को दिखाया है...कि भारत कम से कम समय में टेक्नॉलॉजी का इतना विस्तार कर सकता है...हमने दिखाया है कि हमारे युवाओं का सामर्थ्य क्या है। अब AI, Deep Tech और Advanced Technologies में हमारे युवा नया दमखम दिखाने के इरादे से आगे बढ़ रहे हैं।

आने वाले समय में दो और सेक्टर्स में भारत का सामर्थ्य पूरी दुनिया देखेगी। ये सेक्टर हैं, टूरिज्म और स्पोर्ट्स। ये दोनों भारत की इकॉनॉमी के भी मजबूत पिलर बनेंगे। विशेष रूप से कॉन्फ्रेंस, एग्जिबिशन और कॉन्सर्ट के मामले में भारत, एक ग्लोबल डेस्टिनेशन बनने के लिए अब पूरी तरह सज रहा है। आधुनिक इंफ्रास्ट्रक्चर से इस सेक्टर को बहुत पुश मिलेगा। और स्पोर्ट्स में तो भारत के युवा कमाल का प्रदर्शन कर रहे हैं। और हर दिन, उनकी परफॉर्मेंस निखरती ही जा रही हैं। भारत, दुनिया की biggest sports लीग की धरती बनता जा रहा है। आने वाले सालों में हमारी ये ख्याति और बुलंद होगी। ओलंपिक्स के लिए हमारी तैयारियां भी...भारत की एस्पिरेशन का ही प्रतिबिंब है। हमें छोटा नहीं सोचना है...हमें लक्ष्य ऊंचे रखने हैं...और उन्हें प्राप्त करने के लिए पूरी ताकत लगा देनी है।

आज भारत रिफॉर्म एक्सप्रेस पर सवार होकर तेजी से आगे बढ़ रहा है। हमारे लिए Reform कोई Compulsion नहीं है। Reform हमारा Conviction है। और देश भी निरंतर रिफॉर्म्स को सपोर्ट कर रहा है।

देशवासियों की सहभागिता भी हमारी बहुत बड़ी शक्ति है। ये 12 वर्ष सरकार और समाज की सहभागिता का उत्सव मनाने वाले रहे हैं। बीते 12 वर्षों में मैंने जो भी सहयोग देश से मांगा... देशवासियों ने दिल खोलकर के साथ दिया है। मैंने स्वच्छता का आग्रह किया...तो पूरा देश निकल पड़ा। मैंने देश से डिजिटल पेमेंट अपनाने का आवाहन किया। तो भारत रियल टाइम ट्रांजैक्शन में दुनिया में सबसे आगे निकल गया। मैंने कोरोना महामारी के दौरान एकजुटता का...संयम का आग्रह किया... तो देश ने एकजुट होकर उस महामारी का सामना किया। जनता ने कभी हमें निराश नहीं किया।

आने वाले समय में भी इसी जन-विश्वास और जनभागीदारी के साथ हमें आगे बढ़ना है। सबका साथ, सबका विकास, सबका विश्वास और सबका प्रयास ये हमारा मंत्र रहा है। सबका प्रयास ही विकसित भारत के निर्माण की असली ऊर्जा है। हमें हर राज्य, हर शहर, हर गांव को जोड़ना है। अब समय आ गया है कि राज्यों के बीच नई प्रकार की तंदुरुस्त स्पर्धा, स्वस्थ स्पर्धा हो। स्पर्धा इस बात की हो कि कौन सा राज्य सबसे तेजी से ट्रिलियन डॉलर इकोनॉमी बनता है। स्पर्धा इस बात की हो कि कौन सा शहर इनोवेशन का सबसे बड़ा केंद्र बनता है। स्पर्धा इस बात की हो कि कौन सा क्षेत्र रोजगार सृजन में सबसे आगे निकलता है। भारत की प्रगति...राज्यों की ऐसी प्रगति से ही होने वाली है। आइए, अगले दशक को उपलब्धियों के साथ-साथ, श्रेष्ठता का भी दशक बनाएं। आइए, राजनीति की स्पर्धा से ऊपर उठकर विकास की स्पर्धा को राष्ट्रीय संस्कार बनाएं। 12 वर्षों की यात्रा उपलब्धियों की रही है। आने वाले वर्ष और भी नई सिद्धियों के होंगे...और भी बड़ी सिद्धियों के होंगे। ▪

# मोदी जी के नेतृत्व में स्वर्णिम कालखंड - अमित शाह

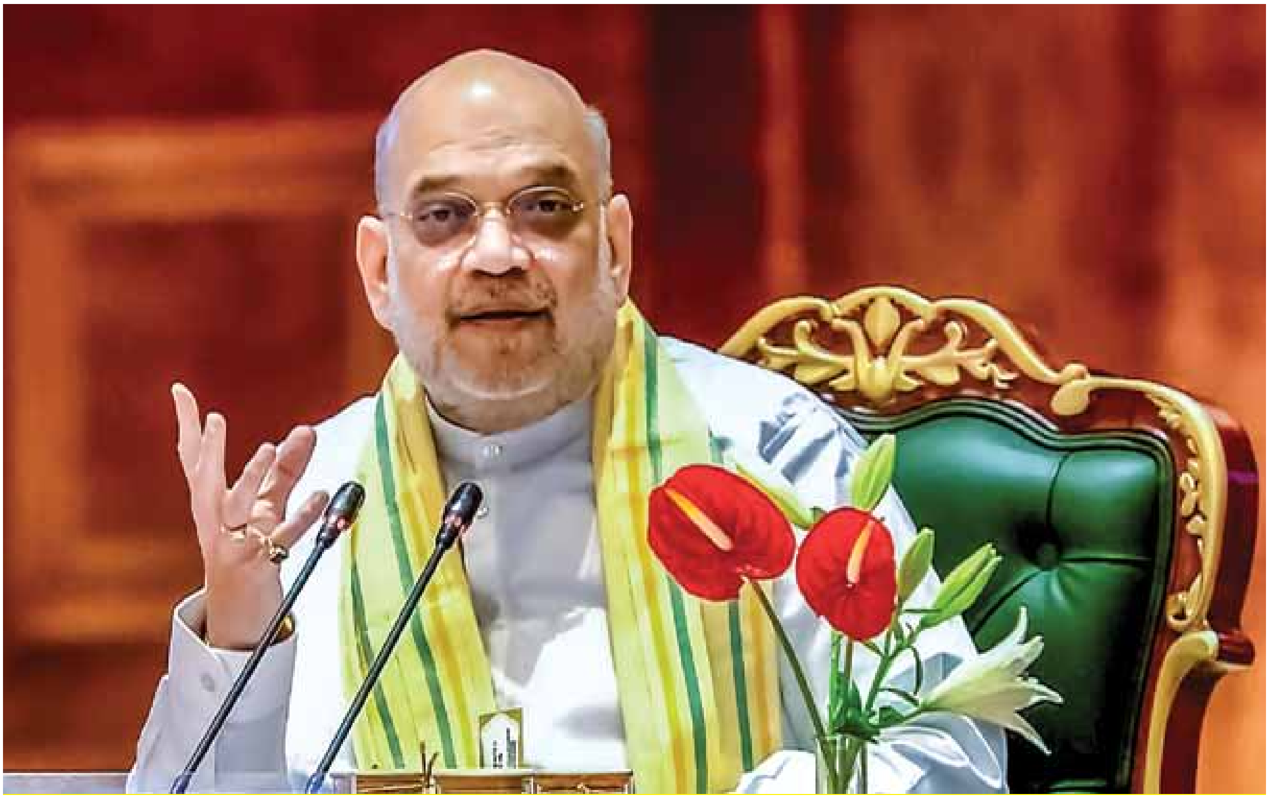

- मोदी जी के नेतृत्व में स्थिरता, निरंतरता और निर्णायक नेतृत्व।
- दशकों पुरानी नक्सलवाद, आतंकवाद और धारा 370 आदि की समस्या को 12 वर्षों में समाप्त किया।
- मोदी जी का साधारण परिवार से निकलकर 25 वर्षों तक लगातार जनता का विश्वास प्राप्त करना भारतीय लोकतंत्र की सबसे बड़ी ताकत का प्रमाण है।
- मोदी जी के नेतृत्व में भारत crisis management का वैश्विक मॉडल बनकर उभरा है, जिसका विश्वभर में शोध हो रहा है।
- मोदी जी ने गुरु नानक देव जी के "सत्ता को सेवा" और समर्थ रामदास जी के निष्काम कर्मयोगी के संदेश को "प्रधानसेवक" बनकर चरितार्थ किया।
- मोदी जी के नेतृत्व में आज एनडीए 80% भूभाग और 76% आबादी का प्रतिनिधित्व करते हुए सुशासन और विकास की राजनीति को आगे बढ़ा रहा है।
- मोदी जी के 12 वर्षों में देश के अनेक भूले-बिसरे स्वतंत्रता सेनानियों और राष्ट्रीय नायकों को सम्मान मिला।
- बिना थके, बिना रुके और बिना कोई दाग के मोदी जी का कार्यकाल प्रशंसनीय है।

मोदी जी का लगातार सबसे लंबे समय तक सेवा देने वाले निर्वाचित प्रधानमंत्री बनना ऐतिहासिक उपलब्धि है। यशस्वी प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में भारत ने राजनीतिक स्थिरता, निर्णायक नेतृत्व, मजबूत विदेश नीति, पारदर्शी शासन, तीव्र आर्थिक विकास और जनकल्याण के नए मानक स्थापित किए हैं। आदरणीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी का नेतृत्व आत्मविश्वासी, आत्मनिर्भर और वैश्विक नेतृत्वकारी भारत के निर्माण का आधार बना है।

आज देश एक ऐतिहासिक पल का साक्षी बन रहा, जब मोदी जी देश के सबसे लंबे समय तक सेवा देने वाले निर्वाचित प्रधानमंत्री बने। पिछला रिकॉर्ड उस समय में सृजित किया गया था, जब चुनाव आजादी के आंदोलन की परछाई

में होते थे। उस दौर में स्पर्धात्मक राजनीति नहीं थी और न ही विकास की अधिक महत्वाकांक्षा थी। आज परफॉर्मेंस की राजनीति के समय में देश का नेतृत्व इतने लंबे समय तक करना और बार-बार जनता द्वारा चुना जाना अपने आप में एक बहुत बड़ी उपलब्धि है। मोदी जी ने इस देश को लंबे कालखंड तक नेतृत्व देकर विकास के हर पैमाने पर आगे बढ़ाया है। इतना ही नहीं, यह कालखंड देश के इतिहास में राजनीतिक स्थिरता के कालखंड के रूप में जाना जाएगा। यह कालखंड नीतियों के सृजन और उनके स्थिर क्रियान्वयन के रूप में भी जाना जाएगा।

यह कालखंड मजबूत रीढ़ वाली विदेश नीति को स्थापित करने वाले कालखंड के रूप में जाना जाएगा। साथ ही, यशस्वी प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी का यह कालखंड देश के सम्मान के साथ कोई समझौता न करने वाली रक्षा नीति के निर्माण के रूप में भी जाना जाएगा। पिछले 62 वर्षों में देश ने 13 प्रधानमंत्री देखे हैं। देश ने अनेक गठबंधन सरकारें और अनेक दलों की सरकारें देखी हैं। राजनीतिक अस्थिरता का एक लंबा कालखंड भी देश ने भोगा है। अनेक लोग आदरणीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी को संकट के समय के नेता के रूप में जानते हैं। जब मोदी जी गुजरात के मुख्यमंत्री बने, तब गुजरात एक गहरे संकट से गुजर रहा था। एक सदी की सबसे भीषण भूकंप त्रासदी का सामना राज्य ने किया था। उस समय मोदी जी ने अग्रिम पंक्ति में रहकर नेतृत्व किया और गुजरात को भूकंप की परछाई से बाहर निकालकर विकसित गुजरात बनाने का कार्य किया। परिवर्तन किस प्रकार होता है, इसका जीवंत उदाहरण आज कच्छ बन चुका है।

2020 में देश में कोरोना का वैश्विक संकट आया। उस वक्त मोदी जी ने सामूहिक नेतृत्व का परिचय देते हुए न केवल केंद्र सरकार और उसके सभी विभागों को, बल्कि सभी राज्य सरकारों तथा 140 करोड़ देशवासियों को साथ लेकर इतने बड़े संकट से देश को बाहर निकालने का कार्य किया। मोदी जी के नेतृत्व में भारत उन देशों में शामिल हुआ, जिन्होंने सबसे पहले वैक्सीन विकसित की। भारत की कोरोना के विरुद्ध लड़ाई को मॉडल क्राइसिस मैनेजमेंट के रूप में देखा जाने लगा। आज विश्व भर से लोग भारत द्वारा कोरोना संकट के प्रबंधन का अध्ययन करने के लिए आ रहे हैं। चाहे डोकलाम की घटना हो, रूस-यूक्रेन का युद्ध हो या अमेरिका-ईरान के बीच तनाव, विश्व को झकझोर देने वाली सभी घटनाओं के बीच यशस्वी प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने स्थिर भाव से, भारत के हितों को सर्वोपरि रखते हुए निर्णय लिए। जब पूरी दुनिया संकटों से घिरी हुई थी, तब भारत ने अपनी विकास गति को और अधिक बढ़ाया। साथ ही मोदी जी ने एक प्रकार से सहमति की राजनीति को भी आगे बढ़ाने का कार्य किया।

मोदी जी की विशेषता केवल यह नहीं है कि उन्होंने लंबे समय तक शासन किया है। उनकी विशेषता यह है कि इतने लंबे शासनकाल के दौरान अनेक राज्यों के चुनावों में एनडीए परिवार और भारतीय जनता पार्टी के रूप में सफलता प्राप्त की गई तथा लगातार तीन आम चुनावों में जनादेश हासिल कर जनता का विश्वास जीतने का कार्य किया गया है। आज जब पीछे मुड़कर देखा जाता है, तो नेतृत्व की यह 25 वर्षों की यात्रा, लगातार जनता द्वारा चुनी गई सरकारों का नेतृत्व करने वाला यह स्वर्णिम कालखंड, एक अर्थ में मोदी जी की लोकतांत्रिक स्वीकृति की यात्रा है। यह वह यात्रा है, जिसने भारत को हर क्षेत्र में कई मील आगे पहुँचाने का कार्य किया है। मोदी जी ने देश के सार्वजनिक जीवन में अनेक नैतिक मानदंड स्थापित करने का कार्य किया है। जब वर्ष 2014 में वह प्रधानमंत्री बने, तब उन्होंने संसद की सीढ़ियों पर माथा टेककर लोकतंत्र की सबसे बड़ी पंचायत के इस भवन को सेवा के मंदिर के रूप में परिभाषित किया और लंबे समय बाद दुनिया को हमारे संविधान की भावना से परिचित कराया। मोदी जी ने लाल किले की प्राचीर से स्वयं को प्रधानमंत्री के बजाय 'प्रधान सेवक' के रूप में प्रस्तुत किया।

मोदी जी ने संविधान को प्रशासन का धर्मग्रंथ और सरकार चलाने का मार्गदर्शक ग्रंथ मानकर शासन किया है। इस प्रकार उन्होंने संविधान के प्रति सम्मान को और अधिक बढ़ाने का कार्य किया है। मोदी जी ने अपने शासनकाल में गुरु नानक देव जी के सेवा के संदेश को भी चरितार्थ करने का कार्य किया है। समर्थ रामदास ने शासन की एक कल्पना प्रस्तुत की थी 'उपभोग शून्य स्वामी'। माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने इस कल्पना को चरितार्थ करते हुए सदैव 'राष्ट्र प्रथम' के भाव को आगे बढ़ाया। वर्ष 2014 में प्रधानमंत्री बनने के बाद यशस्वी प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने भारत की चुनौतियों को समझा और उनका सामना करने के लिए निश्चित एवं ठोस रणनीति बनाने का कार्य किया। भ्रष्टाचार, पॉलिसी पैरालिसिस, कमजोर निर्णय क्षमता वाला नेतृत्व और कमजोर आर्थिक तंत्र जैसी परिस्थितियों की पृष्ठभूमि में उन्होंने सत्ता संभाली थी। आज ये सभी बातें युवा पीढ़ी के लिए इतिहास बन चुकी हैं। देश में अत्यंत दूरदर्शिता के साथ नीतियाँ बनाने वाला तंत्र विकसित हुआ है।

वर्ष 2022 में, जब आजादी के 75 वर्ष पूर्ण हुए, तब माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने एक बैठक बुलाई थी, जिसमें आजादी के अमृत महोत्सव के आयोजन और उसकी तैयारियों पर चर्चा की गई। हम यह अवश्य कहना चाहते हैं कि जिस दूरदृष्टि के साथ माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने आजादी का अमृत महोत्सव मनाने का निर्णय लिया, उसके कारण देश की सभी उपलब्धियों को दुनिया के सामने रखने का अवसर मिला। इस आयोजन के माध्यम से युवा पीढ़ी को स्वतंत्रता संग्राम से परिचित कराने का कार्य हुआ। भारतीय भाषाओं, भारतीय संस्कृति तथा अनेक गुमनाम स्वतंत्रता सेनानियों को पुनः स्मरण करने और उन्हें नई पीढ़ी के सामने लाने का कार्य भी किया गया। परंतु 'अमृत काल' की संकल्पना ने पूरे परिदृश्य को बदलकर रख दिया। आजादी के 75 वर्ष पूरे होने के उपलक्ष्य में आयोजित समापन कार्यक्रम के दौरान यशस्वी प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने कहा था कि आज से भारत का अमृत काल प्रारंभ हो रहा है। उन्होंने आजादी के 75वें वर्ष से लेकर स्वतंत्रता के 100 वर्ष पूर्ण होने तक की अवधि को अमृत काल के रूप में परिभाषित किया। देखते ही देखते 15 अगस्त 2047 तक विकसित और आत्मनिर्भर भारत की संकल्पना केवल प्रधानमंत्री का विचार नहीं रही, बल्कि आदरणीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने उसे 140 करोड़ देशवासियों का सामूहिक संकल्प बनाने का कार्य किया।

मोदी जी के वर्ष 2047 तक विकसित भारत के संकल्प ने सामूहिक हीन भावना को समाप्त कर 140 करोड़ आत्मविश्वासी नागरिकों वाले राष्ट्र के निर्माण का कार्य किया है। यशस्वी प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी द्वारा प्रस्तुत वर्ष 2047 के विजन को देश का युवा भी स्वीकार कर रहा है। आत्मविश्वासी, समृद्ध, सुरक्षित, शिक्षित और विश्व का नेतृत्व करने वाले भारत का जो रोडमैप उन्होंने देश के सामने रखा है, वह विकसित भारत के निर्माण की दिशा में मार्गदर्शक सिद्ध होगा।

आदरणीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (एनडीए) को

केवल एक राजनीतिक गठबंधन के रूप में नहीं रहने दिया, बल्कि उसे देश की चिंता करने वाले राजनेताओं और संवेदनशील राजनीतिक दलों के एक समूह के रूप में विकसित किया। आज एनडीए 22 सरकारों, 292 लोकसभा सांसदों, 144 राज्यसभा सांसदों, 2315 विधायकों तथा 222 से अधिक विधान परिषद सदस्यों के साथ देश के लगभग 80 प्रतिशत भूभाग और 76 प्रतिशत आबादी पर शासन कर रहा है। यह माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के 12 वर्षों के यशस्वी कार्यकाल का ही परिणाम है। आदरणीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के संवेदनशील नेतृत्व में मात्र 12 वर्षों के भीतर 25 करोड़ लोगों तक घरों में बिजली, शौचालय और पेयजल जैसी बुनियादी सुविधाएँ पहुँचाई गईं। प्रत्येक व्यक्ति के लिए बैंक खाते खोले गए, प्रति माह 5 किलोग्राम मुफ्त राशन की व्यवस्था की गई, 5 लाख रुपये तक के इलाज की सुविधा उपलब्ध कराई गई तथा गैस कनेक्शन प्रदान किए गए। इसके अतिरिक्त, 3 करोड़ लोगों तक पहली बार बिजली पहुँचाने का कार्य भी किया गया। आज 3 करोड़ लखपति दीदी इस संवेदनशीलता का अनुभव कर रही हैं। हमने स्वयं अनेक चुनाव अभियानों के दौरान गरीबों को यह कहते हुए सुना है कि भारत में गरीबों के प्रति इतनी संवेदनशीलता रखने वाला प्रधानमंत्री पहले कभी नहीं आया।

आज आकांक्षी जिले माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के शासन मॉडल के परिचायक बन चुके हैं। जो जिले कभी कई राज्यों को बीमारू राज्यों की श्रेणी में पहुँचाने के लिए जिम्मेदार माने जाते थे, आज उन्हीं जिलों में देश के सर्वश्रेष्ठ जिलों के साथ प्रतिस्पर्धा करने का हौसला, इच्छा और आकांक्षा दिखाई देती है। यदि लोग प्रत्येक सप्ताह या प्रत्येक माह आकांक्षी जिलों की रैंकिंग सूची को देखें, तो पता चलेगा कि कितनी तेजी से इन सूचियों में परिवर्तन होता है। आज प्रत्येक जिला देश का सर्वश्रेष्ठ जिला बनने की प्रतिस्पर्धा में शामिल होने का प्रयास कर रहा है। मोदी जी ने लोकप्रिय लोकतंत्र को भी पुनर्परिभाषित करने का कार्य किया है। एक समय था जब चार दशकों के राजनीतिक परिदृश्य को देखा जाता था, तो देश की राजनीति वंशवाद, जातिवाद और तुष्टीकरण से प्रभावित दिखाई देती थी। इन तीनों प्रवृत्तियों ने लंबे समय तक देश के लोकतंत्र को पंगु बनाने का कार्य किया था। मोदी जी के एक दशक के कार्यकाल ने राजनीति को जातिवाद, वंशवाद और तुष्टीकरण से मुक्त करने की दिशा में आगे बढ़ाया है तथा 'पॉलिटिक्स ऑफ परफॉर्मेंस' को स्थापित करने का कार्य किया है। हमारे विचार में भारतीय लोकतंत्र के लिए यह सबसे बड़ा बूस्टर डोज है। आज जनता जाति, धर्म और परिवारवादी राजनीति की सीमाओं से ऊपर उठकर विकास की आकांक्षी बनी है और प्रदर्शन आधारित राजनीति को प्राथमिकता दे रही है।

यह सब माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व का ही परिणाम है। देश के सामने अनेक ऐसी समस्याएँ थीं, जिन्हें उन्होंने सहजता से और व्यापक सहमति के साथ समाप्त करने का कार्य किया तथा अनेक मामलों में लोगों को इसका आभास भी नहीं हुआ कि इतने बड़े परिवर्तन कितनी सरलता से संभव हो गए। धारा 370 और 35ए को हटाना, तीन तलाक की प्रथा को समाप्त करना, वर्षों से शरणार्थी के रूप में रह रहे लोगों को भारतीय नागरिकता की पहचान प्रदान करने के लिए नागरिकता संशोधन अधिनियम (सीएए) लागू करना तथा 160 वर्ष पुराने अंग्रेजों के कानूनों को समाप्त कर भारतीय न्याय संहिता और भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता को लागू करना, ऐसे अनेक ऐतिहासिक निर्णय रहे हैं। नक्सल मुक्त भारत का संकल्प अपने आप में ऐसा लक्ष्य था, जिसे सुनकर अनेक लोगों को आश्चर्य होता था कि यह कैसे संभव होगा। लेकिन देखते ही देखते दशकों पुरानी नक्सलवाद की समस्या काफी हद तक समाप्ति की ओर बढ़ी और वह पूरा क्षेत्र आज विकास की मुख्यधारा में आगे बढ़ रहा है। आतंकवाद के प्रति जीरो टॉलरेंस की नीति, सर्जिकल स्ट्राइक, एयर स्ट्राइक और ऑपरेशन सिंदूर जैसे कदमों ने न केवल भारत की सुरक्षा नीति को नई दिशा दी, बल्कि अनेक देशों की रक्षा नीति को भी नया दृष्टिकोण प्रदान करने का कार्य किया है। इसके साथ ही सहकारिता मंत्रालय का गठन, पशुपालन, डेयरी एवं मत्स्य पालन से जुड़े विभागों को सशक्त बनाने की पहल, किसानों को 50 प्रतिशत लाभकारी मूल्य पर आधारित

न्यूनतम समर्थन मूल्य (एमएसपी) तथा कृषि और आधारभूत संरचना के सुदृढ़ विकास ने मोदी जी को किसानों का प्रिय नेता बनाया है।

भारत, जो कभी 'फ्रेजाइल फाइव' का हिस्सा माना जाता था, आज विश्व की शीर्ष पाँच अर्थव्यवस्थाओं में शामिल हो चुका है। बैंकिंग सुधार कभी एक स्वप्न की तरह प्रतीत होते थे, लेकिन बैंकों के विलय और एनपीए संकट से निपटने की प्रभावी रणनीति के कारण आज देश के बैंक लाभ में हैं तथा एनपीए का स्तर भी अत्यंत नियंत्रित स्थिति में है। जनधन-आधार-मोबाइल (जैम) ट्रिनिटी, रिकॉर्ड प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (एफडीआई), निवेश को बढ़ावा देने के लिए उत्पादन आधारित प्रोत्साहन (पीएलआई) योजनाएँ तथा नारी शक्ति वंदन अधिनियम जैसे कदम मोदी जी की दूरदर्शी सोच के उदाहरण हैं। नारी शक्ति वंदन अधिनियम के माध्यम से मातृशक्ति को सम्मान और नीति निर्माण में उचित स्थान देने का कार्य किया गया है। एनडीए द्वारा महिलाओं को 33 प्रतिशत आरक्षण देने का जो संकल्प लिया गया है, वह भी मोदी जी के नेतृत्व में पूर्ण होगा। इसके साथ ही सेना, पुलिस, वैज्ञानिक अनुसंधान, स्टार्टअप, ड्रोन और खेल जैसे क्षेत्रों में भी महिलाओं को समान अवसर और भागीदारी सुनिश्चित करने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम उठाए गए हैं।

मोदी जी ने 'खेलो इंडिया' के माध्यम से खेल क्षेत्र में भी भारत को लंबी छलांग लगाने का अवसर प्रदान किया है। अब वह दिन दूर नहीं है, जब ओलंपिक और अन्य अंतरराष्ट्रीय खेल प्रतियोगिताओं की पदक तालिका में भारत का तिरंगा सबसे ऊपर दिखाई देगा और देशवासी उस गौरवपूर्ण क्षण के साक्षी बनेंगे। यदि विश्व भर की सरकारों का अध्ययन किया जाए, तो भी यह स्पष्ट होगा कि मात्र 12 वर्षों में सड़क, रेल, हवाई अड्डों, बंदरगाहों और डिजिटल कनेक्टिविटी के क्षेत्र में इतनी बड़ी छलांग किसी अन्य देश ने नहीं लगाई है, जितनी मोदी जी के नेतृत्व में भारत ने लगाई है। वंदे भारत ट्रेनें, एक्सप्रेस वे, फ्रेट कॉरिडोर, मेट्रो नेटवर्क और जलमार्ग आज भारत की कनेक्टिविटी के इतिहास में मील का पत्थर बनकर खड़े हैं।

सीमावर्ती क्षेत्रों में सड़कों का जो व्यापक नेटवर्क आदरणीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में विकसित किया गया है, उसने न केवल पर्यटन को बढ़ावा दिया है, बल्कि किसी भी चुनौती या दुश्मन की हिमाकत का सामना करने के लिए हमारी सेनाओं को वर्ष के 365 दिन और चौबीसों घंटे आवश्यक सुविधाएँ एवं सुगम पहुँच उपलब्ध कराने का कार्य भी किया है। जनजातीय विकास के क्षेत्र में एकलव्य विद्यालय, पीएम जनमन, वाइब्रेंट विलेज कार्यक्रम तथा बस्तर क्षेत्र के विकास जैसे अनेक ऐतिहासिक कार्य किए गए हैं। आज रामलला भव्य और गगनचुंबी मंदिर में विराजमान हैं, जो करोड़ों श्रद्धालुओं के लिए गौरव का विषय है। मोदी जी के नेतृत्व में काशी विश्वनाथ धाम, महाकाल लोक और केदार धाम का पुनर्निर्माण एवं पुनर्विकास किया गया। जिन लोगों ने संसद को सेंगोल विहीन किया था, उनकी उपस्थिति में संसद भवन में पवित्र सेंगोल की पुनः स्थापना कर यह संदेश दिया गया कि यह देश अपनी भारतीय परंपराओं और सांस्कृतिक मूल्यों के अनुरूप आगे बढ़ेगा। जी-20 के सफल आयोजन के माध्यम से मोदी जी ने भारतीय संस्कृति और भारत की सभ्यतागत विरासत से पूरी दुनिया को परिचित कराने का कार्य किया है।

अंतरिक्ष क्षेत्र में भी भारत ने उल्लेखनीय प्रगति की है। चंद्रयान-3 की सफलता के बाद गगनयान मिशन, मानव अंतरिक्ष कार्यक्रम की दिशा में बढ़ते कदम तथा स्पेस स्टार्टअप्स की सक्रिय भागीदारी ने यह सिद्ध किया है कि स्वतंत्रता के 75 वर्षों के बाद भारत ने अंतरिक्ष क्षेत्र में एक बड़ी छलांग लगाई है। इस उपलब्धि के पीछे मोदी जी का दूरदर्शी नेतृत्व है। अनुसंधान एवं विकास के क्षेत्र में भारत लंबे समय तक अपेक्षाकृत पीछे रहा था, लेकिन अब रिसर्च, डेवलपमेंट और इनोवेशन को बढ़ावा देने के लिए 1 लाख करोड़ रुपये की आरडीआई योजना प्रारंभ की गई है। आने वाले समय में यह योजना विश्वस्तरीय नवाचार, निवेश और समृद्धि को भारत की ओर आकर्षित करने का राजमार्ग सिद्ध होगी। इंडिया सेमीकंडक्टर मिशन सफल हो चुका है। भारत में सेमीकंडक्टर का उत्पादन भी शुरू हो चुका है। नेशनल क्वांटम मिशन हमारे युवाओं को अपनी प्रतिभा दिखाने का अवसर देने के साथ-साथ क्वांटम मिशन के माध्यम से आने वाले 25 वर्षों के बाद के विश्व में भारत नेतृत्व करे, इसके लिए भी रास्ता प्रशस्त करता है। रक्षा उत्पादन और निर्यात में बढ़ोत्तरी एक बहुत बड़ी उपलब्धि है। एक समय भारत पूर्ण रूप से विश्व पर निर्भर था, जबकि आज भारत विश्व में अपने उत्पाद भेज रहा है।

स्टार्टअप, पीएम गति शक्ति योजना की कल्पना, राष्ट्रीय राजमार्गों का विकास, ग्रीन हाइड्रोजन और नवीकरणीय ऊर्जा के मिशन, ग्लोबल बायोफ्यूल अलायंस, इलेक्ट्रॉनिक निर्यात के लिए पीएलआई योजना, सागरमाला और अंतरदेशीय जलमार्ग जैसी पहलों ने देश को आने वाले तीन दशकों के लिए विकास के मार्ग पर आगे बढ़ाने का काम किया है। चीफ ऑफ डिफेंस स्टाफ के पद की स्थापना, वन रैंक वन पेंशन के माध्यम से सेना के जवानों का कल्याण तथा वैक्सीन मित्र नीति के माध्यम से वैश्विक संकट के समय भारत की एक विश्वसनीय मित्र की छवि को दुनिया भर में स्थापित करने का कार्य भी माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने किया है। इसी का परिणाम है कि 32 से अधिक देशों ने अपना सर्वोच्च सम्मान प्रदान कर यशस्वी प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी और भारत को सम्मानित करने का गौरव प्राप्त किया है। साथ ही, 38 देशों ने भारत के साथ व्यापारिक समझौते कर हमारे व्यापार के नए मार्ग खोले हैं और भारत को वैश्विक उत्पादन केंद्र बनने का एक बड़ा अवसर प्रदान किया है। आज भारत ग्लोबल साउथ की आवाज, विश्व में एक विश्वसनीय और मजबूत लोकतांत्रिक देश तथा एक उभरती हुई अग्रणी शक्ति के रूप में अपनी पहचान स्थापित कर पाया है। यह माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व का ही परिणाम है।

इसी वर्ष 7 अक्टूबर को माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के मुख्यमंत्री और प्रधानमंत्री के रूप में सार्वजनिक जीवन के 25 वर्ष पूर्ण होंगे। लोकतांत्रिक देशों में ऐसा कोई उदाहरण दुर्लभ होगा, जहाँ एक व्यक्ति अत्यंत साधारण और गरीब परिवार से निकलकर, बिना किसी जातिगत आधार और बिना किसी राजनीतिक पारिवारिक पृष्ठभूमि के, नीचे से अपनी यात्रा प्रारंभ करते हुए देश के सर्वोच्च पद तक पहुँचे और 25 वर्षों तक राज्य तथा देश का नेतृत्व करे।

माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने अपने अथक प्रयासों से 25 वर्षों तक बिना एक भी दिन का अवकाश लिए लगातार 18 से 20 घंटे कार्य किया है। उन्होंने अपने सार्वजनिक जीवन में कभी भ्रष्टाचार का कोई दाग नहीं लगने दिया और अपने परिवार तक सीमित रहने के बजाय पूरे देश को अपना परिवार माना। मोदी जी के नेतृत्व, उनके कार्यकाल और उनकी उपलब्धियों की सभी लोग हृदय से प्रशंसा और अनुमोदन करते हैं तथा उन्हें प्रेरणा का स्त्रोत मानते हैं। ■

# भारत विश्व की चौथी और सबसे तेज बढ़ती अर्थव्यवस्था - जगत प्रकाश नड्डा

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में भारत ने पिछले 12 वर्षों में आर्थिक, बुनियादी ढाँचे और सुशासन के क्षेत्र में उल्लेखनीय प्रगति की है।

- **यशस्वी प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने 4,398 दिनों के साथ पंडित जवाहरलाल नेहरू का रिकॉर्ड भी पीछे छोड़ दिया है और वह सबसे लंबे समय तक प्रधानमंत्री के रूप में सेवा कर रहे हैं।**

- **मोदी सरकार ने सड़क, रेलवे, स्वास्थ्य और कनेक्टिविटी के क्षेत्र में ऐतिहासिक विकास कार्य किए हैं। एम्स, वंदे भारत ट्रेन, फोर लेन सड़कें और मेडिकल कॉलेज इसका प्रमाण हैं।**

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में पिछले 12 वर्षों से देश निरंतर आगे बढ़ रहा है और आजाद भारत में सबसे लंबी अवधि तक प्रधान सेवक के रूप में सेवा करने का सौभाग्य आदरणीय नरेन्द्र मोदी जी को मिला है और मिल रहा है। यशस्वी प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने 4,398 दिनों के साथ पंडित जवाहरलाल नेहरू जी का रिकॉर्ड भी पीछे छोड़ दिया है और वह सबसे लंबे समय तक प्रधानमंत्री के रूप में सेवा कर रहे हैं।

जनता का आशीर्वाद भारतीय जनता पार्टी को हमेशा मिलता रहा है। इस आशीर्वाद के साथ-साथ यशस्वी प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में देश ने बड़ी प्रगति की है और विकास की एक लंबी छलांग लगाई है। यदि अर्थतंत्र की दृष्टि से देखा जाए, तो आज भारत एक मजबूत आर्थिक ढाँचे के साथ खड़ा दिखाई देता है। भारत 'फ्रेजाइल फाइव' से निकलकर विश्व की चौथी बड़ी और फास्टेस्ट ग्रोइंग इकॉनमी के रूप में उभरकर सामने आया है। जो महँगाई कभी डबल डिजिट में थी, वह आज पूरी तरह नियंत्रण में है। देश जिस पॉलिसी पैरालिसिस के दौर से गुजर रहा था, उससे निकलकर आज माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में एक मजबूत और निर्णायक सरकार दिखाई देती है। इंटरनेशनल मॉनेटरी फंड, वर्ल्ड बैंक तथा अन्य अंतर्राष्ट्रीय इंस्टीट्यूशंस ने भी भारत को एक मजबूत इकॉनमी के रूप में देखा है। कोई भारत को द ब्राइट स्पॉट के रूप में देखता है, तो कोई वर्ल्डस स्लो ग्रोथ में द ओनली होप के रूप में भारत को देखता है। आर्थिक दृष्टि से भारत ने एक मजबूत आर्थिक संरचना का निर्माण करते हुए स्वयं को एक स्टेबल इकॉनमी से आगे बढ़ाने का कार्य किया है। अनेक ऐसे निर्णय लिए गए हैं, जिन्होंने भारत को वैश्विक स्तर पर स्थापित करने का काम किया है। चाहे वह डीबीटी अर्थात डायरेक्ट बेनिफिट ट्रांसफर का विषय हो। लगभग 51 लाख करोड़ रुपये डीबीटी के माध्यम से वितरित किए गए हैं और लगभग 4.3 लाख करोड़ रुपये के उस लीकेज को रोका गया है, जो पहले होता था। इससे यह समझा जा सकता है कि आर्थिक दृष्टि से देश को कितना बड़ा लाभ हुआ है। ▪

# मोदी जी ने लिखा नये भारत के निर्माण का स्वर्णिम अध्याय - डॉ. मोहन यादव

## प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व के 12 वर्ष

भारत के इतिहास में श्री नरेन्द्र मोदी का लगातार 3 बार प्रधानमंत्री बनना देश के लिये महत्वपूर्ण उपलब्धि है। लगातार 3 बार सत्ता में आना श्री मोदी की कार्यप्रणाली, सभी को साथ लेकर चलना और देश को सुरक्षा देने के साथ आर्थिक रूप से मजबूत बनाना ही उनकी विशेषता रही है। यशस्वी प्रधानमंत्री जी की इन्हीं विशेष खूबियों ने नये भारत के निर्माण का स्वर्णिम अध्याय लिखा है।

यशस्वी श्री नरेन्द्र मोदी जी ने वर्ष 2014 में जब प्रधानमंत्री पद की शपथ ली थी, तब देश की जनता ने केवल एक सरकार नहीं चुनी थी, बल्कि शासन की एक नई कार्यशैली और राजनीतिक संस्कृति की अपेक्षा भी व्यक्त की थी। बारह वर्ष बाद इस यात्रा को केवल योजनाओं, आंकड़ों और उपलब्धियों के आधार पर नहीं, बल्कि उस व्यापक दृष्टिकोण के आधार पर समझना अधिक उचित होगा, जिसने शासन की सोच को प्रभावित किया। यदि इन बारह वर्षों को तीन शब्दों में समेटना हो, तो वे शब्द होंगे- सेवा, सुशासन और संकल्प।

प्रधानमंत्री जी की सोच में सेवा का अर्थ केवल कल्याणकारी योजनाएं चलाना नहीं रहा, बल्कि सेवा का अर्थ शासन स्वयं को जनता का संरक्षक और सेवक के रूप में हैं। इस दृष्टि से पिछले बारह वर्षों में शासन की प्राथमिकताओं में अंतिम व्यक्ति तक पहुंचने की उन्होंने चिंता की है। गरीब, किसान, महिला, युवा और वंचित वर्ग को केवल वोट बैंक के रूप में नहीं, बल्कि विकास प्रक्रिया को केंद्र में रखने की कोशिश की जो सफलता के शिखर तक जा पहुंची। यही सोच पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी के एकात्म मानववाद में भी दिखाई देती है। मोदी जी की सरकार ने बार-बार यह संदेश दिया है कि विकास का वास्तविक अर्थ तब है, जब उसका लाभ समाज के सबसे कमजोर व्यक्ति तक पहुंचे।

प्रधानमंत्री जी की प्रमुखता में सुशासन एक प्रमुख केन्द्र बना। सुशासन का अर्थ सरकार को अधिक पारदर्शी, उत्तरदायी और प्रभावी बनाना है। डिजिटल तकनीक का उपयोग इसी दर्शन का हिस्सा था। तकनीक को केवल आधुनिकता का प्रतीक नहीं, बल्कि सुशासन का माध्यम माना गया। शासन और नागरिक के बीच की दूरी कम करने, प्रक्रियाओं को सरल बनाने तथा निर्णयों को अधिक पारदर्शी बनाने की दिशा में लगातार प्रयास किये गये जो लगातार जारी हैं। इसका मूल ध्येय यह है कि आम नागरिक को सरल और सहज तरीके से उसके अधिकार मिलें और योजनाओं का लाभ सहजता से मिल सके।

श्री मोदी जी देश के पहले ऐसे प्रधानमंत्री हैं जो लोकतंत्र में संवाद को आवश्यक मानते हैं। उनका समय-समय पर अलग-अलग वर्गों से सीधा संवाद करना और उन्हें मार्गदर्शन देना अद्‌भुत है। वे युवाओं के लिये अभिभावक की भूमिका भी निभाते हैं। छात्र-छात्राओं को परीक्षा के समय आत्म मजबूत करने के लिये परीक्षा पर चर्चा जैसे विषयों पर उनका संवाद लगातार जारी रहता है। इसी क्रम में उनकी मन की बात कार्यक्रम को पूरा देश बड़े आत्मीय तरीके से आत्मसात करता है। यही हमारे यशस्वी प्रधानमंत्री की विशेषता है।

हमारे यशस्वी प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी की सरकार की कार्यशैली में यह स्पष्ट दिखाई देता है कि बड़े निर्णयों से बचने के बजाय उन्हें समाधान तक कैसे पहुंचाया जाए? दरअसल, इसे ही निर्णायक नेतृत्व कहते हैं। यह निर्विवाद है कि निर्णय लेने की क्षमता इस शासनकाल की प्रमुख पहचान रही है।

इक्कीसवीं सदी के तीसरे दशक में मोदी सरकार ने विकसित भारत को राष्ट्रीय संकल्प के रूप में प्रस्तुत किया। यह संकल्प केवल आर्थिक प्रगति तक सीमित नहीं है। इसके भीतर आत्मविश्वास, आत्मनिर्भरता और राष्ट्रीय गौरव की भावना भी जुड़ी हुई है। पिछले बारह वर्षों में बार-बार यह संदेश दिया गया कि भारत को केवल विकासशील राष्ट्र के रूप में संतुष्ट नहीं होना चाहिए, बल्कि उसे विश्व की अग्रणी शक्तियों में स्थान प्राप्त करना चाहिए। यह दृष्टिकोण भारतीय समाज में एक नए आत्मविश्वास का निर्माण करता है।

यशस्वी प्रधानमंत्री श्री मोदी जी से प्रेरणा लेकर हमने भी विकसित मध्यप्रदेश का सपना देखा। यह बताते हुए मन भाव-विभोर है कि मोदी जी का हर कदम पर हर निर्णय पर मार्गदर्शन, स्नेह और आशीर्वाद मिला। चाहे वर्षों से लंबित केन-बेतवा और पार्वती-कालीसिंध-चंबल लिंक परियोजना हो या पीएम मित्र पार्क, उन्होंने आगे बढ़कर परेशानियों को दूर किया। उनके जैसा नेतृत्व दुर्लभ है। हाल ही में देश के सात राज्यों में पीएम मित्र पार्क बनाने का निर्णय हुआ, तो उस सूची में मध्यप्रदेश को भी रखा गया। यह अति प्रसन्नता का विषय है कि अब तक सिर्फ मध्य प्रदेश में ही पीएम मित्र पार्क का भूमिपूजन हुआ है और यह गौरव का विषय रहा कि धार में पार्क के भूमिपूजन में प्रधानमंत्री जी शामिल हुए। यह सब मध्यप्रदेश से उनके विशेष लगाव का परिणाम ही है।

प्रदेश में साइबर तहसील का सफल क्रियान्वयन हो या भोपाल और इंदौर में मेट्रो रेल, सब प्रधानमंत्री जी के स्नेह-आशीर्वाद-मार्गदर्शन का ही परिणाम है। आज प्रदेश में नौ एयरपोर्ट हैं, तो इसके पीछे भी उनका ही मार्गदर्शन है। आज हमारा मध्य प्रदेश नक्सल मुक्त है, तो इसके पीछे उनका ही दिशा-निर्देश है। उन्होंने समय-समय पर समझाया,तो चेताया भी। उन्होंने कहा कि गोली का जवाब गोली से दो पर जो लोग बंदूक-हिंसा छोड़कर मुख्यधारा में लौट रहे हैं, उनके लिए बेहतर से बेहतर पुनर्वास की व्यवस्था भी हो। उनकी सलाह-चेतावनी का ही सुफल है कि आज मध्यप्रदेश लाल सलाम को आखिरी सलाम कह चुका है।

प्रधानमंत्री जी के मार्गदर्शन में ही मध्य प्रदेश में उद्योगों का जाल बिछ रहा है, लाखों करोड़ का निवेश हो रहा है। फरवरी 2025 में भोपाल में आयोजित ग्लोबल इंवेस्टर्स समिट में शामिल होना, उनका विशेष स्नेह ही तो दर्शाता है। उन्होंने हमें संवेदना की सीख दी है। उनकी सीख ही थी कि हमने अपने शुरूआती निर्णयों में ही इंदौर के हुकुमचंद मिल के कामगारों को उनका बकाया अधिकार दिलवाने में सफलता हासिल की। कामगारों को चेक सौंपने के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम को प्रधानमंत्री जी ने वर्चुअली संबोधित भी किया था।

मध्य प्रदेश के सभी 55 जिलों में अग्रणी सरकारी कालेजों को प्रधानमंत्री कालेज आफ एक्सीलेंस के रूप में विकसित करना हो या हाइवे का विकास हो, हर मोर्चे पर प्रधानमंत्री जी ने आगे बढ़कर रूचि दिखाई, मार्गदर्शन-मदद और स्नेह देते रहे। मुझे कहने में तनिक भी संकोच नहीं है कि वे कालजयी, त्रिकालदर्शी नेता हैं। हमारे मार्गदर्शक और संरक्षक मोदी जी के कार्यकाल की एक महत्वपूर्ण विशेषता सांस्कृतिक चेतना का पुनरूत्थान भी है। स्वतंत्रता के बाद भारत ने आधुनिकता को अपनाया, लेकिन अपनी सांस्कृतिक पहचान को लेकर संकोच दिखाई दिया।

पिछले बारह वर्षों में भारतीयता, विरासत और सभ्यता पर गर्व करने का भाव अधिक मुखर होकर सामने आया है। यह विचार केवल धार्मिक आस्था तक सीमित नहीं है, बल्कि भारत की हजारों वर्षों पुरानी सांस्कृतिक यात्रा को आधुनिक राष्ट्र निर्माण से जोड़ने का प्रयास भी है। अयोध्या में राम मंदिर का निर्माण हो, काशी का पुनर्विकास हो, या विश्व मंचों पर भारतीय परंपराओं और योग का प्रचार-इन सभी के पीछे सांस्कृतिक आत्म विश्वास का वही भाव दिखाई देता है। उनसे प्रेरणा प्राप्त कर मध्यप्रदेश भी अपनी विरासत को संजो रहा है। किसी भी राष्ट्र की शक्ति केवल उसकी अर्थव्यवस्था या सेना में नहीं होती। उसकी शक्ति उसके आत्म विश्वास में भी होती है। इस दृष्टि से सांस्कृतिक पुनर्जागरण मोदी जी के कार्यकाल की एक महत्वपूर्ण विशेषता है।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के 12 वर्षों को यदि केवल योजनाओं और आंकड़ों से समझने का प्रयास किया जाए, तो तस्वीर अधूरी रह जाएगी। इन 12 वर्षों का वास्तविक महत्व उस सोच में है, जिसने शासन को सेवा से, प्रशासन को सुशासन से और राजनीति को संकल्प से जोड़ने का सफल प्रयास किया है। यह कालखंड भारत के आत्म विश्वास, आकांक्षाओं और राष्ट्रीय चेतना के पुनर्जागरण का कालखंड रहा है। यह नए भारत की आधार शिला है। ▪

**(लेखक मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री हैं)**

# मन का संतोष

**अटल बिहारी वाजपेयी**

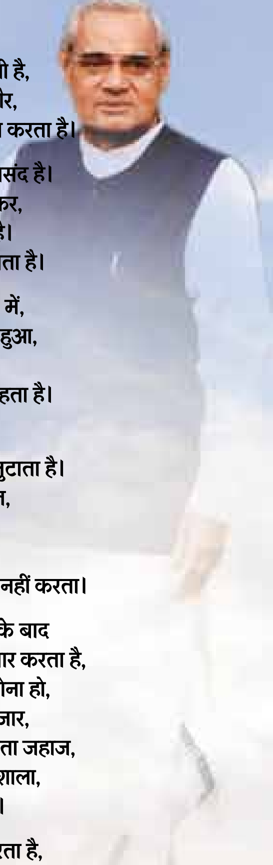

**पृथिवी पर**
**मनुष्य ही ऐसा एक प्राणी है,**
**जो भीड़ में अकेला, और,**
**अकेले में भीड़ से घिरा अनुभव करता है।**

**मनुष्य को झुण्ड में रहना पसंद है।**
**घर-परिवार से प्रारम्भ कर,**
**वह बस्तियाँ बसाता है।**
**गली-ग्राम-पुर-नगर सजाता है।**

**सभ्यता की निष्ठुर दौड़ में,**
**संस्कृति को पीछे छोड़ता हुआ,**
**प्रकृति पर विजय,**
**मृत्यु को मुट्ठी में करना चाहता है।**

**अपनी रक्षा के लिए**
**औरों के विनाश के सामान जुटाता है।**
**आकाश को अभिशप्त,**
**धरती को निर्वसन,**
**वायु को विषाक्त,**
**जल को दूषित करने में संकोच नहीं करता।**

**किंतु, यह सब कुछ करने के बाद**
**जब वह एकान्त में बैठकर विचार करता है,**
**वह एकांत, फिर घर का कोना हो,**
**या कोलाहल से भरा बाजार,**
**या प्रकाश की गति से तेज उड़ता जहाज,**
**या कोई वैज्ञानिक प्रयोगशाला,**
**या मंदिर, या मरघट।**

**जब वह आत्मालोचन करता है,**
**मन की परतें खोलता है,**
**स्वयं से बोलता है,**
**हानि-लाभ का लेखा-जोखा नहीं,**
**क्या खोया, क्या पाया का हिसाब भी नहीं,**
**जब वह पूरी जिंदगी को ही तौलता है,**
**अपनी कसौटी पर स्वयं को ही कसता है,**
**निर्ममता से निरखता, परखता है,**
**तब वह अपने मन से क्या कहता है!**
**इसी का महत्व है, यही उसका सत्य है।**

**अंतिम यात्रा के अवसर पर,**
**विदा की वेला में,**
**जब सबका साथ छूटने लगता है,**
**शरीर भी साथ नहीं देता,**
**तब आत्मग्लानि से मुक्त**
**यदि कोई हाथ उठाकर यह कह सकता है**
**कि उसने जीवन में जो कुछ किया,**
**सही समझकर किया,**
**किसी को जानबूझकर चोट पहुँचाने के लिए नहीं,**
**सहज कर्म समझकर किया,**
**तो उसका अस्तित्व सार्थक है,**
**उसका जीवन सफल है।**

**उसी के लिए यह कहावत बनी है,**
**मन चंगा तो कठौती में गंगाजल है।** ▪

# प्रधानमंत्री जी ने गरीबों की जिंदगी बदली - हेमंत खण्डेलवाल

- **प्रधानमंत्री जी के नेतृत्व में विकास अंतिम पंक्ति के अंतिम व्यक्ति तक पहुंचा है।**
- **प्रधानमंत्री जी ने 12 वर्षों में भारत को विश्व का नेतृत्व करने की दिशा में आगे बढ़ाया।**

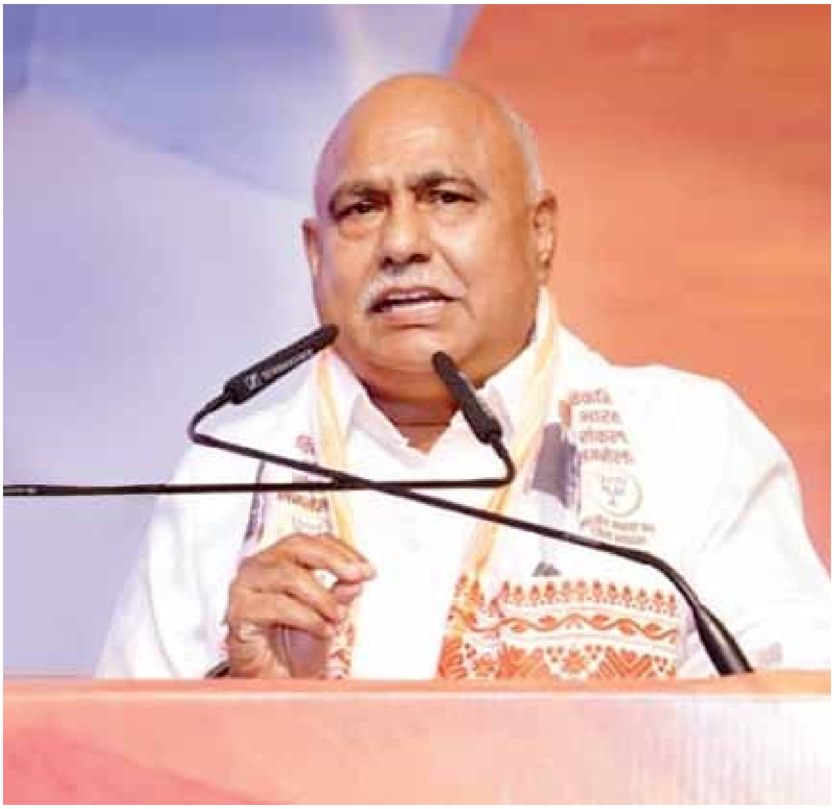

प्रधानमंत्री जी सेवा, सुशासन, गरीब कल्याण व राष्ट्र निर्माण का स्वर्णिम अध्याय लिख रहे हैं।

पं. दीनदयाल जी के अंत्योदय के सपने को साकार कर रही भाजपा सरकार।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में सरकार ने समाज के हर वर्ग के कल्याण के लिए कार्य करने के साथ करोड़ों परिवारों की जिंदगी बदलने का कार्य किया गया। प्रधानमंत्री जी ने गरीब कल्याण को सर्वोच्च प्राथमिकता देते हुए प्रधानमंत्री आवास योजना के अंतर्गत करोड़ों गरीब परिवारों को पक्के मकान उपलब्ध कराए हैं। आयुष्मान भारत योजना के माध्यम से 60 करोड़ लोगों को पांच लाख रुपये तक के मुफ्त इलाज की सुविधा दी गई है। स्वच्छ भारत मिशन के तहत 12 करोड़ से अधिक शौचालय बनाकर माताओं-बहनों को सम्मान और सुरक्षा प्रदान की गई है। केंद्र सरकार की अनेक जनकल्याणकारी योजनाओं से करोड़ों लोगों के जीवन में सकारात्मक परिवर्तन आया है। प्रधानमंत्री जी ने भारत की सांस्कृतिक विरासत को पुनर्जीवित करने का कार्य किया है। अयोध्या में भव्य श्रीराम मंदिर निर्माण, काशी विश्वनाथ कॉरिडोर, महाकाल लोक और केदारनाथ धाम का पुनर्विकास भारत की सांस्कृतिक चेतना को नई ऊंचाइयों तक ले जाने वाले कार्य हैं। लखपति दीदी और ड्रोन दीदी जैसी योजनाओं ने ग्रामीण महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने का कार्य किया है। डिजिटल इंडिया और स्टार्टअप इंडिया ने युवाओं को नए अवसर प्रदान किए हैं।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में केंद्र सरकार के 12 वर्ष सेवा, सुशासन, गरीब कल्याण और राष्ट्र निर्माण के स्वर्णिम अध्याय के रूप में दर्ज हुए हैं। इन वर्षों में भारत ने विकास, आत्मनिर्भरता, वैश्विक प्रतिष्ठा और जनकल्याण के क्षेत्र में अभूतपूर्व उपलब्धियां हासिल की हैं। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने विश्व को यह विश्वास दिलाया है कि 21वीं सदी भारत की सदी है और आने वाले समय में भारत विश्व नेतृत्व की महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा। आज विदेशों में रहने वाले भारतीय भी गर्व के साथ अपनी भारतीय पहचान व्यक्त करते हैं और देश की बढ़ती प्रतिष्ठा को अपनी उपलब्धि मानते हैं। प्रधानमंत्री जी ने पिछले 12 वर्षों में भारत को विश्व का नेतृत्व करने की दिशा में तेजी से आगे बढ़ाया है। भारत का वैश्विक स्तर पर मान-सम्मान बढ़ा है। प्रधानमंत्री जी ने प्रत्येक नागरिक के सम्मान, सुरक्षा और समृद्धि को केंद्र में रखकर नीतियां बनाई हैं। प्रधानमंत्री जी के नेतृत्व में विकसित भारत-2047 की मजबूत नींव रखी जा चुकी है। प्रबुद्धजन सरकार की उपलब्धियों और विकास कार्यों को समाज के प्रत्येक वर्ग तक पहुंचाने में सक्रिय भूमिका निभाएं। ■

# देश का लक्ष्य-विकसित भारत

## - डॉ. महेन्द्र सिंह

- **मुख्यमंत्री के नेतृत्व में मध्यप्रदेश विकास के नित नए आयाम स्थापित कर रहा है।**
- **विकसित मध्यप्रदेश के निर्माण में सभी का योगदान आवश्यक।**

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में विश्व में भारत का मान-सम्मान बढ़ा।

विकसित भारत के संकल्प को पूरा करने के लिए सबको मिलकर कार्य करना होगा।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में भारत आत्मविश्वास के साथ विकसित भारत के लक्ष्य की ओर तेजी से अग्रसर हुआ है। आज भारत विश्व की अग्रणी अर्थव्यवस्थाओं में शामिल है और आत्मनिर्भर भारत अभियान के माध्यम से देश विकास की नई ऊंचाइयों को छू रहा है। आधारभूत संरचना, तकनीक, नवाचार, उद्योग, कृषि और सामाजिक कल्याण के क्षेत्रों में अभूतपूर्व प्रगति हुई है। आज भारत की संस्कृ ति, सभ्यता, लोकतांत्रिक मूल्यों और विकास मॉडल को पूरे विश्व में सम्मान की दृष्टि से देखा जा रहा है। भारत का गौरवशाली इतिहास वैदिक काल से लेकर महात्मा बुद्ध, महावीर स्वामी, आचार्य चाणक्य, महाराणा प्रताप, छत्रपति शिवाजी महाराज, महात्मा गांधी, बाबा साहब डॉ. भीमराव आंबेडकर और श्रद्धेय अटल बिहारी वाजपेयी जी जैसे महापुरुषों की प्रेरणा से समृद्ध रहा है। प्रधानमंत्री जी के नेतृत्व में देश उसी गौरवशाली परंपरा को आगे बढ़ाते हुए नई ऊंचाइयों को प्राप्त कर रहा है। पिछले वर्षों में भारत की अंतरराष्ट्रीय प्रतिष्ठा में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। विश्व के प्रमुख देशों के साथ भारत के संबंध और अधिक मजबूत हुए हैं तथा वैश्विक मंचों पर भारत की भूमिका प्रभावी हुई है। प्रधानमंत्री जी ने विदेशों में भी भारत की सांस्कृतिक विरासत, आध्यात्मिक परंपराओं और लोकतांत्रिक मूल्यों का गौरवपूर्ण परिचय कराया है।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने विकसित भारत-2047 का जो संकल्प देश के सामने रखा है, वह केवल सरकार का नहीं बल्कि 140 करोड़ देशवासियों का संकल्प है। इस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए समाज के प्रत्येक वर्ग को अपनी सक्रिय भूमिका निभानी होगी। प्रधानमंत्री जी के विकसित भारत के संकल्प को साकार करने का समय आ गया है। प्रधानमंत्री जी के नेतृत्व में केंद्र सरकार ने राष्ट्रीय गौरव, सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण, सुशासन, गरीब कल्याण और राष्ट्रीय सुरक्षा के क्षेत्रों में ऐतिहासिक कार्य किए हैं। इन उपलब्धियों के कारण देश में आत्मविश्वास बढ़ा है और भारत विश्व समुदाय के लिए आशा एवं विश्वास का केंद्र बना है। मध्यप्रदेश की देवतुल्य जनता को विकसित भारत के साथ-साथ विकसित मध्यप्रदेश के निर्माण में भी अपनी सक्रिय भागीदारी निभानी है। प्रधानमंत्री जी के नेतृत्व और मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के कुशल मार्गदर्शन में प्रदेश विकास के नए आयाम स्थापित कर रहा है। सभी के सामूहिक प्रयास, राष्ट्र प्रथम की भावना और जनभागीदारी के बल पर वर्ष-2047 तक विकसित भारत का सपना अवश्य साकार होगा। विकसित भारत के संकल्प को साकार करने में सभी सहभागी बनकर राष्ट्र निर्माण के इस महाअभियान सफल बनाएं। ■

# मोदी जी विश्व के सर्वमान्य नेता हैं

सीए अखिलेश जैन

26 मई 2026 को प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में गठित एनडीए सरकार का लगातार 12 वर्षों का कार्यकाल पूर्ण हुआ। मोदी जी पर जनता का विश्वास व आशीर्वाद लगातार कायम है।

सरकार का नेतृत्व मोदी जी कर रहे हैं, तो सरकार का चेहरा भी मोदी जी ही हैं, मतदाताओं का भरोसा व आशीर्वाद भी मोदी जी पर ही है, जनता ने भविष्य निर्माण का दायित्व भी मोदी जी को सौंपा है। एनडीए के किसी भी प्रत्याशी को मिलने वाला प्रत्येक वोट वास्तव में मोदी जी को ही दिया जाता है।

भारत विविधताओं से भरा देश है और करोड़ों-करोड़ों लोगों के वोट मोदी जी को लगातार मिल रहे हैं, आज अगर फिर से लोकसभा चुनाव करवा लिए जाये तो निःसंदेह मतदाताओं की पहली पंसद सिर्फ और सिर्फ मोदी जी ही रहेंगे। मोदी जी की स्वीकार्यता नित नए कीर्तिमान बना रही है। मोदी जी ही देश के सर्वमान्य नेता हैं, मोदी जी के आस-पास भी कोई नेता नहीं है। अब प्रश्न उठना स्वाभाविक है- केवल मोदी जी की इतनी स्वीकार्यता क्यों ?

इस रोचक विषय पर चर्चा आगे बढ़ाने से पहले देश के संविधान निर्माताओं को हृदय की गहराईयों से नमन् करना आवश्यक है, संविधान के ही कारण गुजरात के छोटे से गांव की पृष्ठभूमि से आए श्री नरेन्द्र मोदी जी आज 12 वर्षों से भारत का नेतृत्व कर रहे हैं।

यूँ तो लोकतंत्र भारत की जड़ों में है, भारत लोकतंत्र की जननी है और लोकतंत्र में मतदाता ही अंतिम निर्णायक होता है, मतदाताओं का निर्णय, विश्वास व आशीर्वाद मोदी जी के साथ स्थाई क्यों?

विविधताओं से भरे देश में मोदी ही एक मात्र विकल्प क्यों? प्रश्न जितना गहरा है, उत्तर उतना सीधा है।

देश ने कई नेताओं, कई सरकारों को प्रयोग करके देख लिया। मौका भी दिया, अवधि भी दी, पर अपने आचरण, नेतृत्व क्षमता व निर्णयों के कारण जनता की अपेक्षाओं पर खरे उतरने में असफल रहे। चुनावी वादे समय की कसौटी पर कसे नहीं जा सके, जनता ने ठगा हुआ महसूस किया, निराशा आई, भ्रष्टाचार, भाई-भतीजावाद, परिवारवाद, तुष्टिकरण, घोटाले, आतंकवाद, असुरक्षित सीमाऐं, हर घटना के लिए विदेशी ताकतों को जिम्मेदार बताना, बढ़ती महंगाई, आतंकियों का महिमामण्डन, विरासत के संरक्षण में सरकार की असफलताऐं, आस्था पर लगातार हमले, विकास गायब, पलायन की मजबूरी, रोजगार का आभाव, करों का मकड़जाल, पेयजल, शिक्षा, स्वास्थ्य, आवास, बिजली, ईंधन जैसी मूलभूत आवश्यकताओं के लिए जनता जैसे तरस चुकी थी। बाधाओं, परेशानियों व आभावों के साथ जीना मतदाता नियति मान चुका था।

मोदी जी 2014 में विकल्प के रूप में एनडीए के प्रत्याशी बने। मोदी जी के पास जनता को भरोसा देने के लिए संगठन की कार्यशैली, सिद्धांत, नीति, देश प्रेम व भारत माता सर्वप्रथम के पुराने अनुभव व पूर्व के राजनैतिक निर्णयों की श्रृंखला तो थी ही, साथ ही साथ 07 अक्टूबर 2001 से 2014 तक गुजरात के मुख्यमंत्री के कार्यकाल का हिसाब-किताब भी जनता के सामने था। निःसंदेह श्री नरेन्द्र मोदी जी को जनता की स्वीकार्यता मिली। पूर्ण बहुमत के साथ स्थाई सरकार का जनादेश मिला।

सरकार गठन के 45 दिनों के बाद प्रस्तुत पहला केन्द्रीय बजट 17.94 लाख करोड़ रूपये का था। देश आर्थिक मंदी से गुजर रहा था। पहले बजट में सरकार ने अपने इरादे व लक्ष्य निर्धारित कर दिये थे। विकास व निवेश को प्राथमिकता मिली। अर्थव्यवस्था को गति देना व राजकोषीय घाटे को नियंत्रित करना लक्ष्य बना। सरकार उपनिषद से प्रेरित मंत्र की भावना के अनुरूप चलने लगी।

**ऊँ सर्वे भवन्तु सुखिनः**
**सर्वे सन्तु निरामयाः**
**सर्वे भद्राणि पश्यन्तु**
**मां कश्चिद-दुखः-भाग-भवेत्**
**ऊँ शांतिः शांतिः शांतिः**

(ऊँ! सभी सुखी हों, सभी को रोगमुक्ति मिले। सभी को लाभप्रद बातें दिखाई दें। किसी को कष्ट न हो।)

सरकार ने निर्धारित लक्ष्यों के पार जाने के लिए कठोर मेहनत करी। प्रतिबद्धता दिखाई, ईमानदार प्रयास किये, जिन लक्ष्यों के लिए मोदी जी को जनता ने वोट दिये थे, परिवर्तन, विकास, रोजगार, गरीबों और वंचितों का वास्तविक व प्रभावी उत्थान, अंत्योदय के सिद्धांत को सामने रख कर 'दरिद्र नारायण' के प्रति अडिग प्रतिबद्धता, जाति, धर्म, पंथ की परवाह किये बिना एक भारत-श्रेष्ठ भारत व संविधान की भावना के अनुरूप सरकार का मार्ग निर्धारित किया गया।

12 वर्ष के शासनकाल की अल्प अवधि को मोदी जी ने ढाल नहीं बनाया। सरकार ने लक्ष्य निर्धारित कर, कठोर मेहनत कर परिणाम प्राप्त करना प्रारम्भ कर दिये। जनता को फर्क स्पष्ट दिखाई देने लगा।

2014-2015 के 17.94 लाख करोड़ रूपये से चलकर 2026-2027 का बजट 53.47 लाख करोड़ रूपये पर पहुंच गया। विश्व में 11वीं अर्थव्यवस्था वाला देश विश्व की चौथी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था वाला देश बन गया।

करोना, रूस-युक्रेन युद्ध, अमेरिका-इजरायल- ईरान युद्ध जैसी वैश्विक संकटों के बाद भी देश को मजबूत, ईमानदार, प्रतिबद्ध व राष्ट्र सर्वोपरि के सिद्धांत को मानने वाले नेतृत्व का लाभ मिला। परिणाम भी मिलने लगे, आतंकवाद, नक्सलवाद इतिहास में चले गये, तुष्टिकरण समाप्त, तीन तलाक गायब, पिछड़े वर्ग आयोग को संवैधानिक दर्जा, महिलाओं की नीति-निर्णयों में भागीदारी सुनिश्चित, आयात पर निर्भर देश-निर्यात करने लगा, 25 करोड़ लोग गरीबी रेखा से बाहर आये, सेना मजबूत-दमदार व सुसज्जित हुई, सीमाऐं सुरक्षित, आवास, पेयजल, शिक्षा, स्वास्थ्य, बिजली, ईंधन, ऊर्जा सुरक्षा, महिला सम्मान, रोजगार, आधुनिक यातायात, नभ-जल-थल सभी जगह नए अवसर, इतने सारे परिणामों के बावजूद सरकार पर भ्रष्टाचार, भाई-भतीजावाद, परिवारवाद, घोटालों की किसी भी संभावना का काई आरोप नहीं।

यही हैं मोदी जी, यही है- मोदी सरकार जिसने विरासत के साथ विकास को अपनाया, विरासत का संरक्षण किया, वसुधैव-कुटुम्बकम को अपनाया, आस्था का सम्मान किया। कितना भी विश्लेषण किया जावे, जगह कम पड़ जावेगी पर मतदाता के चयन के कारण अनन्त निकलते ही चले जावेंगे। इसी कारण मोदी जी भारत ही नहीं विश्व के सबसे बड़े सर्वमान्य नेता हैं। ▪

**(लेखक भाजपा मप्र के प्रदेश कोषाध्यक्ष हैं)**

# जनकेंद्रित विकास, सहभागी लोकतंत्र और कार्य प्रदर्शन-उन्मुख शासन

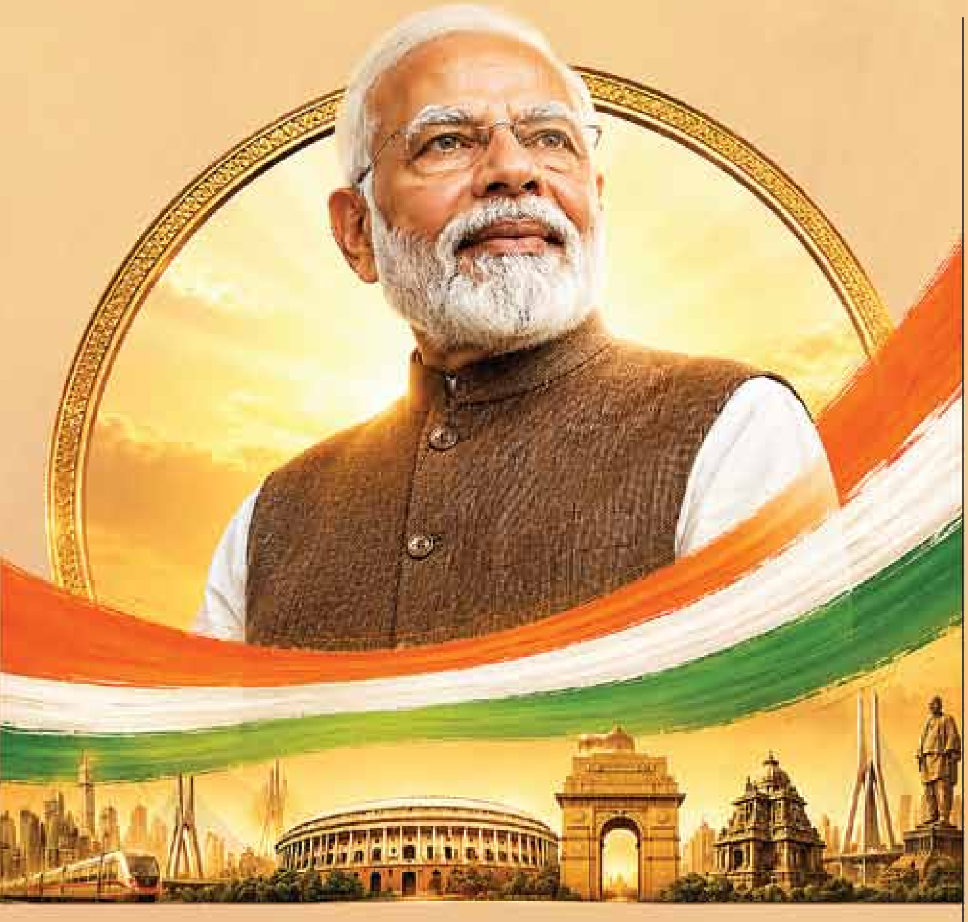

श्री नरेन्द्र मोदी लगातार कार्यकाल में भारत के सबसे लंबे समय तक सेवारत लोकतांत्रिक रूप से निर्वाचित प्रधानमंत्री बने।

प्रधानमंत्री मोदी ने 10 जून 2026 को अपने कार्यकाल के 4,399 दिन पूरे करते हुए 62 वर्षों से चले आ रहे एक महत्वपूर्ण पड़ाव को पार कर लिया है। इस बीच भारत में 13 नेता प्रधानमंत्री बने। इस महत्वपूर्ण पड़ाव से प्रधानमंत्री मोदी की असाधारण उपलब्धि का पता चलता है। उन्होंने बार-बार जनता का विश्वास जीता है क्योंकि उनका नेतृत्व प्रत्येक भारतीय की आकांक्षाओं को पूरा करने की गहरी प्रतिबद्धता पर आधारित है। उनका नेतृत्व कार्य निष्पादन, उत्तरदायित्व और सत्यनिष्ठा का आदर्श उदाहरण है।

केंद्र में एनडीए सरकार ने जनता की सेवा के 12 वर्ष सफलतापूर्वक पूरे कर लिए हैं। प्रधानमंत्री मोदी के नेतृत्व में, पिछले 12 वर्ष की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता जन-केंद्रित विकास, सहभागी लोकतंत्र और प्रदर्शन-उन्मुख शासन का सहज एकीकरण रहा है। उनका शासन मॉडल नागरिकों के प्रति उत्तरदायी है, अपने दृष्टिकोण में नवोन्मेषी है और अपने प्रभाव में परिवर्तनकारी है, जो ''सबका साथ, सबका विकास, सबका विश्वास, सबका प्रयास'' की सच्ची भावना को दर्शाता है।

श्री नरेन्द्र मोदी भारत के पहले प्रधानमंत्री हैं जिनका जन्म स्वतंत्रता के बाद हुआ। वे स्वतंत्र भारत की आकांक्षाओं से प्रेरित लोगों के दृष्टिकोण को राष्ट्रीय नेतृत्व में लेकर आए हैं। वे लगातार दो कार्यकाल पूर्ण करने वाले पहले गैर-कांग्रेसी प्रधानमंत्री भी हैं। उन्होंने जनता से लगातार तीसरी बार जनादेश प्राप्त किया। प्रधानमंत्री मोदी ने अपनी अथक निष्ठा, परिवर्तनकारी दृष्टिकोण और आकांक्षाओं को साकार रूप देने की क्षमता के माध्यम से भारत की जनता के साथ अनूठा संबंध स्थापित किया है।

महान नेतृत्व प्रायः अनिश्चितता और चुनौतियों के दौर में ही पनपता है। ऐसे क्षणों में दूरदर्शिता, दृढ़ संकल्प और सामूहिक विश्वास जगाने की क्षमता का सबसे अधिक महत्व होता है। इतिहास के अमर नेता वे होते हैं जो अपने समय की कठिनाइयों का सामना करते हैं और उन्हें राष्ट्रीय पुनरुत्थान के अवसरों में बदल देते हैं।

प्रधानमंत्री मोदी ने जब मई 2014 में पदभार संभाला, तो उन्हें ऐसी अर्थव्यवस्था और शासन व्यवस्था विरासत में मिली जो गंभीर चुनौतियों का सामना कर रही थी। वर्षों की अनिश्चितता और अस्थिरता के कारण सार्वजनिक संस्थानों में विश्वास कमजोर हो चुका था। विश्व भारत के पतन की भविष्यवाणी कर रहा था और हमारे देश को 'कमजोर पांच' अर्थव्यवस्थाओं में शामिल कर रहा था। नीतिगत गतिरोध व्यापक रूप ले चुका था। बैंकिंग क्षेत्र गहरे संकट में था, गैर-निष्पादित परिसंपत्तियां चिंताजनक स्तर पर पहुंच गई थीं और निवेश गतिविधि में काफी कमी आ गई थी।

प्रधानमंत्री मोदी के नेतृत्व में भारत में उल्लेखनीय परिवर्तन आया है। 'कमजोर पांच' देशों में गिने जाने वाले भारत ने विश्व की अग्रणी अर्थव्यवस्थाओं में से एक के रूप में उभर कर सबसे तेजी से बढ़ती प्रमुख अर्थव्यवस्था का दर्जा हासिल कर लिया है।

हाल ही में हुए 15 व्यापार समझौतों (38 देश शामिल हैं) के परिणामस्वरूप भारत में वैश्विक विश्वास अभूतपूर्व स्तर पर पहुंच गया है। विश्व इस बात से सहमत है कि यदि निवेश, नवाचार और दीर्घकालिक विकास की बात आती है, तो भारत ही सबसे उपयुक्त स्थान है।

प्रधानमंत्री मोदी ने साहसिक सुधारों को आगे बढ़ाने की इच्छाशक्ति दिखाई है। व्यापक सहमति से लागू किए गए माल और सेवा कर (जीएसटी) ने एकीकृत राष्ट्रीय बाजार का निर्माण किया और दीर्घकालिक राष्ट्रीय उद्देश्य को पूरा किया। ऐतिहासिक श्रम सुधारों ने पुराने ढांचों को अधिक सरल और आधुनिक बनाया। हजारों अप्रचलित कानूनों को निरस्त कर दिया गया, जिससे नियामक बोझ कम हुआ और 'जीवन की सुगमता' और 'व्यापार करने की सुगमता' में सुधार हुआ।

अनेक सुधारों के कारण भारत के बैंकिंग क्षेत्र में उल्लेखनीय बदलाव आया। फंसे ऋणों की पारदर्शी पहचान, त्वरित समाधान, बैंकों का पुर्नपूंजीकरण और प्रणालीगत सुधारों ने वित्तीय अनुशासन को मजबूत किया और शासन व्यवस्था में सुधार किया। गैर-निष्पादित परिसंपत्ति (एनपीए) अनुपात कई दशकों में सबसे निचले स्तर पर आ गया।

परिणामस्वरूप, भारत ने फिर से सपने देखने और बड़े सपने देखने शुरू किए। उद्यमशीलता की भावना को नई ऊर्जा मिली। स्टार्टअप इंडिया जैसी योजनाओं के माध्यम से जीवंत नवाचार पारिस्थितिकी तंत्र उभरा, जिसने भारत को विश्व के अग्रणी स्टार्टअप कें द्रों में शामिल कर दिया। सेमीकंडक्टर, नवीकरणीय ऊर्जा, इलेक्ट्रॉनिक्स विनिर्माण, ड्रोन, अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी और उन्नत विनिर्माण जैसे नए क्षेत्र तेजी से विस्तार कर रहे हैं। धनसर्जकों का उदय अब कुछ ही महानगरों तक सीमित नहीं है। द्वितीय और तृतीय स्तर के शहरों के साथ-साथ ग्रामीण भारत के युवा भी नवाचार और रोजगार सर्जन की अगली लहर का नेतृत्व कर रहे हैं।

हम प्रौद्योगिकी, अनुसंधान और नवाचार में भारत को अग्रणी बनाने की दिशा में प्रधानमंत्री मोदी के प्रयासों को स्वीकार करते हैं। इससे सार्वजनिक सेवा वितरण में उल्लेखनीय सुधार हुआ, भ्रष्टाचार कम हुआ और पारदर्शिता आई। प्रधानमंत्री मोदी के नेतृत्व में ही भारत डिजिटल अर्थव्यवस्था में अग्रणी बनकर उभरा है। हमारे यूपीआई सिस्टम ने डिजिटल भुगतान में क्रांति ला दी है और यह वैश्विक स्तर पर भी लोकप्रिय है।

एक और क्षेत्र जहां हमारी युवा शक्ति बड़े सपने देख रही है, वह है खेल। खेल संस्कृति को मजबूत बनाने पर प्रधानमंत्री मोदी के व्यक्तिगत रूप से दिए गए जोर देने के कारण युवाओं को सही अवसर और समर्थन मिल रहा है। परिणामस्वरूप, वैश्विक खेल मंचों पर भारत की उपस्थिति लगातार बढ़ रही है। समृद्ध खेल अर्थव्यवस्था उभर रही है, जो कोचिंग, खेल विज्ञान, विनिर्माण, इवेंट मैनेजमेंट और संबद्ध क्षेत्रों में अवसर उत्पन्न कर रही है।

भारत ने पिछले 12 वर्ष में अपने इतिहास में सबसे महत्वाकांक्षी अवसंरचना परिवर्तनों में से एक को देखा है। इसका सबसे स्पष्ट उदाहरण रेलवे का परिवर्तन है, जो भारत की जीवन रेखा है। अमृत भारत स्टेशन योजना के तहत रेलवे स्टेशनों का पुनर्विकास आधुनिक, सुलभ और यात्री-अनुकू ल स्टेशन बना रहा है। रिकॉर्ड विद्युतीकरण ने रेलवे नेटवर्क को स्वच्छ, तेज और अधिक कुशल बना दिया है। वंदे भारत और अमृत भारत जैसी नई पीढ़ी की रेलगाड़ियां गति, आराम और स्वदेशी नवाचार के संगम से आत्मविश्वासी और महत्वाकांक्षी भारत का प्रतीक हैं।

दशकों तक हवाई यात्रा केवल कुछ विशेषाधिकार प्राप्त लोगों तक ही सीमित थी। उड़ान जैसी योजनाओं और हवाईअड्डों के बुनियादी ढांचे में निरंतर निवेश के कारण अब करोड़ों यात्री हवाई यात्रा कर सकते हैं। परिचालित हवाईअड्डों की संख्या में नाटकीय रूप से वृद्धि हुई है, जिससे क्षेत्रीय संपर्क में सुधार हुआ है।

बुनियादी ढांचे में हुई क्रांति ने दैनिक यात्रा अनुभव में भी क्रांति ला दी है। पूरे देश में आधुनिक बस टर्मिनल और बहुस्तरीय परिवहन केंद्र विकसित किए जा रहे हैं, जिनमें वे सुविधाएं और मानक मौजूद हैं जो कभी केवल हवाई अड्डों से जुड़े होते थे।

भारत का बुनियादी ढांचा विकास पहले अलगाव और देरी से ग्रस्त था। इस संस्कृति से जनता के असंतोष को समझते हुए, प्रधानमंत्री मोदी ने आगे बढ़कर ठोस बदलाव किए। प्रधानमंत्री गति शक्ति राष्ट्रीय मास्टर प्लान ''प्रगति'' ने एकीकृत बुनियादी ढांचा नियोजन के लिए नया दृष्टिकोण पेश किया। प्रगति ने कुछ महीने पहले 50 सत्र पूरे कर लिए हैं। इसने विलंबित परियोजनाओं को गति देने में क्रांतिकारी बदलाव ला दिया है। प्रगति प्रणाली के माध्यम से लगभग 90 लाख करोड़ रुपये की विकास परियोजनाओं को गति दी गई है।

प्रधानमंत्री मोदी के नेतृत्व की प्रमुख विशेषताओं में से एक यह दृढ़ विश्वास है कि विकास के लाभ कुछ विशेषाधिकार प्राप्त लोगों के लिए ही नहीं, बल्कि राष्ट्रीय विकास के लिए मूलभूत आवश्यकता हैं। बैंकिंग सुविधाओं से वंचित लोगों को बैंकिंग सुविधा प्रदान करने, वित्तीय सहायता से वंचित लोगों को वित्त पोषित करने, बीमा से वंचित लोगों को बीमा प्रदान करने, बेघरों को आवास उपलब्ध कराने, बैंकिंग सुविधाओं से वंचित लोगों को जोड़ने, पहुंच से बाहर लोगों तक पहुंचने, वंचितों को सशक्त बनाने और हाशिए पर मौजूद लोगों को मुख्यधारा में लाने पर जोर दिया गया है।

शासन की सफलता का सबसे स्पष्ट मापदंड गरीब से गरीब लोगों के जीवन पर उसका प्रभाव है। प्रधानमंत्री मोदी के नेतृत्व में 25 करोड़ से अधिक भारतीय बहुआयामी गरीबी से बाहर निकले हैं, जिससे स्वतंत्र भारत में अभूतपूर्व पैमाने पर जीवन परिवर्तन हुआ है और अंत्योदय के प्रति एनडीए की प्रतिबद्धता की पुष्टि हुई है।

भारत की नारी शक्ति ने प्रधानमंत्री मोदी को महिला-प्रधान विकास पर जोर के कारण निरंतर आशीर्वाद दिया है। बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ आंदोलन ने बालिका के महत्व को राष्ट्रीय स्तर पर उजागर किया। स्वयं सहायता समूहों को दिए गए समर्थन से करोड़ों महिलाएं धन सर्जक बन सकीं। ड्रोन दीदी जैसी योजनाओं के माध्यम से महिलाओं को अत्याधुनिक तकनीक और आजीविका के अवसर मिल रहे हैं। नारी शक्ति वंदन अधिनियम का पारित होना विधायी संस्थाओं में महिलाओं की भागीदारी बढ़ाने की दिशा में ऐतिहासिक कदम था।

हम प्रधानमंत्री मोदी को भारतीय इतिहास की सबसे किसान-हितैषी सरकार का नेतृत्व करने के लिए बधाई देते हैं। पीएम-किसान पहल ने किसानों को प्रत्यक्ष आय सहायता प्रदान की। फसल बीमा कवरेज का विस्तार हुआ। सरकार ने कृषि अवसंरचना को मजबूत किया और बाजार पहुंच में सुधार किया, प्राकृतिक खेती को प्रोत्साहित किया और सिंचाई एवं ग्रामीण विकास में निवेश किया। मत्स्य पालन, दुग्ध उत्पादन, मधुमक्खी पालन जैसे संबद्ध क्षेत्रों को आवश्यक सहायता प्रदान की गई है।

एनडीए सरकार द्वारा गठित दो नए मंत्रालय, मत्स्य पालन और सहकारिता, सरकार की प्राथमिकताओं को दर्शाते हैं।

हम, एनडीए परिवार, केंद्र सरकार द्वारा अंतिम छोर तक पहुँचने और यह सुनिश्चित करने पर दिए गए जोर की सराहना करते हैं कि विकास के लाभ भौगोलिक या सामाजिक-आर्थिक स्थिति की परवाह किए बिना प्रत्येक नागरिक तक पहुँचें। यह प्रतिबद्धता विशेष रूप से प्रधानमंत्री जनजातीय आदिवासी न्याय महा अभियान (पीएम-जनमन) में दिखाई देती है, जो अपनी तरह की प्रथम पहल है और देश के कुछ सबसे दूरस्थ क्षेत्रों में रहने वाले विशेष रूप से कमजोर जनजातीय समूहों (पीवीटीजी) को सशक्त बनाती है। आवासन, सड़कें, स्वास्थ्य सेवाएँ, शिक्षा, पेयजल और आजीविका के अवसर इन समुदायों को विकास की मुख्यधारा में लाने में मदद कर रहे हैं।

सीमावर्ती गांवों को कभी देश के 'अंतिम गांव' कहा जाता था, उन्हें आज प्रधानमंत्री मोदी की बदौलत भारत के 'प्रारंभिक गांव' के रूप में गर्व से जाना जाता है। यह सिर्फ शब्दावली में बदलाव नहीं, बल्कि सोच में बदलाव है, जहां सीमावर्ती समुदायों को भारत की सुरक्षा और पहचान के पहले संरक्षक के रूप में मान्यता दी जाती है। कनेक्टिविटी और सार्वजनिक सेवाओं में किए गए महत्वपूर्ण निवेशों ने इन क्षेत्रों में जीवन की गुणवत्ता में सुधार किया है।

प्रौद्योगिकी के इस युग में, समावेशी विकास सुनिश्चित करने के लिए मोबाइल कनेक्टिविटी आवश्यक है। लेकिन लंबे समय तक, भारत के कई हिस्से इससे वंचित रहे। हमें यह देखकर अत्यंत प्रसन्नता हो रही है कि दूरस्थ आदिवासी क्षेत्रों, अत्यधिक ऊंचाई वाली सीमावर्ती बस्तियों, माओवाद प्रभावित क्षेत्रों और सुदूर तटीय क्षेत्रों जैसे पहले से वंचित क्षेत्रों में मोबाइल और डिजिटल कनेक्टिविटी का तेजी से विस्तार हुआ है। इससे शिक्षा, स्वास्थ्य सेवा, वित्तीय सेवाओं, शासन और आर्थिक अवसरों जैसी सुविधाओं तक पहुंच आसान हो गई है।

नेतृत्व के मूलभूत सिद्धांतों में से एक यह मान्यता है कि कोई भी राष्ट्र अपनी पूर्ण क्षमता का अहसास तभी कर सकता है जब उसका प्रत्येक भाग, प्रत्येक क्षेत्र उसके विकास में भागीदार हो। संतुलित और समावेशी विकास की प्रधानमंत्री मोदी की प्रतिबद्धता ने उन क्षेत्रों की क्षमता को उजागर किया है जो दशकों से उपेक्षित रहे थे। पूर्वी भारत की अपार क्षमता, अपने समृद्ध प्राकृतिक संसाधनों, सांस्कृतिक विरासत और मानव पूंजी के बावजूद, लंबे समय तक अप्रयुक्त रही। एनडीए सरकार के तहत, पूरे क्षेत्र में बुनियादी ढांचे, संपर्क, उद्योग, कृषि और सामाजिक विकास को मजबूत करने पर नए सिरे से जोर दिया गया है। यह परिवर्तन पूर्वोत्तर में भी समान रूप से दिखाई देता है। कभी दूरी और उपेक्षा के नजरिए से देखा जाने वाला यह क्षेत्र अब भारत की विकास यात्रा की 'अष्टलक्ष्मी' के रूप में उभरा है। अब हमारा पूर्वोत्तर राष्ट्रीय मुख्यधारा के पहले से कहीं अधिक करीब है।

प्रधानमंत्री मोदी का सूक्ष्म दृष्टिकोण दो अनूठे कार्यक्रमों में देखा जा सकता है। आकांक्षी जिला कार्यक्रम उन जिलों पर ध्यान केंद्रित करता है जो ऐतिहासिक रूप से प्रमुख संकेतकों में पिछड़े रहे हैं। इसकी सफलता को आगे बढ़ाते हुए, आकांक्षी ब्लॉक कार्यक्रम अब ब्लॉकों पर ध्यान केंद्रित करके इस दृष्टिकोण को और अधिक सूक्ष्म स्तर पर ले जा रहा है।

विकास तभी फल-फूल सकता है और राष्ट्रीय आकांक्षाएं तभी साकार हो सकती हैं जब राष्ट्र अपने हितों की रक्षा करने में सक्षम हो। पिछले 12 वर्षों में, भारत ने आतंकवाद से निपटने में अभूतपूर्व दृढ़ संकल्प दिखाया है।

चाहे सर्जिकल स्ट्राइक हो, हवाई हमले हों या हालिया ऑपरेशन सिंदूर, भारत ने यह स्पष्ट कर दिया है कि आतंकवाद और उसका समर्थन करने वालों को करारा जवाब दिया जाएगा। दशकों से चली आ रही वामपंथी उग्रवाद की चुनौती को सुरक्षा उपायों, विकास कार्यक्रमों और बेहतर शासन व्यवस्था के संयोजन से समाप्त कर दिया गया है। साथ ही, एनडीए सरकार ने रक्षा क्षेत्र में आत्मनिर्भरता को बढ़ावा दिया है। आत्मनिर्भर भारत की परिकल्पना के तहत, भारत ने स्वदेशी रक्षा विनिर्माण को काफी हद तक विस्तारित किया है, घरेलू क्षमताओं को मजबूत किया है और रणनीतिक क्षेत्रों में नवाचार को प्रोत्साहित किया है।

दशकों तक 'वन रैंक वन पेंशन' का मुद्दा उपेक्षित रहा। जिन लोगों ने सबसे पहले इसे बंद किया था, वही बाद में इसे वापस लाने की मांग पर निष्क्रिय बैठे रहे। प्रधानमंत्री मोदी ने हमारे वीर पूर्व सैनिकों से ओआरपी लागू करने का वादा किया और इसे रिकॉर्ड समय में पूरा किया। इससे लाखों पूर्व सैनिकों को सकारात्मक लाभ मिला है। पहले हम 'रक्षा सुधार' की बात तो सुनते रहते थे, लेकिन जमीनी स्तर पर कार्यवाई सीमित थी। सरकार के सबसे बड़े सुधारों में से एक, प्रमुख रक्षा अध्यक्ष (सीडीएस) का पद सर्जित करना, भारत की राष्ट्रीय सुरक्षा संरचना को मजबूत करना है। इन उपायों से सशस्त्र बलों के बीच बेहतर समन्वय, दीर्घकालिक योजना और संयुक्त कार्य को बढ़ावा मिला है।

हम, एनडीए परिवार, इस बात पर गर्व महसूस करते हैं कि भारत आज वैश्विक मंच पर पहले से कहीं अधिक मजबूत स्थिति में है। 32 देशों ने प्रधानमंत्री मोदी को सर्वोच्च सम्मानों से नवाजा है, जो उनके नेतृत्व और प्रभाव की वैश्विक मान्यता को दर्शाता है। आज अंतरराष्ट्रीय मंचों पर भारत की आवाज सम्मानपूर्वक सुनी जाती है। जलवायु परिवर्तन, वैश्विक स्वास्थ्य, आर्थिक सहयोग, ऊर्जा सुरक्षा और क्षेत्रीय स्थिरता जैसे मुद्दों को सुलझाने में भारत रचनात्मक और प्रभावशाली शक्ति के रूप में उभरा है। जब मानवता ने कोविड-19 जैसी सदी में कभी कभार आने वाली महामारी का सामना किया, तब भारत ने दुनिया को टीके और दवाएं उपलब्ध कराकर वैश्विक नेतृत्व का परिचय दिया।

प्रधानमंत्री मोदी की विदेश नीति ने कई मायनों में अपनी छाप छोड़ी है। संयुक्त अरब अमीरात जैसे देश में, जहां प्रवासी भारतीयों की एक बड़ी आबादी रहती है, वहां अधिकतम संपर्क होना चाहिए था। हालांकि, जब प्रधानमंत्री मोदी 2015 में संयुक्त अरब अमीरात गए, तो यह लगभग 35 वर्षों में किसी भारतीय प्रधानमंत्री की पहली यात्रा थी। इसी तरह, जब प्रधानमंत्री मोदी 2014 में नेपाल गए थे, तो यह 17 वर्षों में किसी भारतीय प्रधानमंत्री की पहली यात्रा थी, जो लंबे समय से चले आ रहे सभ्यतागत संबंधों को देखते हुए आश्चर्यजनक थी। ऐसे कई उदाहरण हैं।

आज, भारत आत्मविश्वास और सभ्यतागत पहचान की एक मजबूत भावना के साथ दुनिया के साथ जुड़ा हुआ है। 170 देशों द्वारा अंतरराष्ट्रीय योग दिवस को अपनाना भारत के शाश्वत ज्ञान और आधुनिक दुनिया के लिए इसकी प्रासंगिकता की मान्यता के रूप में खड़ा है। चोरी की गई सैकड़ों कलाकृतियाँ और प्राचीन वस्तुएँ देश में वापस लाई गई हैं, जिससे भारत अपनी सभ्यतागत विरासत के महत्वपूर्ण अध्यायों के साथ फिर से जुड़ गया है। मोटे अनाज या श्री अन्न को विश्व स्तर पर बढ़ावा देने के भारत के सफल प्रयासों ने सतत् कृषि और पोषण सुरक्षा पर नए सिरे से ध्यान आकर्षित किया है।

चूंकि एनडीए सुशासन के 12 वर्ष पूरे होने का उत्सव मना रहा है, हम गठबंधन की उल्लेखनीय यात्रा पर भी विचार कर रहे हैं।

लगभग तीन दशक पहले, अटल बिहारी वाजपेयी जी, एलके आडवाणी जी, डॉ. मुरली मनोहर जोशी जी, जॉर्ज फर्नांडीस जी, बालासाहेब ठाकरे जी, सरदार प्रकाश सिंह बादल जी, सिकंदर बख्त जी और कई अन्य प्रमुख नेताओं के मार्गदर्शन में, ''भारत प्रथम'' के साझा मंत्र के तहत विभिन्न दलों और लोगों को एक साथ लाने के लिए एनडीए का गठन किया गया था।

एनडीए ने क्षेत्रीय आकांक्षाओं का राष्ट्रीय प्राथमिकताओं के साथ सहजता से सामंजस्य स्थापित किया है और सहकारी संघवाद की भावना को संस्थागत रूप दिया है। राज्य विकास में भागीदार बने। परामर्श, सहयोग और साझा जिम्मेदारी के माध्यम से केंद्र और राज्यों के बीच संबंधों को फिर से परिभाषित किया गया। कई वर्षों तक गुजरात के मुख्यमंत्री के रूप में कार्य करने के बाद, प्रधानमंत्री मोदी हमारी राजनीति के इस पहलू के महत्व को पूरी तरह से समझते हैं।

पिछले कुछ वर्षों में, एनडीए का काफी विस्तार हुआ है

आज, एन.डी.ए. शासन वाले राज्य मिलकर भारत की तीन चौथाई से अधिक आबादी का प्रतिनिधित्व करते हैं। भारत के लगभग तीन चौथाई भूभाग में इसकी सरकारें हैं। अनुसूचित जाति की सबसे अधिक जनसंख्या वाले शीर्ष 10 राज्यों में से 7 राज्यों में इसकी सरकारें हैं। जिन 10 राज्यों में अनुसूचित जनजाति की आबादी सबसे अधिक है, उनमें से 8 राज्यों में सरकारें हैं। 2014 से, एनडीए का विस्तार पार्टियों और भौगोलिक दृष्टि से दोनों ही मामलों में हुआ है। 2014 के बाद से, एनडीए ने हरियाणा, त्रिपुरा, असम और पश्चिम बंगाल जैसे राज्यों में पहली बार सरकारें बनाई हैं। एनडीए ने आंध्र प्रदेश, बिहार और महाराष्ट्र जैसे राज्यों में ऐतिहासिक जनादेश हासिल किया, जहां सम्मानित गठबंधन सहयोगी सरकार के अभिन्न अंग हैं।

गुजरात में भाजपा 1995 से हर चुनाव जीतती आ रही है। उत्तर प्रदेश में भाजपा ने चार दशकों से अधिक समय में सत्ता में वापसी करने वाली पहली पार्टी बनकर इतिहास रच दिया। एनडीए पूर्वोत्तर के लगभग सभी राज्यों में सत्ता में है, जिनमें से कई राज्यों में जनजातीय और ईसाई आबादी की संख्या अधिक है। भारतीय राजनीति में अक्सर सत्ता-विरोधी लहर जैसी घटना देखने को मिलती है जहां मौजूदा सरकारों को खराब प्रदर्शन के कारण हार का सामना करना पड़ा। हमें यह देखकर खुशी हो रही है कि एनडीए ने सत्ता समर्थक सरकार के युग की शुरुआत की है।

60 से अधिक वर्षों के बाद, 2024 में ही राष्ट्रीय स्तर पर गठबंधन लगातार तीसरी बार सत्ता में लौटा। यह युवाओं और महिलाओं के रिकॉर्ड समर्थन के कारण संभव हुआ है, जिन्होंने प्रधानमंत्री मोदी के नेतृत्व को मजबूत स्वीकृति दी है। आज भारत एक महत्वपूर्ण मोड़ पर खड़ा है। दुनिया भारत में निवेश करना चाहती है और हमारे युवाओं से जुड़ना चाहती है। विभिन्न क्षेत्रों में हमारी प्रगति सराहनीय है। 2047 तक विकसित भारत का हमारा सामूहिक दृष्टिकोण भविष्य के लिए स्पष्ट दिशा प्रदान करता है। पिछले 12 वर्ष की उपलब्धियां मजबूत नींव का निर्माण करती हैं, जिस पर और भी अधिक मजबूत, समृद्ध और आत्मनिर्भर भारत का निर्माण किया जा सकता है। ■

# लोकतंत्र में मीसाबंदियों की भूमिका अहम्

डॉ. मोहन यादव

वर्ष 1947 की आजादी भगत सिंह, चंद्रशेखर आजाद ने दिलाई तो लोकतंत्र सेनानियों ने आपातकाल से आजादी दिलाई। कांग्रेस ने देश के आजाद होने के बाद भी संविधान का सम्मान नहीं किया और यह सिलसिला उसके कई पीढ़ियों के नेतृत्व तक चलता रहा। ऐसे में सवाल उठता है कि कांग्रेस आज किस मुंह से लोकतंत्र और संविधान की दुहाई देती है। कांग्रेस पार्टी ने सत्ता की ताकत का उपयोग लोगों को दबाने के लिए किया। कांग्रेस न पहले सुधरी थी और न ही अभी सुधरी है। उसने हमेशा लोकतंत्र को नुकसान पहुंचाने का कार्य किया है। आपातकाल में घर के मुखिया को जेल में ठूंस देने के बाद 19 महीने तक जेल में रखा गया। मैं करीब नौ साल का था, जब मेरे पिताजी को आपातकाल में लोकतंत्र को बचाने के लिए आंदोलन करने के कारण जेल में बंद कर दिया गया था। कल्पना कीजिए जिसके घर का मुखिया जेल में हो, उस घर के बच्चों की शिक्षा, स्वास्थ्य व मानसिक स्तर पर क्या प्रभाव पड़ा होगा। आज मैं गर्व से कह सकता हूं कि लोकतंत्र सेनानियों के संघर्ष से भारत विश्व का सबसे बड़ा लोकतांत्रिक देश बना है। लोकतंत्र सेनानियों ने संविधान और देश को बचाने के लिए जो मशाल जलाई है उसे बुझने नहीं देना हम सभी की जिम्मेदारी है।

लोकतंत्र सेनानियों को रेस्ट हाउस में उनके रुकने की व्यवस्था होगी। लोकतंत्र सेनानियों के योगदान के लिए शासकीय भवन, मार्ग, पार्क व सड़क का नाम रखा जाएगा। लोकतंत्र सेनानियों और स्वतंत्रता सेनानियों के इलाज की व्यवस्था मध्यप्रदेश सरकार करेगी, साथ ही गंभीर बीमारियों के इलाज के लिए एयर एंबुलेंस की निःशुल्क व्यवस्था की जाएगी। प्रदेश के सभी लोकतंत्र सेनानियों को ताम्रपत्र दिया जा रहा है, जिन लोकतंत्र सेनानियों को अभी तक ताम्रपत्र प्राप्त नहीं हो सका है, उन्हें जिला प्रशासन जल्दी ही ताम्रपत्र उपलब्ध कराएगा।

सभी लोकतंत्र सेनानियों के संघर्षों का परिणाम है कि भारत लगातार प्रगति के पथ पर आगे बढ़ते हुए हर कसौटी पर खरा उतर रहा है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी लोकतंत्र को मजबूत करने के लिए लगातार कार्य कर रहे हैं। प्रधानमंत्री जी के नेतृत्व में भारत तेजी से आत्मनिर्भर देश बनने की ओर अग्रसर है। लोकतंत्र सेनानियों के संघर्षों का परिणाम है कि भारत आज लोकतंत्र के उच्च आदर्शों के साथ विश्व में अपना विशिष्ट स्थान बनाए हुए है। ▪

# आपातकाल में लोकतंत्र का गला घोंटा

डॉ. महेंद्र सिंह

न्यायपालिका के निर्णय को स्वीकार करने के बजाय तत्कालीन कांग्रेस सरकार ने लोकतांत्रिक मर्यादाओं को ताक पर रखकर पूरे देश को भय और दमन के वातावरण में धकेल दिया। हजारों विपक्षी नेताओं, लोकतंत्र सेनानियों, पत्रकारों, सामाजिक कार्यकर्ताओं तथा राष्ट्रवादी विचारधारा से जुड़े लोगों को बिना किसी अपराध के जेलों में डाल दिया गया। यह सत्ता के अहंकार का ऐसा उदाहरण था, जिसने लोकतंत्र की जड़ों को कमजोर करने का प्रयास किया। आज जब देश आजादी के अमृतकाल में विकसित भारत के संकल्प के साथ आगे बढ़ रहा है, तब नई पीढ़ी को आपातकाल के उस काले दौर से अवगत कराना आवश्यक है। लोकतंत्र स्वतः सुरक्षित नहीं रहता, बल्कि इसके लिए अनगिनत देशभक्तों ने संघर्ष किया, यातनाएं सहीं और अपने जीवन का सर्वोत्तम समय राष्ट्रहित में समर्पित किया। लोकतंत्र सेनानियों का त्याग और बलिदान ही आज देश की लोकतांत्रिक व्यवस्था की सबसे बड़ी शक्ति है। यह संघर्ष केवल राजनीतिक नहीं था, बल्कि भारतीय संविधान, लोकतांत्रिक मूल्यों और राष्ट्र की आत्मा की रक्षा का संघर्ष था। भारतीय जनता पार्टी ऐसे सभी लोकतंत्र सेनानियों के प्रति कृतज्ञ है, जिनके बलिदान के कारण आज प्रत्येक भारतीय स्वतंत्र वातावरण में अपने अधिकारों का उपयोग कर रहा है।

प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में भारत आज आत्मविश्वास, सुशासन और जनभागीदारी के बल पर विश्व की सबसे तेजी से विकसित होती अर्थव्यवस्थाओं में शामिल है। भारत वैश्विक मंच पर अपनी नई पहचान बना रहा है और विकसित राष्ट्र बनने की दिशा में तेजी से आगे बढ़ रहा है। यह प्रत्येक भारतीय के लिए गर्व का विषय है। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी द्वारा विकसित भारत के निर्माण के लिए दिए गए पंच प्रण आज राष्ट्र निर्माण के मार्गदर्शक हैं। विकसित भारत का निर्माण, गुलामी की मानसिकता से मुक्ति, अपनी विरासत पर गर्व, राष्ट्रीय एकता एवं एकजुटता तथा नागरिक कर्तव्यों का पालन, इन पांच संकल्पों को जन-जन का संकल्प बनाना होगा। जब प्रत्येक नागरिक अपने कर्तव्यों को राष्ट्रधर्म मानकर कार्य करेगा, तभी विकसित भारत का सपना साकार होगा। लोकतंत्र की रक्षा केवल इतिहास को याद करने का विषय नहीं है, बल्कि आने वाली पीढ़ियों को लोकतांत्रिक मूल्यों के प्रति जागरूक करने का दायित्व भी है। आज भारत विश्व के सबसे सशक्त लोकतंत्र के रूप में प्रतिष्ठित है। प्रधानमंत्री जी के नेतृत्व में भारत पुनः विश्वगुरु बनने की दिशा में अग्रसर है और विकसित भारत का संकल्प निश्चित रूप से साकार होगा। ▪

# भाजपा में लोकतंत्र सेनानियों को सम्मान मिला

प्रो. कप्तान सिंह सोलंकी

संविधान में तीन प्रकार के आपातकाल का प्रावधान है, अनुच्छेद 352 के तहत राष्ट्रीय आपातकाल, अनुच्छेद 356 के तहत राष्ट्रपति शासन तथा अनुच्छेद 360 के तहत आर्थिक आपातकाल। 1975 का आपातकाल, इनमें से किसी भी वास्तविक संवैधानिक परिस्थिति के अनुरूप नहीं था। भाजपा की सरकार बनने के बाद से लोकतंत्र सेनानियों को सम्मानपूर्वक आमंत्रित कर उनका निरंतर सम्मान किया जा रहा है। सरकार ने केवल सम्मान ही नहीं दिया, बल्कि मीसाबंदियों के लिए मानदेय की व्यवस्था भी की। त्याग और बलिदान का मूल्य समझने वाली सरकार ही ऐसा निर्णय ले सकती है। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव सरकार ने लोकतंत्र सेनानियों के लिए चिकित्सा सुविधा, सर्किट हाउस एवं विश्राम गृहों में ठहरने की व्यवस्था, सम्मान-पत्र एवं प्रमाण-पत्र जैसी अनेक सुविधाएं भी सरकार ने उपलब्ध कराई हैं। यदि 1975 में भी ऐसी सोच वाली सरकार होती, तो लोकतंत्र पर काला धब्बा कभी नहीं लगता। मध्यप्रदेश में लोकतंत्र सेनानियों के सम्मान की परंपरा शुरू होने के बाद जब मैं हरियाणा का राज्यपाल बना, तब लोकतंत्र सेनानी संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री कैलाश सोनी एक प्रतिनिधिमंडल के साथ मुझसे मिलने पहुंचे। उनके आग्रह पर अगले ही दिन लोकतंत्र सेनानियों के सम्मान कार्यक्रम की घोषणा की गई। इसके बाद तत्कालीन मुख्यमंत्री से चर्चा कर हरियाणा में भी लोकतंत्र सेनानियों के लिए 10 हजार प्रतिमाह मानदेय प्रारंभ कराया गया। अब पश्चिम बंगाल में भी प्रक्रिया प्रारंभ की गई है। लोकतंत्र सेनानियों की एक महत्वपूर्ण मांग अभी भी शेष है कि उन्हें स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों के समान दर्जा दिया जाए। यह निर्णय राज्य सरकार के अधिकार क्षेत्र से बाहर है और इसके लिए केंद्र सरकार को पहल करनी होगी। लोकतंत्र सेनानी संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री कैलाश सोनी से आग्रह है कि वे इस मांग को केंद्र सरकार तक प्रभावी ढंग से पहुंचाएं।

आपातकाल वह दौर था, जब नो दलील, नो वकील, नो अपील जैसी स्थिति बन गई थी। नागरिकों के मौलिक अधिकार सीमित कर दिए गए थे और असहमति की आवाज को दबाने का प्रयास किया गया। लोकतंत्र की रक्षा के लिए हजारों लोगों ने संघर्ष किया और जेल की यातनाएं सहनी पड़ी। सत्ता बचाने के लिए लोकतांत्रिक मूल्यों की अनदेखी की गई और 25 जून 1975 को देश पर आपातकाल थोप दिया गया। विपक्ष के नेताओं, सामाजिक कार्यकर्ताओं और हजारों लोकतंत्र रक्षकों को जेलों में डाल दिया गया। संविधान में संशोधन कर सत्ता को बचाने का प्रयास किया गया। यह भारतीय लोकतंत्र के इतिहास का सबसे काला अध्याय है। देश में ऐसे दो उदाहरण रहे। एक वर्ष 1975 में तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी और दूसरा हाल के वर्षों में पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी जिन्होंने इस्तीफा नहीं दिया। देश की जागरूक जनता ने लोकतांत्रिक तरीके से मतदान के माध्यम से तानाशाही प्रवृत्तियों को करारा जवाब दिया और लोकतंत्र की पुनर्स्थापना का मार्ग प्रशस्त किया। लोकतंत्र की रक्षा करना प्रत्येक नागरिक का दायित्व है। इसी उद्देश्य से भारतीय जनता पार्टी प्रत्येक वर्ष 25 जून को ''संविधान हत्या दिवस'' के रूप में मनाकर नई पीढ़ी को आपातकाल के इतिहास और लोकतंत्र के महत्व से परिचित करा रही है। ▪

# आपातकाल में लोकतांत्रिक व्यवस्थाऐं ध्वस्त थीं

कैलाश सोनी

कांग्रेस ने सत्ता पिपासा में लोकतंत्र की हत्या कर देश में आपातकाल लगाया था। आपातकाल में सभी लोकतांत्रित व्यवस्थाओं व संस्थाओं को ध्वस्त करने का कार्य किया गया। मीडिया, न्यायपालिका को दबाया गया। मध्यप्रदेश में 1 लाख 8 हजार से अधिक लोकतंत्र सेनानियों को जेल में बंदकर दिया गया था। धारा 151 के तहत मध्यप्रदेश के 5 से 7 लाख लोगों को आपातकाल में जेल में बंदकर दिया गया था। पूर्व केंद्रीय मंत्री जार्ज फर्नांडीज ने आपातकाल के दौरान लोकतंत्र को बचाने के लिए किए गए आंदोलन को आजादी की दूसरी लड़ाई की तरह बताया था। देश में आपातकाल लगाने के लिए जो संविधान में शक्तियां निहित हैं, कांग्रेस की इंदिरा गांधी सरकार ने उनका भी कोई पालन नहीं किया था। ▪

# भाजपा ने लोकतंत्र सेनानियों का सम्मान किया

तपन भौमिक

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव लोकतंत्र सेनानियों की पीड़ा समझते है, क्योंकि वह खुद एक लोकतंत्र सेनानी के पुत्र हैं। मध्यप्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री स्वर्गीय बाबूलाल गौर और केंद्रीय मंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान भी लोकतंत्र सेनानी हैं। लोकतंत्र सेनानियों के सम्मान के लिए मध्यप्रदेश की भाजपा सरकार लगातार कार्य कर रही है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने लोकतंत्र सेनानियों को सम्मान देने और देश के युवाओं को 25 जून 1975 की काली रात का सच बताने का सराहनीय कार्य किया है। ▪

# प्रशिक्षण कार्यक्रम विजय अभियान का आधार - डॉ. मोहन यादव

- **मोदी जी ने 12 वर्षों में नए अध्याय लिखे हैं।**
- **विश्व में अस्थिरता के बीच आत्मविश्वास के साथ आगे बढ़ रहा है भारत।**
- **प्रशिक्षित कार्यकर्ताओं के बल पर 2028 के विधानसभा चुनाव में सर्वाधिक सीटें जीतेगी भाजपा।**

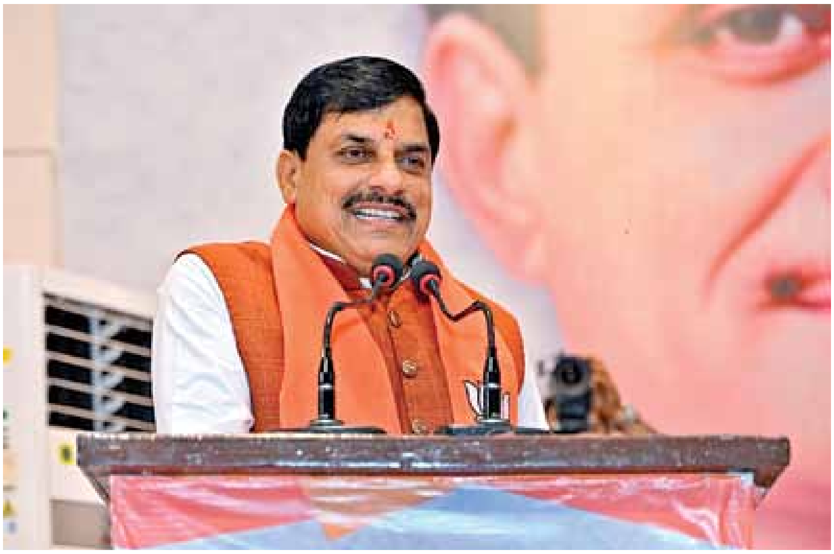

जनता के विश्वास का प्रमाण है देश के 80 प्रतिशत भू-भाग पर भाजपा-एनडीए की सरकारें। तुष्टिकरण की राजनीति को समाप्त कर समान न्याय की ओर बढ़ रहा मध्यप्रदेश।

वर्तमान में देश के लगभग 80 प्रतिशत भू-भाग पर भाजपा और एनडीए की सरकारें हैं। यह किसी राजनीतिक संयोग का परिणाम नहीं, बल्कि जनता के विश्वास, भाजपा की नीतियों और प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व पर विश्वास का प्रमाण है। आज विश्व की अनेक महाशक्तियां अस्थिरता और संकटों का सामना कर रही हैं, लेकिन विश्व में अस्थिरता के बावजूद, भारत आत्मविश्वास के साथ तेजी से आगे बढ़ रहा है। प्रधानमंत्री जी ने कभी भी राष्ट्रहित और भारत के स्वाभिमान से समझौता नहीं किया और यही भाजपा की सबसे बड़ी पहचान है। भाजपा देश का एकमात्र ऐसा राजनीतिक दल है, जहां कार्यकर्ताओं को सर्वोच्च प्राथमिकता दी जाती है। आज युवा कार्यकर्ता जिला अध्यक्ष बन रहे हैं, महत्वपूर्ण संगठनात्मक जिम्मेदारियां संभाल रहे हैं और नेतृत्व की नई पीढ़ी तैयार कर रहे हैं। भाजपा में पद परिवार, वंश या विशेषाधिकार से नहीं, बल्कि परिश्रम, समर्पण और संगठन के प्रति निष्ठा से प्राप्त होता है। जिन मुद्दों को दशकों तक असंभव बताया जाता रहा, उन्हें प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में संभव कर दिखाया है। जम्मू-कश्मीर से धारा-370 हटाना हो या अयोध्या में भगवान श्रीराम के भव्य मंदिर का निर्माण, भाजपा ने अपने संकल्पों को सिद्ध करके दिखाया है। जो कार्य वर्षों तक केवल राजनीतिक भाषणों का हिस्सा बने रहे, उन्हें भाजपा सरकार ने धरातल पर उतारकर इतिहास रचा है। यह एक सुखद संयोग है कि प्रधानमंत्री जी के नेतृत्व में केंद्र सरकार के सेवा, सुशासन और गरीब कल्याण के ऐतिहासिक 12 वर्ष पूर्ण हुए हैं। भारतीय परंपरा में 12 अंक का विशेष महत्व है। जिस प्रकार 12 वर्षों में सिंहस्थ का महापर्व आता है, उसी प्रकार प्रधानमंत्री जी के नेतृत्व के इन 12 वर्षों ने भारत के विकास, सुरक्षा और वैश्विक प्रतिष्ठा के नए अध्याय लिखे हैं।

मध्यप्रदेश भी समान नागरिक संहिता की दिशा में तेजी से आगे बढ़ रहा है और जल्द ही इस दिशा में महत्वपूर्ण निर्णय लेने वाले अग्रणी राज्यों में शामिल होगा। तुष्टिकरण की राजनीति को समाप्त कर मध्यप्रदेश समान न्याय और समान अधिकारों की दिशा में आगे बढ़ रहा है। भाजपा सरकार ने महिलाओं के सम्मान और सामाजिक न्याय के लिए तीन तलाक जैसी कुप्रथा को समाप्त कर ऐतिहासिक कदम उठाया, जबकि कांग्रेस वर्षों तक तुष्टिकरण की राजनीति में उलझी रही। भाजपा की पंचनिष्ठाएं केवल विचार नहीं, बल्कि कार्यकर्ताओं के जीवन का मार्गदर्शन हैं। भाजपा का प्रत्येक कार्यकर्ता 'राष्ट्र प्रथम' के भाव के साथ समाज और देश के विकास के लिए कार्य कर रहा है। वर्ष 2023 के विधानसभा चुनाव में जनता ने भाजपा को ऐतिहासिक जनादेश दिया था। अब हमारा लक्ष्य वर्ष 2028 में उससे भी बड़ी विजय प्राप्त करना है। भाजपा कार्यकर्ताओं की ऊर्जा, संगठन की मजबूती और जनता के विश्वास के बल पर आगामी विधानसभा चुनाव में वर्ष 2023 से भी अधिक सीटें जीतकर नया इतिहास रचेगी। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में देश के 80 प्रतिशत से अधिक भू-भाग पर वर्तमान में भाजपा व एनडीए गठबंधन की सरकारें हैं, जो देश की जनता के विश्वास का प्रत्यक्ष प्रमाण हैं। ■

# शत-प्रतिशत प्रशिक्षण वर्ग संपन्न - हेमंत खण्डेलवाल

- **कार्यकर्ता शक्ति का प्रतीक है प्रदेश के सभी 1313 मंडल एवं 62 जिलों में प्रशिक्षण वर्ग संपन्न होना।**
- **प्रशिक्षण को जीवन, व्यवहार और आचरण में उतारने से समाज को वास्तविक लाभ मिलता है।**
- **प्रशिक्षण वर्ग के अनुभव को आचरण व व्यवहार का हिस्सा बनाएं।**

मध्यप्रदेश के 62 संगठनात्मक जिलों एवं 1313 मंडलों में शत-प्रतिशत प्रशिक्षण वर्ग सफलतापूर्वक संपन्न हुआ है। प्रशिक्षण को जब हम जीवन, व्यवहार और आचरण में उतारते हैं तो समाज को उसका वास्तविक लाभ मिलता है। प्रशिक्षण हमारी पार्टी की सतत् चलने वाली कार्यप्रणाली का महत्वपूर्ण अंग है। कार्यकर्ताओं की मेहनत, समर्पण व योजनाबद्ध कार्यप्रणाली के कारण प्रशिक्षण वर्गों का आयोजन सूचीबद्ध एवं सुव्यवस्थित तरीके

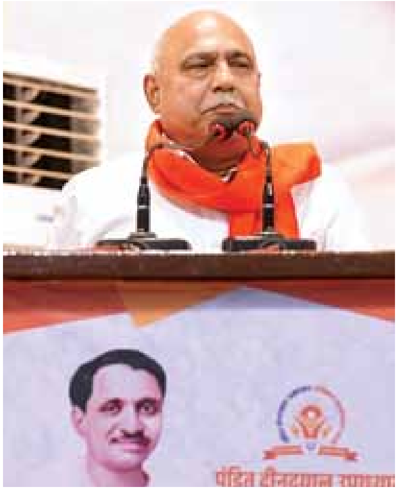

से सफलतापूर्वक संपन्न हुआ। कार्यकर्ताओं के अथक प्रयासों से संगठनात्मक प्रशिक्षण अभियान को नई गति और प्रभावशीलता प्राप्त हुई है। मध्यप्रदेश के सभी जिलों में प्रत्येक दो माह में नियमित रूप से कोर कमेटी की बैठकें आयोजित की जा रही हैं। आगामी जुलाई माह में प्रस्तावित कोर कमेटी बैठकों में प्रशिक्षण वर्गों की विस्तृत समीक्षा और अधिक प्रभावी एवं परिणामकारी बनाने के सुझावों पर विशेष चर्चा की जाएगी।

प्रशिक्षण वर्ग का अनुभव केवल कार्यक्रमों तक सीमित न रहे, बल्कि उसे अपने दैनिक जीवन, व्यवहार एवं आचरण का हिस्सा बनाया जाए। प्रशिक्षण से प्राप्त ज्ञान, संस्कार एवं अनुभवों का लाभ समाज के अन्य लोगों तक भी पहुंचे, इसके लिए प्रत्येक कार्यकर्ता को सक्रिय भूमिका निभानी चाहिए, जिससे उनके जीवन में भी सकारात्मक परिवर्तन आ सके। प्रशिक्षण का उद्देश्य केवल व्यक्तिगत विकास नहीं है, बल्कि संगठन की विचारधारा, मूल्यों एवं कार्य संस्कृति को आत्मसात करना भी है। जब प्रशिक्षण हमारे व्यक्तित्व, व्यवहार और कार्यपद्धति में दिखाई देगा, तभी उसका वास्तविक उद्देश्य पूर्ण होगा और संगठन तथा समाज दोनों को उसका लाभ प्राप्त होगा। कार्यकर्ताओं का दायित्व है कि वे केंद्र और राज्य सरकार की जनकल्याणकारी योजनाओं को जन-जन तक पहुंचाएं, जिससे पात्र हितग्राहियों को योजनाओं की जानकारी के साथ उनका लाभ भी समय पर प्राप्त हो सके। ■

# प्रशिक्षण का भाव परिलक्षित होना चाहिए - डॉ. महेन्द्र सिंह

- **कार्यकर्ताओं के दैनिक जीवन में दिखना चाहिए प्रशिक्षण में मिली सीख।**
- **प्रधानमंत्री जी के दूरदर्शी नेतृत्व से विश्व के कई देशों में हुआ वंदेमातरम् का गायन।**

प्रशिक्षण वर्ग में कार्यकर्ताओं को अनुभव व सीख मिली है, वह दैनिक जीवन में दिखना चाहिए। प्रशिक्षण का भाव आपके आचरण-व्यवहार में परिलक्षित होना चाहिए। प्रशिक्षण में मिली सीख जब सभी कार्यकर्ताओं के मन-मस्तिष्क में रहेगी, तभी

उसकी सार्थकता सिद्ध होगी। व्यक्ति से संगठन और संगठन से राष्ट्र का निर्माण होता है। भाजपा कार्यकर्ता आधारित संगठन है, और संगठन विचारधारा आधारित है। अगर विचारधारा कमजोर हुई तो संगठन कमजोर पड़ सकता है। ऐसे में सभी कार्यकर्ताओं को राष्ट्र प्रथम के साथ अपनी विचारधारा को जन-जन तक पहुंचाने के साथ संगठन को और मजबूती प्रदान करना है। प्रशिक्षण में मिले अनुभवों का अनवरत अभ्यास किया जाना चाहिए, ताकि वह कार्यकर्ताओं के मन-मस्तिष्क में अच्छी तरह बैठ जाएं। जब हम कहीं जाएं तो हमारे आचरण और व्यवहार में यह दिखना चाहिए कि हम प्रशिक्षित हैं। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के दूरदर्शी नेतृत्व से हम सभी गौरवान्वित हैं। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के स्वागत व सम्मान में स्लोवाकिया में वहां की महिलाएं वंदेमातरम् का गायन कर रही थीं, यह दृश्य कितना सुखद है। ■

# भारत की ग्रोथ स्टोरी पूरी मानवता के लिए - पीएम मोदी

फ्रांस की G7 अध्यक्षता में साझा और sustainable growth पर विशेष बल दिया गया है। ऐसे समय में जब विश्व अनेक अनिश्चितताओं से गुजर रहा है, G7 समिट के मंच से निकलने वाला संदेश पूरी मानवता के लिए महत्व रखता है।

आज growth का प्रश्न केवल GDP या trade numbers का प्रश्न नहीं है। असली प्रश्न यह है कि growth किसके लिए है, किसके साथ है, और किस दिशा में है।

भारत का अनुभव दिखाता है कि साझा विकास को aspiration से reality में बदला जा सकता है। जब भारत आगे बढ़ता है, तो one-sixth humanity आगे बढ़ती है।

इसलिए भारत की growth story पूरी मानवता के लिए inclusion, scale और democratic empowerment की story है। पिछले बारह वर्षों में भारत ''सबका साथ, सबका विकास, सबका विश्वास, सबका प्रयास'' के मूलमंत्र पर आगे बढ़ा है। यह हमारी global engagement का भी guiding principle है।

भारत की G20 Presidency के दौरान हमने One Earth, One Family, One Future का संदेश पूरे विश्व को दिया। यह केवल एक slogan नहीं था। यह हमारी सभ्यता की उस भावना का विस्तार था, जो विश्व को एक परिवार मानती है।

इसी भावना से हमने India-Middle East-Europe Economic Corridor, यानि आई-मेक, जैसी ऐतिहासिक पहल की शुरुआत की। यह एशिया, मिडिल ईस्ट और यूरोप को जोड़ने वाला strategic corridor है, जो व्यापार को गति देगा, supply chains को मजबूत बनाएगा, और partner देशों में निवेश, रोजगार और innovation के नए अवसर पैदा करेगा। आज आवश्यकता है कि हम ऐसे initiatives को और गति दें, जिनमें local ownership हो, transparent financing हो, और long-term sustainability का स्पष्ट vision हो।

West Asia में हुए संकट के कारण जो Fuel, Fertilizer और Food Supply Chains प्रभावित हुई हैं, उनका असर Global South पर काफी समय तक रहेगा। यदि हम वास्तव में international solidarity को मजबूत करना चाहते हैं, तो सबसे कमजोर देशों को इन संकटों का बोझ अकेले नहीं उठाना चाहिए।

हमारे International Financial Institutions को ऐसे support mechanisms तैयार करने चाहिए, जो विकासशील देशों को इन shocks को absorb करने और उनकी economic resilience को बनाए रखने में मदद करें।

आई-मेक vision से प्रेरणा लेते हुए हम अफ्रीका, लैटिन अमेरिका और पेसिफिक आइलैंड देशों के साथ connectivity projects पर काम कर सकते हैं।

G7 के कैपिटल, भारत के टैलेंट, और ग्लोबल साउथ के देशों की ownership को जोड़ते हुए हम International Mobilisation Partnership for Accelerating Connectivity and Trade, यानि IMPACT, बनाने पर विचार कर सकते हैं। इसका उद्देश्य ऐसे corridors बनाना होना चाहिए, जो trade, technology, energy और opportunity को जोड़ें।

आज एक ओर, विकसित देशों में ageing societies की चुनौती है, वहीं दूसरी ओर, भारत तथा ग्लोबल साउथ के अन्य देशों में young talent, enterprise और skills की अपार क्षमता है।

इस natural complementarity का लाभ उठाने के लिए हम Global Skills Partnership बनाने पर विचार कर सकते हैं। इसके अंतर्गत skill mapping और trusted skilled mobility बढ़ाने पर मिलकर काम किया जा सकता है।

भारत का साझा वैश्विक समृद्धि में विश्वास केवल शब्दों तक सीमित नहीं है, यह हमारे कार्यों में भी दिखाई देता है। पिछले कुछ वर्षों में भारत ने इस बैठक में उपस्थित अधिकांश देशों के साथ Trade Agreements किए हैं।

यह दर्शाता है कि भारत Fragmentation नहीं, बल्कि Integration; Protectionism नहीं, बल्कि Partnership; और अनिश्चितता नहीं, बल्कि साझा समृद्धि में विश्वास रखता है।

आने वाले समय में भी भारत आप सभी के साथ मिलकर Shared Economic Resilience को सुदृढ़ करने और एक अधिक स्थिर, विश्वसनीय तथा समृद्ध वैश्विक अर्थव्यवस्था के निर्माण के लिए कार्य करता रहेगा। ▪

# जुड़ाव व एकता योग का मूल भाव है - पीएम मोदी

- **योग हम सभी को जोड़ता है और हमें एक साथ लाता है।**
- **जब योग जीवन का तरीका बनता है, तो यह मानव एकता का आधार बन जाता है।**
- **योग हमें अपने शरीर को लचीला बनाने में मदद करता है, यह हमारी ऊर्जा स्तर को ऊंचा बनाए रखता है।**

योग हमें संतुलित जीवन जीने की कला सिखाता है। योग मानसिक स्वास्थ्य से शारीरिक स्वास्थ्य तक का रास्ता दिखाता है।

21 जून, पृथ्वी के कुछ भूभाग पर साल में सबसे लंबी अवधि का दिन होता है। और अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के कारण 21 जून विश्व के सबसे बड़े सामूहिक उत्सव का दिन भी बन गया है। विश्व के अलग-अलग हिस्सों से योग की एक से एक अद्भुत तस्वीरें आ रहीं हैं। भारत में हिमालय से लेकर हिन्द महासागर तक, पूर्वोत्तर और पूरब में बंगाल से लेकर पश्चिम में सौराष्ट्र तक, पूरा देश योग की ऊर्जा से चैतन्य से भरा हुआ नजर आ रहा है। पूरा देश, पूरा विश्व एक दूसरे से जुड़ा हुआ नजर आ रहा है और यही तो योग की ताकत है। योग सबको जोड़ता है, योग सबको साथ लाता है।

योग दिवस के अवसर पर बंगाल में होना बहुत ही विशेष है। बंगाल की ये पवित्र भूमि, जहां भगवान रामकृष्ण परमहंस जैसे सिद्ध संतों ने अवतार लिया, जहां से निकलकर स्वामी विवेकानंद ने पूरे विश्व को योग से परिचय कराया, जहां महर्षि अरविंद जैसे महान योगी ने जन्म लिया, लाहिड़ी महाशय जैसे महान योगियों ने जहां योग परंपरा को नई ऊंचाइयों तक पहुंचाया, उसी धरती पर सामूहिक योग का अनुभव, एक अलग आध्यात्मिक अनुभूति दे रहा है। इसी बंगाल की धरती पर जन्मे गुरुदेव रवीन्द्रनाथ ठाकुर का मानना था कि मनुष्य की पहचान अलग-अलग रहने में नहीं, बल्कि अपने आसपास की दुनिया से जुड़ने में है। यही जुड़ाव योग का मूल भाव है। महर्षि अरविंद भी कहते थे- हमारा पूरा जीवन योग है, चाहे हमें इसका बोध हो या ना हो। योग जब स्वभाव में आता है तो वो मानवीय एकता का आधार बन जाता है।

योग केवल शारीरिक श्रम का साधन नहीं है। योग किसी एक आयु वर्ग के लिए सीमित भी नहीं है। भारत में हम जानते हैं और देखते आए हैं, योग मानव के जीवन का चेतना के साथ, ऊर्जा के साथ एक प्रकाश भी है। इसीलिए, इस वर्ष अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस की थीम रखी गई है- Yoga for Healthy Ageing है। उम्र बढ़ने पर भी हम स्वस्थ रह सकते हैं, हम ऊर्जावान और सक्रिय रह सकते हैं, योग हमें इसके लिए मार्ग दिखाता है। Friends, When we speak of "Yoga for Healthy Aging," It means that we can work to ensure that age does not reduce human potential. Yoga can help human life to aspire for constant growth. Our target must be to be more flexible at 40 than we were at 20. Our target must

be to be more energetic at 50 than we were at 30. Our target must be to be more resistant to lifestyle diseases at 70 than we were at 50. This is where Yoga can help us. It helps us tune our bodies to be flexible. It keeps our energy levels high, it also helps us maintain a calm stress-free life and helps keep lifestyle diseases away. Moreover, with regular practice, Yoga teaches us to remain lifelong learners of our own bodies and minds. The more we know about ourselves, the better we can manage ourselves. That is why, Yoga for Healthy Aging. This theme must be seen as one for people of all ages, not just for the elderly.

गीता में भगवान कृष्ण ने योग के विषय में कहा है-

**युक्त आहार विहारस्य, युक्त चेष्टस्य कर्मसु।**

**युक्त स्वप्न अव-बोधस्य, योगो भवति दुःखहा।।**

अर्थात्, संतुलित आहार विहार से, संतुलित क्रियाओं और कर्मों से संतुलित नींद और जागने से, योग दुःखों का नाश करने वाला हो जाता है। ये संतुलन ही योग का आधार है। यही संतुलन हमारे जीवन का आधार भी है। लेकिन ज्यादातर लोग आज इस आधुनिक समय में जीवन के असंतुलन से ही जूझ रहे हैं, बहुत मशक्कत करनी पड़ रही है उनको, योग हमें जीवन को balanced way में जीने की कला सिखाता है। योग हमें do's और don'ts सिखाता है। और जब हम हमारे शरीर को सही ढंग से चलाना सीख लेते हैं, तो स्वास्थ्य हमारा स्वभाव बन जाता है।

योग केवल हमारे शारीरिक स्वास्थ्य पर ही फोकस नहीं करता, योग मानसिक स्वास्थ्य से शारीरिक स्वास्थ्य का मार्ग दिखाता है। इसीलिए, योग के विषय में ''युक्त चेष्टस्य कर्मसु'' कहा गया है। यानी, हमें क्या करना चाहिए, क्या नहीं करना चाहिए, इसका बोध! ये बोध हमारे जीवन में शांति का स्रोत तो बनता ही है, इससे विश्व शांति का मार्ग भी खुलता है। इसीलिए, योग आज केवल हमारी पर्सनल लाइफ-स्टाइल के लिए जरूरी नहीं है इतना ही नहीं है, योग दुनिया के बेहतर भविष्य के लिए एक आवश्यकता भी है।

अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर करोड़ों लोग योग से जुड़ते हैं। लेकिन आज का ये दिन हमें अपने साझा संकल्प को फिर दोहराने का अवसर देता है। आइए, हम संकल्प लें, योग को केवल एक दिवस तक सीमित नहीं रखेंगे, योग को केवल एक कार्यक्रम तक सीमित नहीं रखेंगे। हम योग को अपने जीवन का हिस्सा बनाएंगे। अपने परिवार का हिस्सा बनाएंगे। अपनी आने वाली पीढ़ियों का हिस्सा बनाएंगे।

इसी दिशा में, इस वर्ष ''योग 365'' की पहल को भी आगे बढ़ाया गया है। इसके तहत 100 दिन के ऑनलाइन योग कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जिसमें अभूतपूर्व जनभागीदारी देखी गई है। 130 देशों के 30 लाख से अधिक लोगों ने इसमें भाग लिया है।

जब समाज स्वस्थ होगा, तब राष्ट्र भी अधिक सक्षम, अधिक समृद्ध और आत्मविश्वासी बनेगा। मैं आप सबके लिए कामना करता हूं, ''सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामयाः।''।

# योग से मानव कल्याण - डॉ. मोहन यादव

- **वैश्विक शांति और वैश्विक कल्याण को बढ़ावा देता है योग दिवस।**
- **विश्व में 2500 स्थानों और 210 से अधिक दूतावासों में मना योग उत्सव।**
- **हमारी संस्कृति में संसार एक परिवार है।**

प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के कार्यकाल के सफलतम 12 वर्ष पूर्ण होने पर यह सुखद संयोग बना है। इस वर्ष राष्ट्रीय कार्यक्रम का नेतृत्व प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी द्वारा सांस्कृतिक और ऐतिहासिक नगरी कोलकाता से किया जा रहा है। दुनिया के करीब 2500 स्थानों पर योगाभ्यास किया जा रहा है, 210 से अधिक दूतावास भी कार्यक्रम में हिस्सेदारी कर रहे हैं। भारत ने योग के रूप में दुनिया को मानव कल्याण का उपहार सौंपा है। योग का अर्थ है जोड़ना, भारत ने अपने ज्ञान, विवेक और विचार से सदैव सभी को एक-दूसरे से जोड़ा है। प्रधानमंत्री जी ने भारत की प्राचीन ऋषि परंपरा, हमारी आध्यात्मिक चेतना और समृद्ध सनातन संस्कृति का वैश्विक पटल पर परिचय कराया है। वर्ष 2014 में प्रधानमंत्री जी ने विश्व योग दिवस का प्रस्ताव संयुक्त राष्ट्रसभा में रखा तो 175 से ज्यादा देशों ने इसका ऐतिहासिक समर्थन किया था। मध्यप्रदेश के कोने-कोने को योग से जोड़ने के लिए हर घर योग अभियान सफलतापूर्वक संचालित किया गया है। यह मध्यप्रदेश का सौभाग्य है कि 12वां अंतरराष्ट्रीय योग दिवस कार्यक्रम संस्कारधानी जबलपुर में राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मु के मुख्य आतिथ्य में आयोजित हुआ।

सनातन संस्कृति ने सदैव संसार को एक परिवार के रूप में देखा है। हमने कभी भौगोलिक सीमाओं तक अपनी सोच को सीमित नहीं किया है, अपितु विश्व को वसुधैव कुटुम्बकम का अमर संदेश दिया। हमारे ऋषियों ने सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे संतु निरामयः की कामना की। मध्यप्रदेश योगियों की तपोस्थली रही है। भगवान श्री कृष्ण को मध्यप्रदेश की धरती पर योग का ज्ञान प्राप्त हुआ। मध्यप्रदेश की सांस्कृतिक और आध्यात्मिक संपन्नता गौरवशाली इतिहास का अभिन्न अंग रही है। योगेश्वर श्रीकृष्ण ने उज्जैन स्थित सांदीपनि आश्रम में शिक्षा ग्रहण की। यहां उन्होंने 64 कला और 14 विद्याओं का गहन अध्ययन किया। इनमें योग विज्ञान सबसे प्रमुख था। अंतरराष्ट्रीय योग दिवस पर दुनिया के अधिकांश देशों में योगाभ्यास हो रहा है। यह भारत की गौरवशाली संस्कृति का प्रतीक है। भारत एक बार फिर दुनिया को हमारी समृद्ध संस्कृति से परिचित करा रहा है। 21 जून को अंतरराष्ट्रीय योग दिवस के साथ-साथ सूर्य देव की कक्षा परिवर्तन का दिन भी है। ▪

# भारतीय योग को पहचान मिली - नितिन नवीन

- **विकसित भारत का लक्ष्य केवल सरकार का नहीं, बल्कि 140 करोड़ देशवासियों का साझा संकल्प है। हर युवा को अपने साथ-साथ देश का भविष्य भी लिखना है।**
- **देश का युवा केवल अपना भविष्य नहीं लिखेगा, बल्कि भारत का भविष्य भी तय करेगा। इसलिए युवाओं को संघर्ष, परिश्रम और आत्मविश्वास के साथ आगे बढ़ना चाहिए।**
- **जो देश अपनी संस्कृति, विरासत और मूल्यों पर गर्व करता है, वही विश्व में नेतृत्व करता है। यशस्वी प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में भारत अपनी सांस्कृतिक पहचान को सशक्त करते हुए विश्व को सकारात्मक दिशा दिखा रहा है।**

भारत की संस्कृति और योग को माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने एक अलग पहचान दिलाई है। उन्होंने पूरे विश्व पटल पर न केवल भारतीय संस्कृति, बल्कि भारतीय परचम को भी लहराने का कार्य किया है। विश्व योग दिवस के उपलक्ष्य में 190 देश भारत के साथ मिलकर योग के महत्व को समझते हुए आगे बढ़ रहे हैं। ऐसे में हम भारतवासियों का भी कर्तव्य है कि हम अपने जीवन और दिनचर्या में योग को आत्मसात करें तथा स्वयं को स्वस्थ रखें। यदि इस देश का एक-एक नागरिक स्वस्थ रहेगा, तभी यह देश भी स्वस्थ होकर निरंतर आगे बढ़ता रहेगा। श्रद्धेय अटल जी ने जिस शब्द को जय विज्ञान के साथ जोड़ा था, माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने उसे जय अनुसंधान के साथ जोड़ा। समय-समय पर हुए बदलावों के साथ हमारे नेतृत्वकर्ताओं ने केवल शब्दों के माध्यम से ही नहीं, बल्कि आने वाली पीढ़ियों को उस दिशा में आगे बढ़ने के लिए प्रेरित भी किया है, जो इस देश के विकास तथा इसकी विरासत को आगे बढ़ाने वाली है।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने योग और भारतीय संस्कृति को विश्व पटल पर नई पहचान दिलाई है। आज 190 देश भारत के साथ मिलकर योग दिवस मना रहे हैं।

अंतरराष्ट्रीय योग दिवस केवल हमें पहचान ही नहीं देता, बल्कि हमें उत्साह भी प्रदान करता है कि किस प्रकार भारत आज अनेक क्षेत्रों में अगुवाई कर रहा है। आज हम डिजिटल क्रांति की बात करते हैं, स्टार्टअप की बात करते हैं, यूनिकॉर्न की बात करते हैं और इनोवेशन की बात करते हैं। इन सभी क्षेत्रों में प्रत्येक भारतीय युवा अग्रिम रूप से आगे बढ़कर नेतृत्व कर रहा है। यह समय भारत को 2047 तक विकसित भारत बनाने की दिशा में आगे बढ़ने का है। 2047 तक विकसित भारत बनाने का जो मंत्र है, वह हम सभी देशवासियों का सपना बनना चाहिए। एक समय था जब अमेरिका ने एक साथ बैठकर एक सपना देखा था। वह सपना अमेरिका को महान बनाने का था। उस देश के लोगों ने एक सामूहिक स्वप्न देखा। इसी प्रकार चीन के लोगों ने भी यह सोचना शुरू किया था कि चीन को महान कैसे बनाया जाए और इस दिशा में एक साथ आगे बढ़ा जाए। भारत में लंबे समय तक हम एक साथ किसी एक स्वप्न के साथ नहीं जुड़ पाए, लेकिन हमारा सौभाग्य है कि हमें ऐसे नेतृत्वकर्ता मिले हैं, जिन्होंने इस देश को एक साथ एक स्वप्न के साथ आगे बढ़ने का मार्ग दिखाया है। उस मार्ग का मूल मंत्र 'सबका साथ, सबका विकास, सबका विश्वास, सबका प्रयास' है। सबके विश्वास

और सबके प्रयास के माध्यम से हम 2047 के विकसित भारत के सपनों का भारत बनाना चाहते हैं। हम सभी का सपना होना चाहिए कि 2047 में हमारा भारत कैसा विकसित हो और उस सपने को हर क्षेत्र तथा हर दिशा में आगे बढ़ाना है।

राजनीति ही केवल एकमात्र प्लेटफॉर्म नहीं है। हम जहां-जहां हैं, अभियंता के रूप में, चिकित्सक के रूप में, अनुसंधान के क्षेत्र में, पत्रकारिता के क्षेत्र में, सैनिक के रूप में, मजदूर के रूप में या किसान के रूप में, हमें जहां भी अवसर मिलता है, वहां निश्चित रूप से आगे बढ़कर अपने साथ-साथ इस देश को भी विकास के रास्ते पर आगे ले जाना है। 2047 का जो सपना हम सब मिलकर देखेंगे, उसे निश्चित रूप से साकार किया जा सकता है। जब माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने कहा था कि यदि 125 करोड़ देशवासी एक-एक कदम एक साथ चल पड़ें, तो 125 करोड़ कदम भारत को आगे ले जा सकते हैं। यदि हम इन शब्दों के साथ स्वयं को जोड़ते हैं, तो यह एक बड़ी प्रेरणा है। अनुसंधान का यह एक बड़ा अवसर था। जब आपदा का समय आया और कोरोना का वह कालखंड सामने था, तब हमारे लोगों ने अपने अनुसंधान के बल पर न केवल भारत को वैक्सीन दी, बल्कि पूरे विश्व को वैक्सीन से जोड़ने का कार्य किया। हम 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की बात करते हैं और कहीं न कहीं उस नारे को भी हमने चरितार्थ किया।

हमें स्वस्थ रहना है और अपने स्वास्थ्य की भी चिंता करनी है। जो देश अपनी विरासत पर गर्व करता है, वही देश अपना भविष्य भी सुनहरा बना पाता है। पिछले वर्षों में हमेशा अपनी विरासत को संजोने का प्रयास किया गया है। साथ ही इस बात की भी चिंता की गई है कि सरकार के माध्यम से भारतीय परंपराएं, भारतीय संस्कृति और भारतीय मूल्य न केवल देशवासियों तक पहुंचें, बल्कि दुनिया को भी एक सकारात्मक संदेश दें।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के 12 वर्षों के विजन और 12 वर्षों के इस कार्यकाल में यदि देश ने किसी एक चीज को सबसे ऊंचा स्थान दिया है, तो वह उसका सम्मान और आत्मविश्वास है। आज यदि 140 करोड़ देशवासी एक साथ एक स्वप्न देखने और उसे साकार करने की दिशा में आगे बढ़ रहे हैं, तो यही भारत की सबसे बड़ी ताकत है। इस ताकत को हम सभी को संजोकर रखना है।

हम लोगों ने कई विषम परिस्थितियां देखी हैं। उन विषम परिस्थितियों से यदि कोई सीख लेने की आवश्यकता है, तो वह यह है कि हमें अपने देश की मिट्टी पर गर्व करना चाहिए और देश के तिरंगे पर गर्व करना चाहिए। देश का तिरंगा और देश की मिट्टी ही हमें आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करती है, उत्साहित करती है और अपनी जड़ों से जोड़े रखती है। जीवन में राजनीति का विषय अलग हो सकता है, लेकिन जीवन में शॉर्टकट को स्थान नहीं देना चाहिए। कई बार युवा साथी शॉर्टकट पर विश्वास करते हैं, लेकिन मेरा मानना है कि जीवन की लंबी यात्रा ही वास्तविक सच्चाई है। जब-जब व्यक्ति शॉर्टकट अपनाता है, तब वह कुछ सफलताएं तो अवश्य प्राप्त कर लेता है, लेकिन जीवन की जो मूल्यवान सफलता होती है, उससे पीछे रह जाता है। युवा साथी संघर्ष को अपना साथी बनाएं, अपनी क्षमता पर विश्वास करें और उस दिशा में आगे बढ़ें, जहां उनका भी भविष्य है और भारत का भी भविष्य है।

जब भी मैं युवा साथियों से मिलता हूं तो उनके बीच तीन पंक्तियां रखने का प्रयास करता हूं। ये पंक्तियां मुझे भी प्रेरित करती हैं।

''पास्ट इज अ ट्रेजर, इट इज टू बी प्रिजर्व'', अर्थात् अतीत एक खजाना है और उसे हमेशा संजोकर रखना चाहिए।

''प्रेजेंट इज स्ट्रगल, इट इज टू बी कंटिन्यूड'', अर्थात् वर्तमान संघर्ष का समय है और यदि वर्तमान में संघर्ष मिल रहा है, तो समझना चाहिए कि व्यक्ति सही दिशा में आगे बढ़ रहा है।

''फ्यूचर इज अ ड्रीम, इट इज टू बी अवेटेड'', अर्थात् भविष्य एक सुनहरा सपना है और उसका धैर्यपूर्वक इंतजार करना चाहिए।

यदि जीवन में अतीत को, संघर्ष को और धैर्य को अपना साथी बना लिया जाए, तो जीवन का कोई भी मुकाम व्यक्ति को पीछे नहीं रख सकता। ऐसे में वह निश्चित रूप से अपनी मंजिल को प्राप्त करेगा। ■

# अधिकांश देशों ने योग अपनाया

हेमंत खण्डेलवाल

- **प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के प्रयासों से योग वैश्विक जनआंदोलन बन गया।**
- **योग व्यक्ति के तन-मन को स्वस्थ रखकर सकारात्मकता का संचार करता है।**

वर्ष 2015 में जब अंतरराष्ट्रीय योग दिवस की शुरुआत हुई थी तब 84 देशों ने नई दिल्ली में आयोजित कार्यक्रम में भागीदारी की थी, जबकि आज विश्व के अधिकांश देशों में योग अपनाया जा रहा है। वर्ष 2023 में संयुक्त राष्ट्रसंघ मुख्यालय में आयोजित अंतरराष्ट्रीय योग दिवस कार्यक्रम में प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी की गरिमामय उपस्थिति ने योग को विश्व मंच पर नई ऊंचाइयों तक पहुंचाने का कार्य किया। प्रधानमंत्री जी के नेतृत्व में योग देश के गांव-गांव और घर-घर तक पहुंच रहा है तथा लोगों के जीवन का महत्वपूर्ण हिस्सा बन रहा है। योग हजारों वर्षों से भारत की सांस्कृतिक और आध्यात्मिक पहचान रहा है, लेकिन प्रधानमंत्री जी के सतत् प्रयासों के कारण आज योग को वैश्विक स्तर पर नई पहचान मिली है। योग केवल शारीरिक स्वास्थ्य का माध्यम नहीं है, बल्कि मानसिक संतुलन, आत्मिक शांति और सकारात्मक जीवनशैली का आधार भी है। योग व्यक्ति के तन और मन दोनों को स्वस्थ रखता है, इसलिए प्रत्येक नागरिक को इसे अपनी दैनिक दिनचर्या का अभिन्न हिस्सा बनाना चाहिए। योग व्यक्ति के तन-मन को स्वस्थ रखकर सकारात्मकता का संचार करता है। भारत को आत्मनिर्भर बनाने के लिए योग को जन-जन का संकल्प बनाया जाए। सभी लोग योग करें और स्वस्थ रहें। योग करने से व्यक्ति पूरी तरह से स्वस्थ रहता है। ■

# अभियान से भावी पीढ़ियों को सुरक्षा - नितिन नवीन

- **प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने 'एक पेड़ माँ के नाम' अभियान को जन-जन का अभियान बनाया तथा देशवासियों को पर्यावरण संरक्षण के संकल्प से जोड़ा।**
- **'एक पेड़ माँ के नाम' अभियान देशवासियों को अपनी माँ की स्मृतियों को संजोने और उनके प्रति सम्मान व भावनात्मक जुड़ाव को सदैव जीवित रखने की प्रेरणा देता है।**
- **यदि हम एक वृक्ष लगाते हैं, तो हम अपने जीवन को सुरक्षित करते हैं और आने वाली पीढ़ियों को भी सुरक्षित करते हैं।**

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के आव्हान पर 'एक पेड़ माँ के नाम' अभियान जनभागीदारी से एक सशक्त जनआंदोलन का रूप ले रहा है, जो पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूकता बढ़ाते हुए हरित एवं संतुलित भविष्य के निर्माण की दिशा में प्रेरित करता है।

विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर हम सब ने प्रत्येक वर्ष की भांति इस दिन के साथ-साथ पूरे वर्ष वृक्षारोपण को एक संकल्प के रूप में लेने का कार्य किया है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने जिस प्रकार इस अभियान को जनभागीदारी का स्वरूप प्रदान किया है, वह अत्यंत प्रेरणादायी है। जब यशस्वी प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने 'एक पेड़ माँ के नाम' का आव्हान किया, तब उन्होंने देश के सभी लोगों को इस मुहिम से जोड़ दिया। प्रत्येक व्यक्ति के मन में अपनी माँ के प्रति एक विशेष स्थान होता है और उसी भाव से वृक्षारोपण को जोड़कर एक बड़ा संदेश दिया गया है। यह अभियान देशवासियों को अपनी माँ की स्मृतियों को संजोने तथा उनके स्मरण को अपने हृदय और मन में सदैव जीवित रखने की प्रेरणा देता है। इस वृक्षारोपण अभियान से जुड़ना इस दिशा में एक अत्यंत सार्थक प्रयास है।

प्रत्येक देशवासी से यह अपील की जानी चाहिए कि यदि हम एक वृक्ष लगाते हैं, तो हम अपने जीवन को सुरक्षित करते हैं और आने वाली पीढ़ियों को भी सुरक्षित करते हैं। जिस प्रकार पूरे विश्व में पर्यावरण को लेकर चिंता व्यक्त की जा रही है, उस दिशा में प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी की यह पहल और देशवासियों की जनभागीदारी से जनआंदोलन का रूप ले चुका यह कार्यक्रम भारत को सुरक्षित एवं स्वस्थ वातावरण प्रदान करने की दिशा में एक बड़ा कदम है। हम सब इस वृक्षारोपण अभियान से जुड़ें। अपनी माँ की स्मृति में वृक्षारोपण करें और भविष्य में लगाए गए वृक्षों का संरक्षण भी सुनिश्चित करें, ताकि अपने देश को स्वस्थ, सुरक्षित और हरित बनाए रखा जा सके। ■

# समुद्र से आसमान तक सुरक्षित और आत्मनिर्भर बन रहा भारत

2026 का आधा साल बीतने को है। इन 6 महीनों में हमने 'मन की बात' में देशवासियों की अनेक उपलब्धियों पर चर्चा की है। जून में भी, देश ने कुछ ऐसी उपलब्धियाँ हासिल की हैं, जो हर देशवासी को गर्व से भर देती हैं। ये सफलताएँ देश की सुरक्षा और आत्मनिर्भरता से जुड़ी हैं। हाल ही में मुझे कोलकाता में नौ-सेना से जुड़े एक कार्यक्रम में शामिल होने का अवसर मिला। वहाँ INS दूनागिरी, INS संशोधक और INS अग्रय को भारतीय नौ-सेना के बेड़े में शामिल किया गया। इन ships की design और manufacturing तक, सब कुछ स्वदेशी है।

जून के महीने में ही aviation sector में भी देश ने एक बड़ी सफलता पाई। C-295, ये विमान 'Made In India' है और C-295 विमान ने अपनी पहली उड़ान पूरी की है, और ऐसे 40 विमान, भारत में ही बनाए जा रहे हैं। इससे MSME और Aerospace sector को नई शक्ति मिल रही है। रोजगार के अवसर बढ़ रहे हैं। और आत्मनिर्भर भारत का संकल्प भी मजबूत हो रहा है। इसी महीने DRDO ने स्वदेशी 'Long Range Land Attack Cruise Missile' का भी सफल परीक्षण किया है। इसको DRDO की Laboratories और Indian Industries Partners ने मिलकर बनाया है, यानि, आज समुद्र से लेकर आकाश तक हमारा भारत अधिक सुरक्षित और आत्मनिर्भर बन रहा है।

जून में एक और आयोजन हुआ जिसमें पूरी दुनिया भारत के प्रयासों से जुड़ी, और ये कार्यक्रम था 'अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस'। इस बार दुनिया के 2500 से अधिक स्थानों पर योग के अनेक विविध कार्यक्रम हुए। हमारे देश में करोड़ों लोगों ने स्थान-स्थान पर योग कार्यक्रमों में हिस्सा लिया। इस महीने, अहमदाबाद में आयोजित 'विश्व योगासन चैम्पियनशिप' की भी बड़ी चर्चा हुई। इसमें भारत ने कुल 114 पदक जीते हैं, इनमें 102 गोल्ड मेडल भी शामिल हैं। भारत इस चैम्पियनशिप की पदक तालिका में पहले स्थान पर रहा।

**INS दुनागिरि, INS संशोधक और INS अग्रय का डिजाइन से लेकर निर्माण तक सब कुछ स्वदेशी है।**

किसी भी राष्ट्र की आत्मा उसके लोग होते हैं। और जब उस देश के लोग कोई संकल्प लेते हैं तो कोई भी शक्ति उन्हें अपने लक्ष्य से डिगा नहीं पाती। राष्ट्र निर्माण में जन-भागीदारी की ये ताकत भारत की बहुत बड़ी पूंजी है और इस जन-भागीदारी का हम बार-बार अनुभव कर रहे हैं।

पश्चिम एशिया में बनी युद्ध की स्थितियों को देखते हुए, मैंने देशवासियों से कुछ आग्रह किए थे। मैंने कहा था कि जहाँ तक संभव हो, कुछ समय के लिए गोल्ड, सोना खरीदने से बचें। लोगों से कहा था कि विदेश में छुट्टियाँ मनाने से बचें, मैंने लोगों से car pooling को भी बढ़ावा देने की अपील की थी, मैंने किसानों से chemical मुक्त खेती के लिए, खेत बचाने के लिए और प्राकृतिक खाद का ज्यादा-से-ज्यादा इस्तेमाल का आग्रह किया था।

मेरी अपील का उन्होंने ना सिर्फ समर्थन किया बल्कि हर तरफ से उसमें अपना सहयोग कर रहे हैं। मुझे कई परिवारों ने संदेश भेजकर अपने अनुभव साझा किए हैं। कितने ही परिवारों ने तय किया है कि घर के विवाह में इस बार सोना नहीं खरीदेंगे। जरूरत पड़ी तो पुराने सोने को recycle करके नए गहने बना लेंगे। कितने ही लोगों ने social media पर ये भी लिखा है कि कैसे उन्होंने इस बार विदेश यात्रा को टाल दिया है।

car pooling को लेकर भी लोगों ने अनेक अनुभव साझा किए हैं। जो लोग हर दिन एक ही दिशा में अपने-अपने वाहनों से जाते थे, वे अब साथ जाने लगे हैं। लोग हर संभव बस और मेट्रो का उपयोग कर रहे हैं। इससे पेट्रोल और डीजल की बचत हो रही है। इसी तरह देश के अलग-अलग हिस्सों में प्राकृतिक खाद की खपत बढ़ने की भी खबरें आ रही हैं।

इस global crisis का हम भारतीय मिलकर मुकाबला कर रहे हैं। जनभागीदारी की यही शक्ति हमें मजबूती देगी, हमें सफल बनाएगी।

हमारे देश में जन्मदिन, शादी-ब्याह पारिवारिक कार्यक्रम होने के ही साथ ही पूरे समाज का भी उत्सव होता है। हर परिवार चाहता है कि उसकी खुशियाँ दूसरों के साथ भी साझा हों। लोग मेहमानों को उपहार भी देते हैं।

महाराष्ट्र के नांदेड़ में एक परिवार ने अपनी खुशियाँ बाँटने के लिए ऐसा काम किया है जो चर्चा का विषय बन गया है। यहाँ नांदेड़ के बहादुरपुरा गाँव में पेठकर परिवार रहता है। इस परिवार ने सोचा कि अगर खुशी बाँटनी ही है, तो ऐसी चीज दी जाए, जो मुश्किल समय में किसी परिवार का सहारा बने। अपने घर में विवाह के अवसर पर इस परिवार ने गाँव के लगभग साढ़े तीन हजार लोगों के लिए दुर्घटना बीमा की

व्यवस्था की। हर व्यक्ति को एक लाख रुपए का बीमा कवर दिया गया। इस पहल के पीछे की भावना बहुत स्पर्श करने वाली है। परिवार ने देखा था कि दुर्घटना के बाद परिवारों को आर्थिक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। ऐसे समय में एक छोटी-सी सहायता भी बहुत बड़ा संबल बन जाती है।

सरकार देश के करोड़ों परिवारों तक सुरक्षा का कवच पहुंचा रही है। 'प्रधानमंत्री सुरक्षा बीमा योजना' के तहत केवल 20 रुपये के सालाना premium पर दो लाख रुपये तक का 'दुर्घटना बीमा' मिलता है। अब तक इस योजना से 58 करोड़ से अधिक लोग जुड़ चुके हैं। इनमें करीब 28 करोड़ हमारी माताएं, बहनें, बेटियाँ हैं, महिलाएं हैं। इस योजना से पीड़ित परिवारों को अब तक जो हिसाब मिला है 3,700 करोड़ रुपये से अधिक की सहायता मिल चुकी है।

उसी प्रकार से 'प्रधानमंत्री जीवन ज्योति बीमा योजना' भी उतनी ही अहम है। ये योजना व्यक्ति की दुखद मृत्यु होने पर उसके परिवार को दो लाख रुपये का बीमा कवर देती है। इसका वार्षिक premium सिर्फ 436 रुपये है। इस योजना से अब तक 27 करोड़ से अधिक लोग जुड़े हैं। इसके तहत देश के करीब 11 लाख परिवारों को करीब 22 हजार करोड़ रुपये की सहायता मिल चुकी है। ये आकड़ें बहुत बड़े हैं। इन आकड़ों के पीछे लाखों परिवारों की अपनी-अपनी कहानी हैं। कहीं किसी माँ को बच्चों की पढ़ाई जारी रखने में सहायता मिल गई, कहीं किसी पत्नी को घर की जिम्मेदारियाँ संभालने का सहारा मिल गया।

कई बार बहुत बड़ी सुरक्षा की शुरुआत बहुत छोटी राशि और एक छोटे-से कदम से हो सकती है, छोटा-सा भी निर्णय बहुत बड़ा बदलाव करता है।

'मन की बात' में अब बात एक ऐसे विषय की जो हजारों साल पुराना है, हजारों साल से मानव समाज में घर कर करके बैठ गया है। ये विषय है -अंधविश्वास का। अंधविश्वास कई बार केवल एक गलत धारणा नहीं होता। वो डर पैदा करता है और जब डर मन पर हावी हो जाता है, तो इंसान सच को देखना ही बंद कर देता है। अंधविश्वास में डूबे लोग, फिर बिना तर्क के, बिना सत्य जाने, ऐसे फैसले लेने लगते हैं, जिनका बड़ा नुकसान होता है। वहीं समाज में ऐसे लोग भी होते हैं, जो विज्ञान, अनुभव और तर्क के आधार पर उन धारणाओं को चुनौती देते हैं। अंधविश्वास से विश्वास तक की ये यात्रा आसान नहीं होती और आज मैं ऐसी ही एक सफल यात्रा के बारे में आपको जरूर बताना चाहता हूँ।

असम में एक पक्षी पाया जाता है। उस पक्षी का नाम है 'हरगिला'। 'हरगिला' एक दुर्लभ पक्षी है। ये प्रकृति को स्वच्छ रखने में अहम भूमिका निभाता है। लेकिन असम के कुछ इलाकों में लंबे समय तक इसे अशुभ माना जाता था। लोग इसे अपने आसपास देखना पसंद नहीं करते थे। कई बार उन पेड़ों को भी काट दिया जाता था जिन पर हरगिला के घोसलें बने होते थे। सोचिए, एक ऐसा पक्षी जो पर्यावरण की सफाई में मदद करता है, वही 'हरगिला' लोगों के डर का शिकार बन गया था। इसी दौरान जीव-वैज्ञानिक पूर्णिमा देवी बर्मन ने ये सब देखा। उन्होंने लोगों के मन में बैठी गलत धारणा को बदलने का संकल्प लिया। उन्होंने महिलाओं से बात की, उन्होंने लोगों को विज्ञान के आधार पर समझाया, धीरे-धीरे महिलाएं इस अभियान से जुडने लगीं। फिर एक बड़ा बदलाव शुरू हुआ। जिस पक्षी को कभी अशुभ मानकर भगाया जाता था, वही गांवों की पहचान बनने लगा। हजारों ग्रामीण महिलाएं 'हरगिला' को बचाने के लिए आगे आईं-आज उन्हें 'हरगिला आर्मी' के नाम से जाना जाता है।

इन महिलाओं ने समाज के साथ संघर्ष भी किया। समाज को समझाने के लिए दिन-रात काम किया और अंधविश्वास को पीछे छोड़ करके रहे। उन्होंने दिखाया है जब सही जानकारी पहुंचाई जाती है, तो वर्षों पुरानी सोच भी बदल सकती है।

जो खेलता है, वो खिलता है। आज देश में ऐसे युवाओं की संख्या बहुत तेजी से बढ़ रही है, जो खेल भी रहे हैं और खिल भी रहे हैं। पहले की तुलना में अब कहीं अधिक युवा खेलों को career के रूप में अपना रहे हैं। मुझे नागालैंड के दो ऐसे प्रयासों के बारे में जानकारी मिली है, जो बहुत दिलचस्प हैं। पहला प्रयास है 'Nagaland Baby League'. नाम सुनकर आपको जरूर लगता होगा ये बहुत छोटे बच्चों की कोई साधारण लीग होगी, लेकिन ऐसा नहीं है। ये 5 से 10-12 साल की आयु के छोटे-छोटे बच्चे, फूल जैसे बच्चों की एक असाधारण league है और इन बच्चों के football खिलाड़ियों की एक ऐसी league है, जो उनकी रफ्तार को और प्रतिभा के लिए उनको प्रेरित भी करती है और उनकी पहचान भी बनाती है। इसकी शुरुआत नागालैंड के अधिक-से-अधिक बच्चों को football से जोड़ने के लिए हुई थी। पांच से बारह वर्ष तक के लड़के और लड़कियां इसमें हिस्सा ले सकते हैं। ये league अब अपने तीन वर्ष पूरे कर चुकी है। इस लीग का बच्चों के मन पर बहुत अच्छा प्रभाव पड़ा है।

नागालैंड में एक और अच्छा प्रयास हो रहा है। इसका नाम है, 'Nagaland Women Futsal League', हो सकता है आपके लिए ये 'futsal' एक नया नाम होगा, मैं आपको बताता हूँ Futsal को indoor football भी कहा जाता है। इसमें एक टीम में केवल पांच खिलाड़ी होते हैं। खेल का मैदान भी football के मैदान से बहुत छोटा होता है। इस कारण खिलाड़ियों को तेज फैसले लेने होते हैं। उन्हें अपनी technique और skill का बेहतर इस्तेमाल करना पड़ता है। नागालैंड की Women Futsal League हमारी बेटियों को अपनी प्रतिभा दिखाने का अच्छा अवसर दे रही है। मैं ऐसी पहलों के लिए नागालैंड के लोगों की सराहना करता हूं। ऐसे प्रयास देश के दूसरे हिस्सों को भी प्रेरणा देते हैं।

ये technology का युग है। हर दिन नई research हो रही है। नए-नए AI innovations सामने आ रहे हैं। इस दौर में एक सवाल बहुत महत्वपूर्ण है-लोगों की creativity को कैसे बचाए रखा जाए? नई technology के साथ आगे बढ़ते हुए हम अपनी जड़ों से कैसे जुड़े रहें? इन सवालों का समाधान खोजा है 'नालंदा विश्वविद्यालय' ने। हजारों साल पुरानी हमारी नालंदा विश्वविद्यालय अब नए अवतार के रूप में भारत का भाग्य गढ़ रही है। दो साल पहले मुझे नालंदा विश्वविद्यालय के नए परिसर के लोकार्पण का अवसर मिला था। नालंदा विश्वविद्यालय ने शास्त्रार्थ की हमारी प्राचीन परंपरा को फिर से जीवंत किया है। शास्त्रार्थ केवल अपनी बात रखने का माध्यम नहीं है। ये वाद-संवाद और मंथन की एक अनुशासित प्रक्रिया है। इसमें तर्क के साथ, तथ्य के साथ, अपनी बात कहना बहुत जरूरी होता है, और उसमें आपकी महारत होनी चाहिए। दूसरों के विचारों को धैर्य से सुनने और समझने की सीख भी इस शास्त्रार्थ की प्रक्रिया से मिलती है। नालंदा विश्वविद्यालय ने इसे अपने दीक्षांत समारोह का हिस्सा बनाया। इसमें भाग लेने वाले करीब आधे students अन्य देशों से आए थे। एक प्राचीन परंपरा को आज के समय से जोड़ने का ये प्रयास बहुत सराहनीय है।

मैं देश के दूसरे विश्वविद्यालयों से भी आग्रह करूंगा कि वे ऐसी पहल पर विचार करें।

जड़ों से जुड़े रहकर युवाओं को नई technology के लिए तैयार करने का

एक और अच्छा प्रयास हो रहा है। दिल्ली में स्थित Central Sanskrit University, Artificial Intelligence और Data Science में B.tech Programme शुरू करने जा रही है। ये आधुनिक technology को भारत के पारंपरिक ज्ञान से जोड़ने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। इससे भारतीय भाषाओं के लिए नए AI tools तैयार करने में मदद मिलेगी। हमारे प्राचीन ग्रंथों और पांडुलिपियों को digital रूप में संरक्षित करने के काम को भी नई गति मिलेगी।

आज भारतीय संस्कृति दुनिया के अलग-अलग हिस्सों तक पहुँच रही है। हमारे गीत, संगीत और आध्यात्म को दुनिया-भर के लोग जान रहे हैं और अपना रहे हैं। भारत से हजारों kilometre दूर Caribbean सागर में Dominican Republic नाम का एक देश है। वहाँ भारतीयों की संख्या करीब 100 है शायद इससे भी कम होगी। इसके बावजूद भारतीय संस्कृति और आध्यात्म से जुड़ा एक बहुत अच्छा प्रयास वहाँ हो रहा है। वहाँ Spanish बोलने वाले कुछ लोगों ने एक team बनाई है। इस team का नाम है, 'ब्रहमकमल डोमिनिकाना'। team के सदस्य मिलकर वैदिक साहित्य का अध्ययन करते हैं। वे वैदिक मंत्रों का उच्चारण भी सीख रहे हैं। उन्हें इसकी कोई formal training नहीं मिली है। लेकिन उन्होंने audio recordings सुनकर वैदिक मंत्रों का सही उच्चारण सीखा है। आज वे कई मंत्रों का बहुत अच्छे से जाप कर लेते हैं। इनमें पुरुष सूक्तम, श्री सूक्तम, श्री रुद्रम, दुर्गा सूक्तम और देवी महात्मयम शामिल हैं। भारत से इतनी दूर रहकर हमारी परंपराओं को सीखने का उनका यह प्रयास बहुत प्रेरक है। मैं 'ब्रहमकमल डोमिनिकाना' वहाँ के सभी सदस्यों को उनके प्रयासों के लिए शुभकामनाएँ देता हूँ। मैं ऐसे सभी लोगों की हृदय से सराहना करता हूँ जो भारतीय संस्कृति को दुनिया भर में लोकप्रिय बनाने के लिए निरंतर प्रयास कर रहे हैं।

मेघालय की पहचान बादलों से है, खूबसूरत नजारों से है। जो मेघालय जाता है, उसे वहां के लोगों का अपनापन भी लंबे समय तक याद रहता है। लेकिन, मेघालय की एक और विशेषता है, जिसकी मैं आज, 'मन की बात' में, आपसे चर्चा करना चाहता हूं। ये है-मेघालय के रूट ब्रिज। रास्ता वाला route नहीं, जड़ों वाला root। इन रूट ब्रिजों की कहानी बहुत रोचक है। ये ब्रिज कुछ दिनों या कुछ वर्षों में नहीं बनते। इन्हें तैयार होने में कई दशक लगते हैं। रबर के पेड़ों की जड़ों को धीरे-धीरे दिशा दी जाती है। इन जड़ों को जल-धाराओं के पार ले जाया जाता है। समय के साथ वही जड़ें एक मजबूत ब्रिज का रूप ले लेती हैं। इन ब्रिजों की एक और विशेषता है। ये जीवित ब्रिज हैं। समय बीतने के साथ ये और मजबूत हो जाते हैं। इनमें मेघालय के लोगों की सृजनशीलता दिखाई देती है। इनके पीछे वर्षों का धैर्य और प्रकृति के प्रति गहरा सम्मान है। ये ब्रिज बताते हैं कि मनुष्य प्रकृति के साथ मिलकर कितनी अद्भुत चीजें बना सकता है। ये हमारे देश की, इस धरती की, धरोहर है। अब भारत ने मेघालय के रूट ब्रिजों को UNESCO World Heritage Site Network में शामिल कराने के लिए आवेदन किया है।

climate change के कारण इन रूट ब्रिजों के सामने कई चुनौतियां भी आती हैं। ऐसे समय में मेघालय के लोगों ने इस प्राकृतिक धरोहर के संरक्षण की जिम्मेदारी भी बखूबी निभाई है। पहले ये पता लगाना भी आसान नहीं था कि ऐसे ब्रिजों की संख्या कितनी है? स्थानीय लोगों ने खुद इनकी गिनती शुरू की। इसके बाद समुदायों ने इन ब्रिजों की देख-भाल की जिम्मेदारी भी संभाली। आज स्थानीय लोग 120 से अधिक रूट ब्रिजों की देख-रेख कर रहे हैं। कुछ टीमें हर साल इन पुलों की स्थिति की जांच करती हैं। कुछ लोगों ने आस-पास के क्षेत्र को मजबूत बनाने के लिए नर्सरी भी तैयार की है। इस तरह के इनके संरक्षण के लिए एक पूरा ecosystem तैयार हो गया है।

इस वर्ष हैली वार जी को Padma Award से सम्मानित किया गया है। उन्होंने अपने जीवन के 50 से अधिक वर्ष इन रूट ब्रिजों की देखभाल में लगाए हैं। उनका समर्पण हम सभी के लिए प्रेरणादायक है।

आपने कभी इन रूट ब्रिजों की यात्रा की हो, तो उनकी तस्वीरें social media पर जरूर साझा कीजिए। आपकी तस्वीरें दूसरे लोगों को भी मेघालय की इस अनोखी धरोहर के बारे में जानने के लिए प्रेरित करेंगी।

हम सभी चाहते हैं कि हमारा गांव साफ-सुथरा हो, हमारा शहर सुंदर दिखे। लेकिन शायद ही कभी रुककर ये सोचा जाता है कि हमारे आस-पास जो कचरा जमा होता है, कौन उसे साफ करता है? ज्यादातर लोग तो यही मानकर चलते हैं कि ये किसी और की जिम्मेदारी है, और, वो ही सफाई करेगा। लेकिन हमारे बीच कुछ ऐसे भी लोग होते हैं, जो अपनी सोच से हमें बहुत प्रेरित करते है। मुझे मध्य प्रदेश के राजगढ़ जिले के ब्यावरा की कुछ बहनों के बारे में जानने का अवसर मिला। उन्होंने अपने आस-पास फैले plastic कचरे को हटाने का संकल्प लिया। ये नहीं सोचा कि कोई आकर बदलाव लाएगा। उन्होंने खुद शहर-भर से plastic कचरा और खाली बोतलें इकट्ठा करना शुरू किया। धीरे-धीरे ये प्रयास आगे बढ़ता गया और फिर उस plastic को eco-bricks में बदला जाने लगा। आज इन्हीं eco-bricks का उपयोग सार्वजनिक स्थानों को सुंदर बनाने में किया जा रहा है। राजगढ़ में पिछले कुछ महीनों में सैकड़ों किलो plastic को recycle करके उनका बेहतर उपयोग किया गया है। यानी, जो plastic पहले शहर में प्रदूषण फैलाता था, आज वही इन बहनों के प्रयास से शहर की सुंदरता बढ़ाने में योगदान दे रहा है।

मुझे कई लोगों ने पत्र लिखकर एक खास विषय पर बात करने का सुझाव भेजा है। ये विषय 'गणेश उत्सव' से जुड़ा है। वैसे तो 'गणेश उत्सव' में अभी काफी समय बाकी है, लेकिन लोगों ने ये आग्रह किया है कि इस विषय पर अभी ही बात होनी चाहिए। दरअसल, गणेश जी की मूर्तियां बनाने का काम बहुत पहले शुरू हो जाता है। मूर्ति बनाने वाले, मूर्तियों के व्यापार से जुड़े लोग अभी से सक्रिय हो जाते हैं। इसलिए मेरा आप सभी से एक आग्रह है। आप प्रयास करें कि आपके घर, सोसायटी या आसपास की जगहों पर गणपति बप्पा की जो मूर्ति स्थापित हो, वो हमारे देश की मिट्टी से बनी हो, वो हमारे अपने कुम्हारों और स्थानीय कलाकारों के हाथों तैयार हुई हो। जो लोग गणेश जी की मूर्तियां बनाते हैं, उनसे भी मेरा आग्रह है कि वे मिट्टी की मूर्तियों को प्राथमिकता दें, और जो लोग मूर्तियां खरीदते हैं, वे भी यह जरूर देखें, कि, गणपति बप्पा की मूर्ति किससे बनी है और किस देश में तैयार हुई है। Plaster of Paris से बनी मूर्तियां बिल्कुल ना खरीदें। मिट्टी की मूर्तियां पूजा के बाद सहज रूप से पानी में विलीन हो जाती हैं। इससे हमारी नदियां, तालाबों और पर्यावरण की रक्षा होती है। हमारी आस्था भी बनी रहती है और प्रकृति के प्रति हमारा दायित्व भी पूरा होता है। जब हम स्थानीय कारीगरों से मूर्ति खरीदते हैं, हम 'Vocal for Local' के संकल्प को मजबूत करते हैं।

हमारे देश की सबसे बड़ी शक्ति, हमारे देश के लोग हैं। देश के अलग-अलग हिस्सों में हो रहे छोटे-बड़े प्रयास हमें बहुत कुछ सिखाते हैं। ये प्रयास बताते हैं कि जब मन में संकल्प हो और समाज का साथ मिले, तो कोई भी बड़ा बदलाव लाया जा सकता है। ■

# डॉ. मुखर्जी के कारण पश्चिम बंगाल भारत का हिस्सा - डॉ. मोहन यादव

आजादी के समय सरदार वल्लभभाई पटेल ने 600 से अधिक रियासतों का भारत में सफलतापूर्वक विलीनीकरण कराया, लेकिन नेहरू ने अपनी व्यक्तिगत मित्रता के कारण जम्मू-कश्मीर का जिम्मा अपने हाथों में ले लिया। परिणामस्वरूप एक ही देश में दो विधान, दो प्रधान और दो निशान की व्यवस्था थोप दी गई। कश्मीर का अलग झंडा और अलग कानून बना दिया गया। जनसंघ के संस्थापक डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी ने इस ऐतिहासिक भूल का प्रखर विरोध किया। उन्होंने 'एक देश में दो विधान, दो प्रधान और दो निशान नहीं चलेंगे' का नारा दिया और केंद्रीय मंत्रिमंडल से इस्तीफा देकर जनसंघ की स्थापना की। जब वे विरोध दर्ज कराने कश्मीर सीमा में दाखिल हुए, तो उन्हें जेल में डाल दिया गया, जहां रहस्यमयी परिस्थितियों में देश के इस महान सपूत का बलिदान हो गया। आजादी के समय जब कांग्रेस और मुस्लिम लीग के कुछ नेताओं के षड्यंत्रों के कारण देश का विभाजन धार्मिक आधार पर तय दिख रहा था, तब डॉ. मुखर्जी ने 'बंग-भंग' और विभाजनकारी ताकतों के खिलाफ देशव्यापी आंदोलन चलाया। उनके इसी अथक संघर्ष का परिणाम है कि आज पश्चिम बंगाल सुरक्षित और भारत का अभिन्न हिस्सा है। उन्होंने दंगों के उस दौर में अपनी जान जोखिम में डालकर हजारों माताओं-बहनों और नागरिकों के प्राणों की रक्षा की थी।

डॉ. मुखर्जी के 125वें जयंती वर्ष के उपलक्ष्य में मध्यप्रदेश के सभी बूथों पर गौरव कार्यक्रमों की शुरुआत हो गई है। आने वाले दिनों में प्रदेश के सभी बूथों पर कार्यक्रम आयोजित किए जाएंगे। डॉ. मुखर्जी असाधारण क्षमता, ईमानदारी और प्रशासनिक अनुभव के धनी थे। वह देश के पहले उद्योग और आपूर्ति मंत्री होने के साथ ही संविधान सभा के महत्वपूर्ण सदस्य भी रहे। उनकी विद्वत्ता का अंदाजा इस बात से लगाया जा सकता है

कि मात्र 33 वर्ष की अल्पायु में वे कोलकाता विश्वविद्यालय के सबसे युवा कुलपति बने।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने राजगढ़ जिले के ब्यावरा में महिलाओं द्वारा पर्यावरण संरक्षण के लिए किए जा रहे कार्यों की सराहना करते हुए कहा कि ब्यावरा की बहनों ने प्लास्टिक कचरे को रिसाइकिल कर इको-ब्रिक्स तैयार कर पर्यावरण संरक्षण का उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत किया है। महिलाओं का यह कार्य खुद को आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में एक बड़ा कदम भी है। हम सभी को पर्यावरण के संरक्षण के लिए कार्य करना चाहिए। प्रधानमंत्री जी ने स्वच्छता का देशव्यापी अभियान चलाकर भारत को स्वच्छता में ऊंचे पायदान पर पहुंचाने का कार्य किया है।

प्रधानमंत्री जी ने आगामी गणेश महोत्सव के अवसर पर देशवासियों से मिट्टी से निर्मित गणेश प्रतिमाएं लेने का आग्रह किया है, जिससे हमारी आस्था के साथ-साथ पर्यावरण संरक्षण का संकल्प भी होगा। हमे प्रधानमंत्री जी के आग्रह पर मिट्टी से निर्मित गणेश प्रतिमाएं स्थापित करते हुए पर्यावरण संरक्षण में अपना योगदान देना चाहिए। ■

# डॉ. मुखर्जी ने राष्ट्रहित सर्वोपरि रखा - हेमंत खण्डेलवाल

6 जुलाई को जनसंघ के संस्थापक डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी के 125वें जयंती वर्ष के अवसर पर पूरे प्रदेश में भारतीय जनता पार्टी द्वारा विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किए जाएंगे। इन कार्यक्रमों के माध्यम से उनके राष्ट्रवादी विचारों, त्याग और बलिदान को जन-जन तक पहुंचाया जाएगा। डॉ. मुखर्जी केवल जनसंघ के संस्थापक ही नहीं थे, बल्कि उन्होंने देश की एकता और अखंडता के लिए अपना संपूर्ण जीवन समर्पित कर दिया था। उन्होंने बंगाल को पाकिस्तान में शामिल होने से बचाने के लिए ऐतिहासिक संघर्ष किया और राष्ट्रहित को सर्वोपरि रखा। 23 जून 1953 को डॉ. मुखर्जी ने देश की एकता के लिए सर्वोच्च बलिदान दिया। उस समय जम्मू-कश्मीर में 'एक देश में दो विधान, दो प्रधान और दो निशान' जैसी व्यवस्था थी, जिसका उन्होंने पुरजोर विरोध किया। उनका स्पष्ट मानना था कि भारत में दो संविधान और दो व्यवस्थाएं स्वीकार्य नहीं हो सकतीं। डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी ने जिस अभियान की शुरुआत की थी, उसे प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने धारा-370 को समाप्त कर पूरा किया। इससे जम्मू-कश्मीर पूरी तरह भारत की संवैधानिक व्यवस्था का अभिन्न अंग बना और डॉ. मुखर्जी का सपना साकार हुआ। डॉ. मुखर्जी का जीवन राष्ट्रभक्ति, त्याग और अखंड भारत के संकल्प का प्रतीक है। उनकी 125वीं जयंती केवल स्मरण का अवसर नहीं, बल्कि उनके आदर्शों और राष्ट्रप्रथम की भावना को आगे बढ़ाने का संकल्प लेने का भी अवसर है।

राजगढ़ जिले के ब्यावरा की महिलाओं ने प्लास्टिक के कचरे को समस्या नहीं समाधान का माध्यम बनाया। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने 'मन की बात' कार्यक्रम के 135वें एपिसोड में मध्यप्रदेश के राजगढ़ जिले के ब्यावरा की महिलाओं के अनूठे प्रयास की प्रशंसा की। ब्यावरा की महिलाओं ने प्लास्टिक कचरे को रीसाइक्लिंग कर शहर के सौंदर्यीकरण में उपयोग किया और देश के लिए स्वच्छता का जो संदेश दिया है, उससे हम सभी को प्रेरणा लेना चाहिए।

हर व्यक्ति चाहता है कि उसका गांव और शहर साफ-सुथरा रहे, लेकिन अक्सर लोग सफाई की जिम्मेदारी किसी और पर छोड़ देते हैं। इसके विपरीत, ब्यावरा की महिलाओं ने स्वयं पहल करते हुए शहर में फैले प्लास्टिक कचरे और खाली बोतलों को एकत्र करना शुरू किया। इस पहल से न केवल प्लास्टिक प्रदूषण कम हुआ, बल्कि शहर को भी नया और आकर्षक स्वरूप मिला। पिछले कुछ महीनों में ब्यावरा में सैकड़ों किलोग्राम प्लास्टिक कचरे का पुनर्चक्रण किया गया है। जो प्लास्टिक पहले पर्यावरण के लिए खतरा माना जाता था, वही अब शहर की सुंदरता बढ़ाने का माध्यम बन गया है। ऐसे प्रयास पूरे देश के लिए प्रेरणा हैं। प्रधानमंत्री ने कहा कि यह पहल दिखाती है कि यदि समाज स्वयं जिम्मेदारी उठाए तो स्वच्छता और पर्यावरण संरक्षण जैसे बड़े लक्ष्य भी आसानी से हासिल किए जा सकते हैं। ब्यावरा की महिलाओं का यह प्रयास जनभागीदारी और नवाचार का उत्कृष्ट उदाहरण है। ■

# डॉ. श्यामाप्रसाद मुखर्जी महान राष्ट्रनायक - डॉ. मोहन यादव

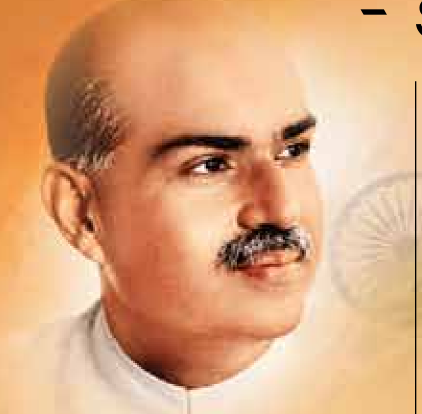

डॉ. श्यामाप्रसाद मुखर्जी केवल एक राजनेता नहीं, बल्कि भारत की एकता और अखंडता के लिए अपना सर्वस्व समर्पित करने वाले महान राष्ट्रनायक थे। जनसंघ की स्थापना के माध्यम से उन्होंने देश को वैचारिक राजनीति की नई दिशा दी। उनका संघर्ष केवल राजनीतिक नहीं था, बल्कि भारत की आत्मा और राष्ट्रीय स्वाभिमान की रक्षा का संघर्ष था। जम्मू-कश्मीर का भारत में पूर्ण एकीकरण डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी के जीवन का प्रमुख संकल्प था। उस समय जम्मू-कश्मीर में लागू विशेष प्रावधानों और अलग व्यवस्था के विरोध में व्यापक जनआंदोलन खड़ा हुआ। इस संघर्ष में हजारों राष्ट्रभक्त कार्यकर्ताओं ने भाग लिया और अनेक लोगों ने बलिदान दिए। डॉ. मुखर्जी स्वयं बिना परमिट जम्मू-कश्मीर पहुंचे और राष्ट्र की एकता के लिए संघर्ष करते हुए अपना सर्वोच्च बलिदान दिया। देश के विभाजन के दौर में जब पश्चिम बंगाल के बड़े हिस्से को पाकिस्तान में शामिल करने के प्रयास हो रहे थे, तब उन्होंने दृढ़ता के साथ उसका विरोध किया। उनके अथक प्रयासों और दूरदर्शी नेतृत्व के कारण ही पश्चिम बंगाल का एक बड़ा भू-भाग भारत का अभिन्न हिस्सा बना रहा। उनका प्रसिद्ध उद्घोष 'एक देश में दो विधान, दो प्रधान और दो निशान नहीं चलेंगे' आज भी करोड़ों देशवासियों को प्रेरणा देता है। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में अनुच्छेद 370 को समाप्त कर जम्मू-कश्मीर को पूर्ण रूप से भारतीय संविधान की मुख्यधारा से जोड़ने का ऐतिहासिक कार्य किया गया है। राष्ट्रवाद, सुशासन और विकास की जिस विचारधारा को डॉ. मुखर्जी ने स्थापित किया था, उसी विचारधारा को आज प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी साकार कर रहे हैं। पश्चिम बंगाल में भी विकास कार्यों को नई गति मिली है। राष्ट्रवादी विचारधारा को जनसमर्थन लगातार बढ़ रहा है। राष्ट्रभक्ति के प्रतीक 'वंदे मातरम और जन गण मन' पूरे सम्मान और गौरव के साथ गूंज रहे हैं। यह भारत की सांस्कृतिक चेतना, राष्ट्रीय एकता और लोकतांत्रिक मूल्यों की विजय का प्रतीक है।

मध्यप्रदेश सरकार डॉ. मुखर्जी के एक भारत-श्रेष्ठ भारत के संकल्प को आगे बढ़ाने के लिए प्रतिबद्ध है। समान नागरिक संहिता जैसे महत्वपूर्ण विषय पर प्रदेश में व्यापक जनसंवाद किया गया है। प्रदेश के 55 जिलों और सभी तहसीलों में विभिन्न वर्गों, समुदायों और सामाजिक संगठनों से सुझाव प्राप्त किए गए हैं और बड़ी संख्या में लोगों के सुझाव आए हैं। लाखों नागरिकों ने अपने विचार साझा कर इस प्रक्रिया को लोकतांत्रिक और सहभागी बनाया है। सरकार केवल बहुमत के आधार पर निर्णय लेने में विश्वास नहीं करती, बल्कि समाज के प्रत्येक वर्ग को साथ लेकर चलने की भावना से कार्य करती है। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के मंत्र 'सबका साथ, सबका विकास, सबका विश्वास और सबका प्रयास' को आत्मसात करते हुए प्रदेश सरकार जनभावनाओं के अनुरूप आगे बढ़ रही है। प्रदेश में विधानसभा के मानसून सत्र में इसे पारित करवाने का प्रयास किया जा रहा है। डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी का बलिदान राष्ट्र प्रथम की भावना से कार्य करने की प्रेरणा देता है। उनके विचार और आदर्श आने वाली पीढ़ियों के लिए मार्गदर्शक बने रहेंगे। हम सभी उनके दिखाए मार्ग पर चलकर मध्यप्रदेश को विकास, सुशासन और जनकल्याण के क्षेत्र में देश का अग्रणी राज्य बनाने के लिए संकल्पित हों। ▪

# डॉ. मुखर्जी का त्याग, समर्पण और राष्ट्रभक्ति प्रेरणीय - हेमंत खण्डेलवाल

डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी जी की विचारधारा, राष्ट्र के प्रति उनकी दूरदृष्टि और देश की एकता एवं अखंडता के लिए दिया गया उनका सर्वोच्च बलिदान हम सभी के लिए प्रेरणास्त्रोत है। उन्होंने ही भारतीय जनसंघ की स्थापना की थी, वही जनसंघ आज विश्व के सबसे बड़े व सर्वव्यापी राजनैतिक दल भाजपा के रूप में आप सबके सामने है। डॉ. मुखर्जी ने देश की एकता और अखंडता के लिए अपना संपूर्ण जीवन समर्पित कर दिया। उन्होने कश्मीर में ''दो विधान, दो निशान, दो प्रधान'' का विरोध करते हुए बलिदान दिया। भारतीय जनता पार्टी बलिदान के आधार पर बनी पार्टी है। डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी का जीवन हमें संदेश देता है कि राष्ट्रहित सर्वोपरि है। देश के लिए अपना बलिदान देने वाले वीर महापुरूष डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी के श्री चरणों में आज मध्यप्रदेश के हर बूथ पर पार्टी कार्यकताओं ने श्रद्धासुमन अर्पित किया है। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी तथा प्रदेश के मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के नेतृत्व में हम सभी उनके बताए मार्ग पर चलने का निरंतर प्रयास कर रहे हैं और उनके बलिदान को कभी व्यर्थ नहीं जाने देंगे। नई पीढ़ी डॉ. मुखर्जी के त्याग, समर्पण और राष्ट्रभक्ति को सदैव स्मरण रखें तथा देश की एकता और अखंडता के लिए हर समय कार्य करने के लिए तत्पर रहें। यही उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी। ▪

# विरासत से विकास अभियान शुरू - डॉ. मोहन यादव

रानी दुर्गावती को समर्पित नवीन संस्थान जबलपुर में 100 करोड़ रूपए की लागत से मदन महल के पास तैयार हो रहा है, जिसका लोकार्पण बहुत जल्द किया जाएगा। इस संस्थान से प्रदेश की भावी पीढ़ी रानी दुर्गावती के गौरवशाली अतीत और कार्यों से परिचित होंगी। जबलपुर में रानी दुर्गावती के नाम पर एक चिड़ियाघर और वन्य प्राणी रेस्क्यू सेंटर बन रहा है। इसके साथ ही 35वीं बटालियन मंडला का नाम रानी दुर्गावती के नाम पर रखा है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने देश के नायकों की वीरता और समृद्ध विरासत को सही रूप में प्रस्तुत करने के लिए विरासत से विकास अभियान शुरू किया। रानी दुर्गावती का शासन काल, गौंड साम्राज्य का स्वर्णिम युग था। रानी दुर्गावती ने किसान कल्याण के लिए उस दौर में बीज संग्रह, फसल चक्रण और जल संचय के महत्वपूर्ण कार्य कराए थे। उनके प्रबंधन के परिणाम स्वरूप अनाज के भंडार भरे हुए थे।

राज्य सरकार किसानों के कल्याण के लिए संकल्पित है और पूरा वर्ष किसानों को समर्पित करते हुए ठोस निर्णय ले रही है। अब किसान बंधुओं के लिए शून्य ब्याज दर पर 31 मार्च तक कर्ज चुकाने की बाध्यता खत्म कर दी गई है। किसान जिस तारीख को लोन लेंगे, तब से एक वर्ष की समयावधि में कर्ज चुकाया जा सकेगा। राज्य सरकार 880 करोड़ रुपए का भुगतान वित्तीय संस्थाओं को करेगी। राज्य सरकार पर्यटन, उद्योगों और अधोसंरचना विकास के लिए निरंतर कार्य कर रही है। शासकीय परियोजनाओं के लिए भूमि अधिग्रहण करने पर सरकार किसानों को अब चार गुना मुआवजा देगी। प्रदेश में संचालित रानी दुर्गावती श्रीअन्न प्रोत्साहन योजना से कोदो-कुटकी पैदा करने वाले किसानों को लाभ मिल रहा है। प्रदेश की लाड़ली बहनों को हर माह जारी हो रहे 1500 रुपए से उनकी आत्मनिर्भरता बढ़ी है। किसानों को प्रधानमंत्री सम्मान निधि का भी लाभ मिल रहा है। रानी दुर्गावती द्वारा किसानों के कल्याण के लिये चलाये गये कार्यक्रमों से प्रेरित होकर प्रदेश सरकार भी निरंतर कृषक हित में कार्य कर रही है। हमारी सरकार के पास किसान कल्याण और कल्याणकारी योजनाओं के लिए धन की कमी नहीं है। जनजातीय कल्याण के लिए प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी लगातार कार्य कर रहे हैं। देश में पहली बार जनजातीय वर्ग से श्रीमती द्रौपदी मुर्मु राष्ट्रपति पद को सुशोभित कर रही हैं। राज्य सरकार सबका साथ, सबका विकास और सबका प्रयास के भाव से काम कर रही है। हमारी सरकार जो कहती है, वो करके दिखाती है। ▪

# रानी दुर्गावती का त्याग और राष्ट्र भक्ति प्रेरणादायक - हेमंत खण्डेलवाल

रानी दुर्गावती बलिदान दिवस भारतीय इतिहास के उन स्वर्णिम पन्नों की याद दिलाता है, जो स्वाभिमान, साहस, त्याग और राष्ट्रभक्ति की अमिट गाथाओं से भरा हुआ हैं। लगभग 462 वर्ष पूर्व महान वीरांगना रानी दुर्गावती ने मातृभूमि, संस्कृति और सम्मान की रक्षा के लिए अपने प्राणों का सर्वोच्च बलिदान दिया था और वह दिन अमर हो गया। उनका जीवन और बलिदान भारतीय नारी शक्ति, आत्म सम्मान और अदम्य साहस का अद्वितीय उदाहरण है। चंदेलों की बेटी गोंड रानी दुर्गावती ने विदेशी आक्रमणकारियों के सामने कभी आत्मसमर्पण नहीं किया। उन्होंने स्वतंत्रता, संस्कृति और अपने राज्य की रक्षा के लिए अंतिम सांस तक संघर्ष किया। उनका बलिदान केवल जनजातीय समाज की धरोहर नहीं, बल्कि पूरे भारत के गौरव और स्वाभिमान का प्रतीक है, जिसे देश सदियों तक स्मरण करता रहेगा। रानी दुर्गावती का त्याग और राष्ट्र भक्ति नई पीढ़ी को प्रेरित करती रहेगी। रानी दुर्गावती केवल एक वीर योद्धा ही नहीं थीं, बल्कि जनकल्याणकारी शासक भी थीं। उन्होंने जल संरक्षण, कृषि सहित जनहित और सुशासन के क्षेत्र में भी महत्वपूर्ण कार्य किए, जिनकी प्रासंगिकता आज भी बनी हुई है। उनके द्वारा स्थापित आदर्श वर्तमान पीढ़ी के लिए प्रेरणा का स्त्रोत हैं। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में देश उन सभी महान विभूतियों के योगदान को सम्मानपूर्वक स्मरण कर रहा है, जिन्होंने स्वतंत्रता और मुगलकाल के दौरान राष्ट्र, संस्कृति और स्वाभिमान की रक्षा के लिए अपना सर्वस्व न्यौछावर किया। मुगलकाल सहित विभिन्न कालखण्डों में जिन्होंने राष्ट्र और धर्म की रक्षा हेतु बलिदान दिया, उनके प्रति कृतज्ञ राष्ट्र सदैव ऋणी रहेगा। ▪

**27 फरवरी, 1931 के दिन चन्द्रशेखर आजाद अपने साथी सुखदेव राज के साथ बैठकर विचार-विमर्श कर रहे थे कि तभी वहां अंग्रेजों ने उन्हें घेर लिया।** चन्द्रशेखर आजाद ने सुखदेव को तो भगा दिया पर खुद अंग्रेजों का अकेले ही सामना करते रहे,अंत में जब अंग्रेजों की एक गोली उनकी जांघ में लगी तो अपनी बंदूक में बची एक गोली को उन्होंने खुद ही मार ली और अंग्रेजों के हाथों मरने की बजाय खुद ही को ही समाप्त कर लिया।

# अमर शहीद चन्द्रशेखर आजाद

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में देश के कई क्रांतिकारी वीर-सपूतों की याद आज भी हमारी रुह में जोश और देशप्रेम की एक लहर पैदा कर देती है।एक वह समय था जब लोग अपना सब कुछ छोड़कर देश को आजाद कराने के लिए बलिदान देने को तैयार रहते थे। देशभक्ति की जो मिसाल हमारे देश के क्रांतिकारियों ने पैदा की थी उसी का परिणाम है कि आज हम सुख चैन से स्वतंत्र देश के नागरिक के रूप में आजाद हैं। वीरता और पराक्रम की कहानी हमारे देश के वीर क्रांतिकारियों ने रखी थी वह आजादी की लड़ाई की विशेष कड़ी थी, जिसके बिना आजादी मिलना नामुमकिन थी। देशप्रेम, वीरता और साहस की एक ऐसी ही मिसाल थे। शहीद क्रांतिकारी चन्द्रशेखर आजाद, 25 साल की उम्र में भारत माता के लिए शहीद होने वाले योद्धा थे। इस महापुरुष के बारे में जितना कहा जाए उतना कम है। आजाद प्रखर देशभक्त थे।

चन्द्रशेखर आजाद का जन्म मध्यप्रदेश के जिला अलीराजपुर ग्राम भाबरा में 23 जुलाई सन् 1906 को हुआ। आजाद के पिता पंडित सीताराम तिवारी संवत् 1956 में अकाल के समय अपने पैतृक निवास बदरका, वर्तमान उन्नाव जिला, उत्तरप्रदेश को छोड़कर कुछ दिनों मध्य प्रदेश अलीराजपुर रियासत में नौकरी करते रहे, फिर जाकर भाबरा गाँव में बस गये। उनकी माँ का नाम जगरानी देवी था। आजाद का प्रारंभिक जीवन आदिवासी बाहुल्य क्षेत्र में स्थित भाबरा गाँव में बीता। अतएव बचपन में आजाद ने भील बालकों के साथ खूब धनुष बाण चलाये। यहीं बालक चन्द्रशेखर का बचपन बीता। इस प्रकार उन्होंने निशानेबाजी बचपन में ही सीख ली थी। बालक चन्द्रशेखर आजाद का मन अब देश को आजाद कराने के अहिंसात्मक उपायों से हटकर सशस्त्र क्रान्ति की ओर मुड़ गया। उस समय बनारस क्रान्तिकारियों का गढ़ था। वह मन्मथनाथ गुप्त और प्रणवेश चटर्जी के संपर्क में आये और क्रान्तिकारी दल के सदस्य बन गये। क्रान्तिकारियों का वह दल हिन्दुस्तान प्रजातन्त्र संघर्ष के नाम से जाना जाता था।

असहयोग आंदोलन से जागे देश में दमन-चक्र जारी था, सत्याग्रहियों के बीच निकल पड़े, प्रस्तरखंड उठाया बेंत बरसाने वालों में से एक सिपाही के सिर में दे मारा, पेशी होने पर अपना नाम आजाद, काम आजादी के कारखाने में मजदूरी और निवास जेलखाने में बताया। गुस्साए अंग्रेज मजिस्ट्रेट ने पंद्रह बेंतों की सख्त सजा सुनाई, हर सांस में वंदेमातरम का निनाद करते हुए उन्होंने यह परीक्षा भी उत्तीर्ण की।

## क्रांतिकारी चन्द्रशेखर आजाद

अचूक निशानेबाज आजाद ने अपना पावन शरीर मातृभूमि के शत्रुओं को फिर कभी छूने नहीं दिया। क्रांति की जितनी योजनाएं बनीं सभी के सूत्रधार आजाद थे, कानपुर में भगत सिंह से भेंट हुई, साथियों के अनुरोध पर आजाद एक रात घर गए और सुषुप्त मां एवं जागते पिता को प्रणाम कर कर्तव्य पथ पर वापस आ गए। सांडर्स का वध-विधान पूरा कर राजगुरु, भगतसिंह और आजाद फरार हो गए, 8 अप्रैल 1929 को श्रमिक विरोधी ट्रेड डिस्प्यूट बिल का परिणाम सभापति द्वारा खोलते ही इसके लिए नियुक्त दर्शक दीर्घा में खड़े दत्त और भगत सिंह को असेंबली में बम के धमाके के साथ इंकलाब जिंदाबाद का नारा बुलंद करते गिरफ्तार कर लिया गया। भगत सिंह को छुड़ाने की योजना चन्द्रशेखर ने बनाई, पर बम जांचते वोहरा सहसा शहीद हो गए, घर में रखा बम दूसरे दिन फट जाने से योजना विफल हो गई, हमारी आजादी की नींव में उन सूरमाओं का इतिहास अमर है जिन्होंने हमें स्वाभिमान पूर्वक अपने इतिहास और संस्कृति की संरक्षा की अविचल प्रेरणा प्रदान की है।

27 फरवरी, 1931 के दिन चन्द्रशेखर आजाद अपने साथी सुखदेव राज के साथ बैठकर विचार विमर्श कर रहे थे कि तभी वहां अंग्रेजों ने उन्हें घेर लिया। चन्द्रशेखर आजाद ने सुखदेव को तो भगा दिया पर खुद अंग्रेजों का अकेले ही सामना करते रहे, अंत में जब अंग्रेजों की एक गोली उनकी जांघ में लगी तो अपनी बंदूक में बची एक गोली को उन्होंने खुद ही मार ली और अंग्रेजों के हाथों मरने की बजाय खुद को ही समाप्त कर लिया। कहते हैं मौत के बाद अंग्रेजी अफसर और पुलिस वाले चन्द्रशेखर आजाद की लाश के पास जाने से भी डर रहे थे, चंद्रशेखर आजाद को वेश बदलने में बहुत माहिर माना जाता था, वह रूसी क्रांतिकारियों की कहानी से बहुत प्रेरित थे। चन्द्रशेखर आजाद की वीरता की कहानियां कई हैं जो आज भी युवाओं में देश प्रेम की लहर पैदा कर देती हैं, देश को अपने इस सच्चे वीर स्वतंत्रता सेनानी पर हमेशा गर्व रहेगा।

चन्द्रशेखर आजाद ने वीरता की नई परिभाषा लिखी। उनके बलिदान के बाद उनके द्वारा प्रारम्भ किया गया आन्दोलन और तेज हो गया, उनसे प्रेरणा लेकर हजारों युवक स्वतन्त्रता आन्दोलन में कूद पड़े। आजाद की शहादत के सोलह वर्षों बाद 15 अगस्त सन् 1947 को हिन्दुस्तान की आजादी का उनका सपना पूरा तो हुआ। परन्तु चन्द्रशेखर आजाद, आजाद भारत को देख न सके। ▪

**तिलकजी ने मराठा अंग्रेजी में और केसरी मराठी में समाचार पत्र प्रकाशित किये। मराठी व अंग्रेजी के दोनों समाचार पत्र राष्ट्रवादी विचारों के उद्घोषक बन गये। हिन्दू समाज की कुरीतियों के बारे में तिलकजी ने लेख लिखे। जन सामान्य में सामाजिक, राजनैतिक चेतना जागृत करने के लिए उन्होंने केसरी के माध्यम से सार्वजनिक गणेशोत्सव मनाने का परामर्श दिया।**

# सांस्कृतिक राष्ट्रवाद के प्रणेता तिलकजी

सांस्कृतिक राष्ट्रवाद के प्रतीक के नाते हम लोकमान्य तिलक का स्मरण करते हैं। इस महापुरूष का जन्म 23 जुलाई 1856 को रत्नागिरी में हुआ। गंगाधर शास्त्री और पार्वती बाई उनके माता-पिता थे। लोकमान्य गंगाधर तिलक की धार्मिक और संस्कृत की शिक्षा घर पर हुई। बाद में यह परिवार पूना चला आया। इनकी शिक्षा पूना के मराठी और इंग्लिश स्कूल से हुई। उच्च शिक्षा के लिए मुंबई के एलिफिस्टिन कॉलेज के विद्यार्थी बने उन्होंने संस्कृत में कविताएं भी की। ग्रेजुएट होने के बाद एलएलबी के अध्ययन काल में उन्होंने हिन्दू विधि शास्त्र का विशद अध्ययन किया। वे आगरकर के संपर्क में आये और न्यू इंग्लिश स्कूल की स्थापना की। इसके बाद चिपलुनकर का सहयोग मिला। तिलकजी ने मराठा अंग्रेजी में और केसरी मराठी में समाचार पत्र प्रकाशित किये। मराठी, अंग्रेजी के दोनों समाचार पत्र राष्ट्रवादी विचारों के उद्घोषक बन गये। दोनों समाचार पत्रों की सामग्री समान रहती थी।

हिन्दू समाज की कुरीतियों के बारे में तिलकजी ने लेख लिखे। जन सामान्य में सामाजिक, राजनैतिक चेतना जागृत करने के लिए उन्होंने केसरी के माध्यम से सार्वजनिक गणेशोत्सव मनाने का परामर्श दिया। अभी तक महाराष्ट्र के घरों में गणेश पूजन की परम्परा थी। इस उत्सव के माध्यम से राजनैतिक आंदोलन को ग्रामीण क्षेत्रों में पहुंचाने की पहल प्रारंभ हुई।

आज न केवल सार्वजनिक गणेशोत्सव महाराष्ट्र में वरन् पूरे देश में मनाया जाता है। संस्कृति के माध्यम से राष्ट्र चेतना का अभियान तिलकजी ने सफल करके दिखाया।

1896-97 में महाराष्ट्र सहित मप्र, बिहार, पंजाब में भीषण अकाल पड़ा। प्लेग से लोग मरने लगे। लोगों को सहायता पहुंचाने में तिलक जी ने सक्रिय भूमिका निभाई, 1897 में महारानी विक्टोरिया के राज्यरोहण की हीरक जयंती मनाई गई। अधिकारी रैण्ड जिसने पूना में भेदभाव और ज्यादती की। 21 जून को पूना के गर्वमेंट हाउस में समारोह था।

कार्यक्रम की समाप्ति के बाद अंग्रेज अफसर रैण्ड टम-टम से चल पड़ा। इसके बाद लेफ्टिनेंट आयस्टन पत्नी के साथ दूसरी टम-टम से चला। रास्ते में उन पर पिस्तौल से गोलियां दागी गई। जनता पर अत्याचार का बदला क्रांतिकारियों ने ले लिया। उस समय केसरी में भवानी की तलवार शीर्षक कविता प्रकाशित हुई, जिसका सारांश यह था कि दुष्टों को मारकर मैंने भूमि का भार कम किया, मैंने स्वराज्य स्थापना और स्वधर्म रक्षा से देश को मुक्त किया।

तिलकजी पर राजद्रोह का मुकदमा चला। उन्हें कारावास की सजा मिली। उनके ऊपर दूसरा राजद्रोह का मुकदमा लादा गया। उन्हें देश निकाला दिया गया रंगून माण्डलें जेल में तिलकजी को रखकर यातनाएं दी गई। जून 1914 से तिलकजी को माण्डले जेल से मुक्ति मिली। इसके बाद से पूरे देश ने तिलकजी को राष्ट्रनायक मान लिया।

स्वतंत्रता का उद्घोष जो राष्ट्र चेतना का मंत्र बन गया। उससे यह जाहिर हो गया कि लोकमान्य तिलक प्रखर देशभक्त और राष्ट्रवादी नेता है। एक जनवरी 1917 को तिलकजी कानपुर गये, वहां उनका देवता के समान स्वागत हुआ, स्थान-स्थान पर उनकी आरती उतारी गई।

कानपुर के परेड ग्राउण्ड पर बीस हजार लोगों की सभा में उनका अभिनंदन किया गया। हिन्दी नहीं जानने के कारण उन्होंने अंग्रेजी में भाषण देते हुए दिव्य उद्घोष किया कि स्वतंत्रता हमारा जन्म सिद्ध अधिकार है। कांग्रेस में राष्ट्रवादी विचार का नेतृत्व तिलक जी ने किया। उनके विचारों से क्रांतिकारियों ने भी प्रेरणा ली। संस्कृति से ही राष्ट्र चेतना प्रखर हो सकती है, इसलिए उन्होंने धार्मिक त्यौहारों को राजनैतिक जागृति का माध्यम बनाया। ▪

# क्या है सेक्यूलरिज्म?

पं. दीनदयाल उपाध्याय

**आज भी लोग सेक्यूलर शब्द से भिन्न-भिन्न अर्थ लगाते हैं। सेक्यूलर के लिए भारतीय भाषाओं में प्रयुक्त पर्यायों से यह भिन्नता स्पष्ट हो जाती है।**

लौकिक, धर्महीन, धर्मरहित, धर्मनिरपेक्ष, अधार्मिक, अधर्मी, निधर्मी, असांप्रदायिक आदि अनेक शब्दों का सेक्यूलर के पर्याय इस नाते प्रयोग होता है। निश्चित ही उपर्युक्त सभी शब्द समानार्थक नहीं हैं। उनमें मत भिन्नता ही नहीं है अपितु वे विरोध की सीमा-रेखा को भी स्पर्श कर जाते हैं।

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात भारत वर्ष को एक सेक्यूलर स्टेट घोषित किया गया है तथा तबसे यह शब्द लोगों की जुबान पर इतना चढ़ गया है कि क्या बड़े-बड़े नेता और क्या गाँव-गाँव, गली-गली में बातचीत के स्वर को ऊँचा करके ही भाषण की हवस मिटाने वाले छुट भैये, सभी दिन में चार बार सेक्यूलर स्टेट की दुहाई देकर अपनी बात मनवाने का तथा दूसरों को उसके विरुद्ध बताकर गलत सिद्ध करने का प्रयत्न करते हैं। सुनते-सुनते शब्द तो कानों में रम गया है, किंतु अभी तक यह स्पष्ट नहीं हो पाया है कि भारत सरकार के बोलने वाले नेता तथा सुनने वाली जनता सेक्यूलर शब्द का क्या अर्थ समझती हैं। विधान परिषद् में सेक्यूलर स्टेट का नाम लेने पर जब एक सदस्य ने पं. जवाहरलाल नेहरू से सेक्यूलर स्टेट का मतलब पूछा तो उन्होंने भी अर्थ बताने के स्थान पर सम्मानीय सदस्य को डाँटकर शब्द कोष देखने के लिए कहा। फलतः समस्या सुलझ नहीं पाई और आज भी लोग सेक्यूलर शब्द से भिन्न-भिन्न अर्थ लगाते हैं। सेक्यूलर के लिए भारतीय भाषाओं में प्रयुक्त पर्यायों से यह भिन्नता स्पष्ट हो जाती है। लौकिक, धर्महीन, धर्मरहित, धर्मनिरपेक्ष, अधार्मिक, अधर्मी, निधर्मी, असांप्रदायिक आदि अनेक शब्दों का सेक्यूलर के पर्याय इस नाते प्रयोग होता है। निश्चित ही उपर्युक्त सभी शब्द समानार्थक नहीं हैं। उनमें मत भिन्नता ही नहीं है अपितु वे विरोध की सीमा-रेखा को भी स्पर्श कर जाते हैं। अपने राज्य के स्वरूप के संबंध में इतना वैषम्य वास्तव में हितावह नहीं है। अच्छा हो कि हम सेक्यूलर शब्द के ठीक अर्थ समझ लें, कम से कम जिस अर्थ में हम भारत को सेक्यूलर स्टेट बनाना चाहते हैं, उसका तो निर्णय कर ही लेना चाहिए।

## रोमन साम्राज्य की प्रतिक्रिया

नेहरूजी के आदेशानुसार यदि डिक्शनरी का सहारा लिया जाए तो समस्या विशेष नहीं सुलझती, क्योंकि कोष में सेक्यूलर के अर्थ हैं अर्थात् अपना सौ वर्षों में एक बार होने वाला लौकिक। इनमें से लौकिक अर्थ सर्व साधारण व्यवहार में आता है तथा स्प्रिचुअल के विरोध में इसका प्रयोग होता है। सेक्यूलर स्टेट को कल्पना के विकास के पीछे भी यही भाव है। क्योंकि सेक्यूलर स्टेट की कल्पना का उदय पवित्र रोमन साम्राज्य के विरोध में से हुआ है। यूरोप के सभी देश किसी समय रोम के पोप के अधीन थे तथा प्रत्येक देश का राजा पोप के नाम पर ही शासन करता था। किंतु धीरे-धीरे रोमन कैथोलिक मत और पोप दोनों या इनमें से किसी एक के प्रति अविश्वास और विरोध की भावना बढ़ने लगी। फलतः प्रोटेस्टेंड मत का जन्म हुआ तथा फ्रांस की क्रांति के कारण और उसके परिणामस्वरूप जनता के घोष समानता और स्वतंत्रता और बंधुत्व हुए। साथ ही राष्ट्रीयता के बढ़ते हुए ईसाई मत में अनेक चर्चों की स्थापना ईसाई मत के सामान्य जीवन पर घटते हुए प्रभाव ने पवित्र रोमन साम्राज्य को विघटित करके, ऐसे राज्य की कल्पना को जन्म दिया जिसमें सभी मतों के मानने वाले नागरिकता के समान अधिकारों का उपयोग कर सकें तथा राज्य जनता के मत में किसी भी प्रकार का हस्तक्षेप न करें। लोगों की दृष्टि अधिकाधिक भौतिकवादी होने के कारण लोगों की दृष्टि में राज्य का महत्व केवल लौकिक आवश्यकताओं की पूर्ति मात्र रह गया है तथा आत्मा संबंधी सभी प्रश्नों की व्यक्तिगत इच्छा-अनिच्छा पर छोड़ देना उचित समझा।

## लौकिक और पारलौकिक

यूरोप में सेक्यूलर स्टेट की कल्पना के विकास का संक्षिप्त विवरण ऊपर दिया है। स्प्रिचुअल और टेंपोरल (सेक्यूलर) दो

भिन्न-भिन्न क्षेत्र करके राज्य की ओर केवल सेक्यूलर आवश्यकताओं की पूर्ति का भार देकर भी यूरोप का कोई राज्य मत विशेष के पक्षपात की नीति से मुक्त नहीं हो पाया है। इंग्लैंड का राजा अभी भी (धर्मरक्षक) कहा जाता है तथा उसके लिए आवश्यक है कि वह मानने वाला प्रोटेस्टेंट ही हो, राज्य की ओर से गिरजे और पादरियों को वेतन और सहायता भी मिलती है। अमेरिका में भी प्रेसीडेंट के लिए शपथ लेते समय विशिष्ट धार्मिक विधि को पूरा करना आवश्यक है।

भारतवर्ष में वास्तविक रूप से तो राज्य की कल्पना के अंतर्गत लौकिक राज्य की ही कल्पना है। हमारे यहाँ धर्मगुरु को कभी राजा का स्थान नहीं मिला है। राजा स्वयं किसी भी मत का मानने वाला क्यों न हो, सदा सभी मतावलंबियों के प्रति न्याय और समानता का व्यवहार करता था। हाँ आज के सेक्यूलरिज्म की कल्पना के अनुसार पक्षपात रहित रहने का अर्थ किसी की मदद न करना नहीं था अपितु सबकी मदद करना था। अतः राज्य सब मतावलंबियों की समान रूप से सहायता करता था। इस सहायता के पीछे यह भाव निहित था कि प्रथम तो बिना पारलौकिक उन्नति के लौकिक उन्नति व्यर्थ है तथा दूसरे राजा का कर्तव्य है कि प्रजा की सब प्रकार की उन्नति का प्रबंध करे। और पारलौकिक क्षेत्र में यह प्रबंध सब मतों को समान सहायता देते हुए उनके आपसी संबंधों को सद्भावनापूर्ण बनाते हुए ही होता था। अतः किसी मत का राज्य न कायम करते हुए भी ''यतो अयुदयनि श्रेयस प्राप्ति स धर्मः'' की व्याख्या के अनुसार धर्म का विकास करते हुए धर्मराज्य की अवश्य ही स्थापना की जाती थी।

## धर्म जीवन है

आज भारतवर्ष के नेतागण यद्यपि पश्चिमी आदर्शों को अपनाकर भावी भारत की रचना करना चाहते हैं और उसके अनुसार पश्चिम के अर्थ में सेक्यूलर स्टेट का अर्थ लौकिक राज्य ही लगाया जा सकता है, किंतु भारतीय जनता धर्मराज्य या रामराज्य की भूखी है और वह केवल लौकिक उन्नति में ही संतोष नहीं कर सकती। भारतीयता की स्थापना भी केवल एकांगी उन्नति से नहीं हो सकती क्योंकि हमने लौकिक और पारलौकिक उन्नति को एक दूसरे का पूरक ही नहीं तो एक दूसरे से अभिन्न माना है। किंतु पारलौकिक उन्नति के क्षेत्र में राज्य की ओर से किसी एक मत की कल्पना अनुचित होगी, अतः ऐसा वातावरण उत्पन्न करना होगा जिसमें सभी मत बढ़ सकें तथा एक सद्विपाः बहुधा वदन्ति के सिद्धांत का पालन कर सकें। फलतः हमारे राज्य के लिए लौकिक राज्य सेक्यूलर स्टेट को ठीक पर्याय होने पर भी मौजूद नहीं होगा।

धर्म शब्द की उपर्युक्त परिभाषा एवं ''धारणध्दर्ममित्याहुः धर्मोधारयते प्रजा'' आदि परिभाषाओं के अनुसार यह शब्द अंग्रेजों के रिलीजन का पर्यायवाची न होकर उससे भिन्न है तथा व्यापक अर्थवाला है। हमारे यहाँ बिना धर्म के तो किसी के भाव की, उसके अस्तित्व की ही कल्पना कठिन है। फलतः हम समझते हैं कि हमारा राज्य धर्म को तिलांजलि नहीं दे सकता, अतः अधार्मिक, धर्मनिरपेक्ष, धर्मरहित, धर्महीन, धर्म विरत आदि सभी शब्द न तो हमारे राज्य के आदर्श को ही प्रकट करते हैं और न सेक्यूलर स्टेट ठीक पर्याय हो ही सकते हैं।

## मत और धर्म के भेद

अंग्रेजों के रिलीजन शब्द का पर्यायवाची शब्द यहाँ मत है तथा एक मत के मानने वाले को संप्रदाय कहा जाता है, जैसे शैव संप्रदाय, वैष्णव संप्रदाय, खिस्ती संप्रदाय आदि। निश्चित ही पहले और आज भी राज्य इनमें से किसी एक संप्रदाय का नहीं हो सकता। राज्य की दृष्टि से तो सबके लिए ही समान होनी चाहिए। फलतः हम कह सकते हैं कि राज्य को सांप्रदायिक न होकर असांप्रदायिक होना चाहिए। यही राज्य का सही आदर्श है। ऐसा राज्य किसी संप्रदाय विशेष के प्रति पक्षपात या किसी के प्रति घृणा का व्यवहार न करते हुए भी जीवन की लौकिक और आध्यात्मिक उन्नति का मार्ग प्रशस्त करते हुए धर्मराज्य हो सकता है।

## असांप्रदायिक कहें

असांप्रदायिक शब्द से राज्य के ठीक-ठीक आदर्श का ही बात नहीं होता अपितु सेक्यूलर के शाब्दिक नहीं तो पाश्चात्य व्यवहारिक अर्थ के भी यह बहुत निकट है। रूस को छोड़कर किसी राज्य ने कभी रिलीजन (मत) को समाप्त नहीं किया और आज तो रूस में भी पूजा स्वातंत्र्य को मान लिया है यद्यपि राज्य की ओर से किसी को कोई सुविधा नहीं मिलेगी। शेष सभी राज्यों में सभी संप्रदायों को अपने मत के द्वारा आत्मिक, शारीरिक स्वतंत्रता है तथा इंग्लैंड के राजा को छोड़कर शेष कहीं किसी संप्रदाय विशेष के प्रति पक्षपात नहीं है। अतः उन राज्यों को भी पवित्र रोमन साम्राज्य के विरोध में चाहे लौकिक समझा जाए, किंतु असांप्रदायिक कहना ही अधिक युक्ति संगत होगा। असांप्रदायिक शब्द के द्वारा हमारे नेताओं का अर्थ भी अधिक स्पष्ट होता है क्योंकि आज सेक्यूलर शब्द का प्रयोग केवल पाकिस्तान से, जिसने अपने आपको इस्लामी राज्य घोषित किया है भिन्नता दिखाना ही है। भारत इस्लामी राज्य के समान किसी एक संप्रदाय का राज्य नहीं है यही हमारे नेता प्रकट करना चाहते हैं और इसके लिए उन्होंने सेक्यूलर शब्द को चुना है। आज यद्यपि सांप्रदायिक और राष्ट्रीय शब्दों का ठीक-ठीक ज्ञान न होने के कारण सेक्यूलर शब्द का नाम लेकर रेडियो से गीता और रामायण आदि का पाठ बंद करना आदि अनेक कार्य कर दिए जाते हैं। फिर भी भारतीय राज्य का आदर्श घोषित करते समय हमारे नेताओं के मस्तिष्क में जो प्रधान धारणा रही वह असांप्रदायिक शब्द से ही अधिक व्यक्त होती है। उपर्युक्त सभी कारणों में से असांप्रदायिक शब्द ही सेक्यूलर का निकटतम भाषांतर है और उसी का प्रयोग किया जाना चाहिए। ■

▪ मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव एवं प्रदेश अध्यक्ष श्री हेमंत खंडेलवाल जी ने डॉ. श्यामाप्रसाद मुखर्जी जी के बलिदान दिवस पर श्रद्धांजली अर्पित की।

▪ मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव जी ने निर्वाचित प्रधानमंत्री के रूप में श्री नरेन्द्र मोदी जी के सर्वाधिक दिनों तक लगातार सेवा करने पर धार्मिक अनुष्ठान में भाग लिया।

▪ प्रदेश अध्यक्ष श्री हेमंत खंडेलवाल जी ने निर्वाचित प्रधानमंत्री के रूप में श्री नरेन्द्र मोदी जी के सर्वाधिक दिनों तक लगातार सेवा करने पर धार्मिक अनुष्ठान में भाग लिया।

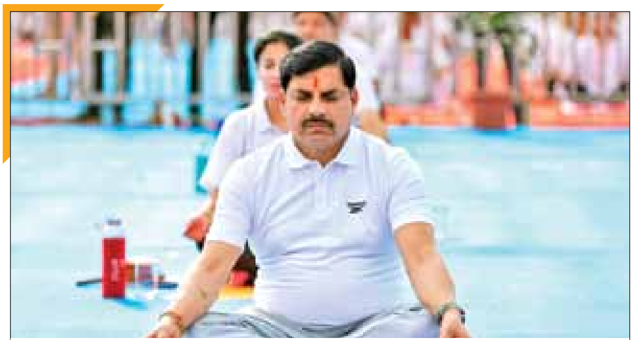

▪ मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव जी ने विश्व योग दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में भाग लिया।

▪ प्रदेश अध्यक्ष श्री हेमंत खंडेलवाल जी ने विश्व योग दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में भाग लिया।

▪ मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव जी ने संविधान हत्या दिवस पर आयोजित कार्यक्रम का शुभारम्भ किया।

▪ प्रदेश अध्यक्ष श्री हेमंत खंडेलवाल जी ने इंदौर ग्रामीण जिला कार्यालय का भूमि पूजन कर सम्बोधित किया।

▪ प्रदेश अध्यक्ष श्री हेमंत खंडेलवाल जी ने 'एक पेड़ माँ के नाम अभियान' के तहत पौधारोपण किया।

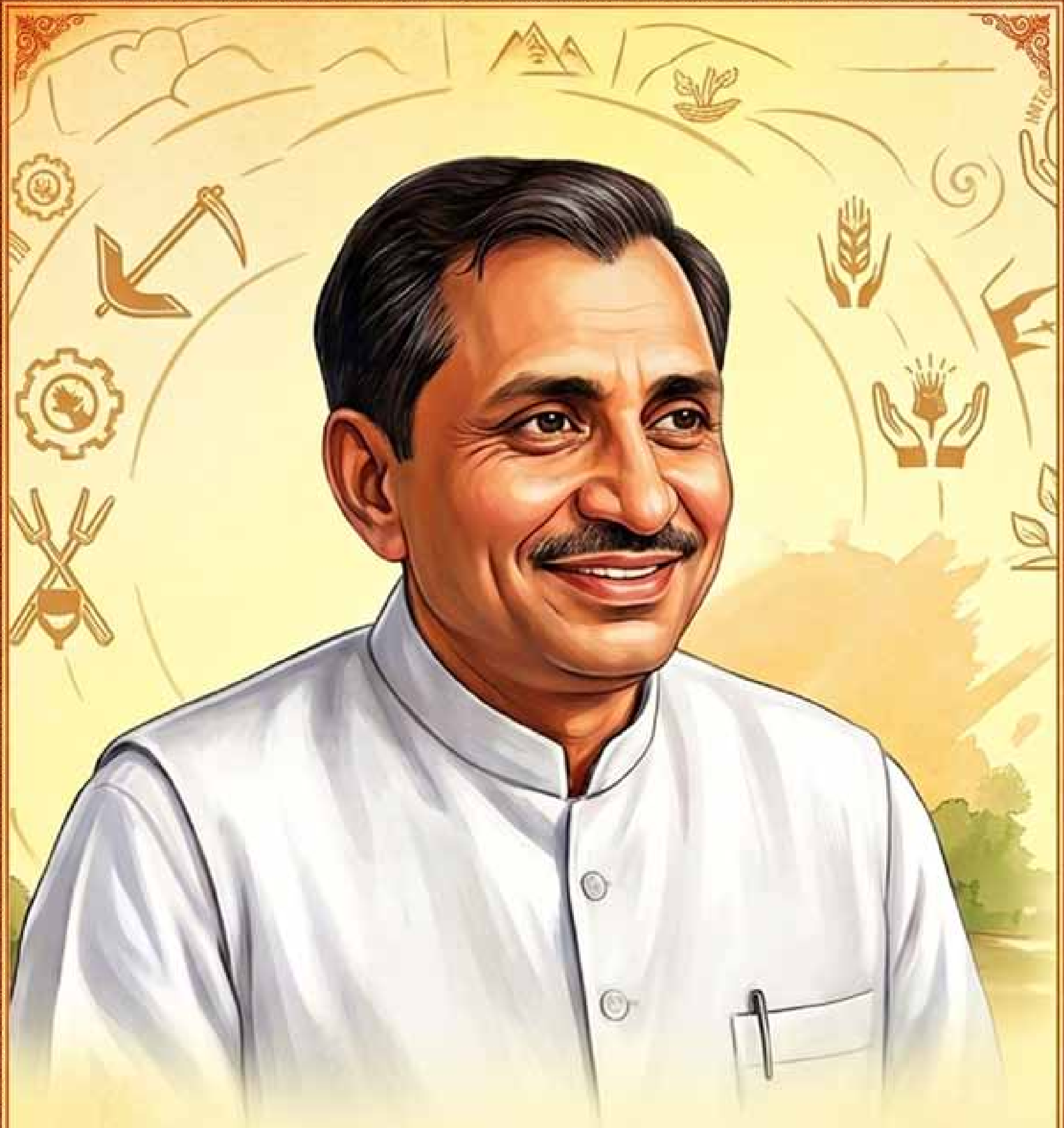

स्वतंत्रता तभी सार्थक हो सकती है
यदि वो हमारी संस्कृति की अभिव्यक्ति
का साधन बन जाए।

पं. दीनदयाल उपाध्याय